सौ 'उठक-बैठक' करने के एक सप्ताह बाद छात्रा ने तोड़ा दम

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 15 नवंबर।

महाराष्ट्र के पालघर जिले के एक निजी स्कूल में छठी कक्षा की छात्रा को देर से आने की सजा के तौर पर कथित रूप से 100 उठक-बैठक लगाने के लिए मजबूर किया गया, जिसके लगभग एक सप्ताह बाद उसकी मौत हो गई। इस घटना के सामने आने के बाद अधिकारियों ने जांच शुरू कर दी है। वसई क्षेत्र के सातिवली स्थित स्कूल की छात्रा अंशिका का शुक्रवार रात मुंबई के एक अस्पताल में निधन हो गया।

पालघर के एक निजी विद्यालय में देरी से आने का मामला।

महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना के कार्यकर्ताओं के अनुसार, अंशिका और चार अन्य छात्रों को आठ नवंबर को स्कूल देर से पहुंचने के कारण 100-100 बार उठक-बैठक लगानी पड़ी थी। मृतक छात्रा की मां ने आरोप लगाया कि उसकी बेटी की मौत उसकी शिक्षिका द्वारा दी गई 'अमानवीय सजा' के परिणामस्वरूप हुई, जिसने उसे स्कूल बैग पीठ पर रखकर उठक-बैठक करने को कहा था। वसई के मनसे नेता सचिन मोरे ने दावा किया कि उसे पहले से ही स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं होने के बावजूद दंडित किया गया। एक शिक्षिका ने कहा कि यह पता नहीं चल पाया है कि इस बच्ची ने कितनी उठक-बैठक लगाई थी। यह भी नहीं पता कि उसकी मौत इसी वजह से हुई या किसी और वजह से। खंड शिक्षा अधिकारी पांडुरंग गलांगे ने बताया कि अंशिका की मौत की जांच की जा रही है। जांच से उसकी मौत के सही कारण का पता चलेगा। अभी तक कोई पुलिस शिकायत दर्ज नहीं कराई गई है।

मीडियाकर्मियों से बात करते हुए अंशिका की मां ने कहा कि शारीरिक दंड दिए जाने के बाद उनकी बेटी की स्वास्थ्य स्थिति तेजी से बिगड़ी। सजा के बाद उसकी गर्दन और पीठ में भयंकर दर्द हुआ और वह उठ नहीं सकी। महिला ने बताया कि जब बेटी की हालत के बारे में पता चला तो वह स्कूल गई और शिक्षक से शिकायत की। मुझे बताया गया कि छात्रों को स्कूल देर से आने के लिए दंडित किया गया था। शिक्षक ने इस दंड का औचित्य बताते हुए कहा कि अन्यथा अभिभावक उन पर आरोप लगाते हैं कि वे फीस लेने के बावजूद छात्रों को नहीं पढ़ा रहे।

कांग्रेस ने बिहार के नतीजे को अविश्वसनीय बताया, निर्वाचन आयोग से पूछा

तीन लाख अतिरिक्त मतदाता कैसे जुड़ गए

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 15 नवंबर।

निर्वाचन आयोग से स्पष्टीकरण की मांग करते हुए कांग्रेस ने शनिवार को पूछा कि बिहार चुनाव प्रक्रिया के दौरान 'तीन लाख अतिरिक्त मतदाता कैसे जुड़ गए'? पार्टी ने एक सोशल मीडिया पोस्ट में कहा कि मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार ने छह अक्तूबर को एक प्रेस नोट में कुल मतदाताओं की संख्या 7.42 करोड़ बताई थी, जबकि मतदान के बाद जारी भारत निर्वाचन आयोग की प्रेस विज्ञप्ति में 7.45 करोड़ का उल्लेख किया गया था।

निर्वाचन आयोग ने कहा कि नियमानुसार नए मतदाताओं के आवेदन करने से बढ़ी संख्या।

निर्वाचन आयोग ने आरोप का जवाब देते हुए शनिवार को स्पष्ट किया कि छह अक्तूबर को उल्लिखित 7.42 करोड़ मतदाताओं का आंकड़ा 30 सितंबर को मतदाता सूची के अंतिम प्रकाशन के बाद उपलब्ध आंकड़ों पर आधारित था। हालांकि, आयोग ने कहा कि चुनाव नियमों के अनुसार, पात्र नागरिक चुनाव की घोषणा के बाद भी मतदाता सूची में शामिल होने के लिए आवेदन कर सकते हैं और इसी वजह से तीन लाख मतदाताओं की वृद्धि। मतदान के प्रत्येक चरण में नामांकन दाखिल करने की अंतिम तिथि से 10 दिन पहले तक भी नए मतदाता आवेदन कर सकते हैं।

आयोग ने कहा एक अक्तूबर से नामांकन की अंतिम तिथि से 10 दिन पहले तक प्राप्त सभी वैध आवेदनों का सत्यापन किया गया तथा पात्र मतदाताओं के नाम जोड़े गए 'ताकि कोई भी योग्य मतदाता मतदान के अवसर से वंचित न रहे'। आयोग ने 7.45 करोड़ का जिक्र करते हुए कहा कि यह संशोधित आंकड़ा मतदान के बाद जारी प्रेस विज्ञप्ति में उल्लेखित किया गया था। कांग्रेस पार्टी ने निर्वाचन आयोग पर ये नए आरोप बिहार विधानसभा चुनाव में पार्टी के खराब प्रदर्शन के बाद लगाए हैं। बिहार विधानसभा चुनाव के नतीजे शुक्रवार को घोषित किए गए। महागठबंधन की सहयोगी कांग्रेस केवल छह सीटें ही जीत पाई।

'बिहार में वोट चोरी से राजग को मिली जीत'

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 15 नवंबर।

शिवसेना (उद्धव) ने शनिवार को दावा किया कि बिहार चुनाव निर्वाचन आयोग द्वारा कराया गया घोटाला है और सत्तारूढ़ भाजपा नीत राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) पर वोट चोरी के जरिए जीतने का आरोप लगाया। सत्तारूढ़ राजग को चुनावों में शानदार जीत मिलने के एक दिन बाद उद्धव ठाकरे के नेतृत्व वाली पार्टी ने कहा कि भाजपा मुख्यमंत्री पद के लिए जद (एकी) पर नियंत्रण करने में संकोच नहीं करेगी।

पार्टी ने दावा किया कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार स्मृति लोप की समस्या से जूझ रहे हैं और सवाल किया कि ऐसी चुनौतियों वाला व्यक्ति बिहार का नेतृत्व कैसे कर सकता है। पार्टी के मुखपत्र सामना के संपादकीय में शिवसेना ने दावा किया कि बिहार में भाजपा की जीत का फार्मूला महाराष्ट्र की तरह ही तय हो गया है, जहां विपक्षी महा विकास आघाडी को 50 सीटें भी नहीं जीतने दी गईं। पार्टी ने कहा कि बिहार चुनाव के नतीजे आश्चर्यजनक नहीं थे। पार्टी ने आरोप लगाया कि चुनाव आयोग और भाजपा वांछित परिणाम पाने के लिए मिलकर काम कर रहे थे। बिहार चुनाव भारतीय लोकतंत्र में एक घोटाला है।

उद्धव ठाकरे के नेतृत्व वाली पार्टी ने आरोप लगाया कि वोट फिर से चुराए गए, जिसके आधार पर भाजपा और (बिहार के मुख्यमंत्री) नीतीश कुमार ने चुनाव जीत लिया। पार्टी ने पूछा कि अगर चुनाव प्रक्रिया के द्वारपाल ही चोरों की मदद करेंगे तो लोग किस पर भरोसा करेंगे। सत्तारूढ़ राजग ने शुक्रवार को विपक्षी महागठबंधन को करारी शिकस्त देकर सत्ता बरकरार रखी तथा कांग्रेस एवं उसकी सहयोगी राजद को करारा झटका दिया। भाजपा ने 2020 की 74 सीटों की तुलना में 89 सीटें जीतीं, जबकि नीतीश कुमार के जनता दल (एकी) ने 43 सीटों की तुलना में 85 सीटों पर सफलता हासिल की।

बिहार चुनाव के दौरान योजना निधि वितरण की अनुमति कैसे दी : पवार

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 15 नवंबर।

राकांपा (एसपी) प्रमुख शरद पवार ने शनिवार को कहा कि महिलाओं के लिए घोषित उद्यमिता योजना ने बिहार चुनाव में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) की प्रचंड जीत में अहम भूमिका निभाई। इसके साथ ही उन्होंने आश्चर्य जताया कि निर्वाचन आयोग ने चुनावों के दौरान इस योजना के तहत धन वितरण की अनुमति कैसे दी।

पवार ने बारामती में कहा कि बिहार में भाजपा और जद (एकी) मुख्यमंत्री के नाम पर मिलकर फैसला करेंगी। बिहार चुनाव के नतीजे (मुख्यमंत्री) नीतीश कुमार की भविष्यवाणी से अलग नहीं थे। महिलाओं ने चुनाव अपने हाथ में ले लिया। मुझे पहले लगा था कि महिलाओं के बैंक खातों में 10,000 रुपए जमा कराए जाने संबंधी योजना ने (राजग के पक्ष में) माहौल बनाया। पवार 'मुख्यमंत्री महिला रोजगार योजना' का जिक्र कर रहे थे, जिसके तहत बिहार में हर परिवार की एक महिला सदस्य को अपना उद्यम स्थापित करने के लिए वित्तीय सहायता दिए जाने का प्रावधान है। उन्होंने आश्चर्य जताया कि निर्वाचन आयोग ने चुनावों के दौरान इस योजना के तहत धन वितरण की अनुमति कैसे दी। पवार ने कहा कि निर्वाचन आयोग को सोचना चाहिए कि क्या (बिहार सरकार की ओर से इस योजना के तहत) धन वितरण सही था। उन्होंने भविष्य में होने वाले चुनावों में भी बिहार की तरह धन वितरण संबंधी योजनाएं लागू किए जाने की आशंका जताई।

चौकसी श्रीनगर में शनिवार को नौगाम पुलिस स्टेशन में विस्फोट के बाद चौकसी बढ़ा दी गई है, मौके पर मुस्तैद सुरक्षाकर्मी।

लाल किला विस्फोट मामला

आपराधिक साजिश से संबंधित धाराओं में प्राथमिकी

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 15 नवंबर।

लाल किला के पास 10 नवंबर को हुए विस्फोट के मामले में दिल्ली पुलिस के विशेष प्रकोष्ठ ने आपराधिक साजिश से संबंधित धाराओं के तहत एक अलग प्राथमिकी दर्ज की है। दरअसल, दिल्ली पुलिस ने गैरकानूनी गतिविधियां (रोकथाम) अधिनियम (यूएपीए) की धाराओं के तहत पहले दर्ज की गई प्राथमिकी को एनआइए को स्थानांतरित कर दिया गया था। वहीं, दिल्ली पुलिस ने अल फलाह विश्वविद्यालय के खिलाफ जालसाजी और धोखाधड़ी के आरोप में दो अलग-अलग प्राथमिकी दर्ज की हैं।

फिलहाल विशेष प्रकोष्ठ इस बात की भी जांच कर रहा है कि क्या गिरफ्तार डाक्टर मुजम्मिल गनई हरियाणा के फरीदाबाद जिले में अल फलाह विवि से जुड़े चिकित्सकों के एक समूह के साथ नियमित संपर्क में था।

सूत्रों के मुताबिक विस्फोट के बाद से विवि से जुड़े कम से कम 15 चिकित्सक इस समय लापता हैं जो मुजम्मिल के संपर्क में थे। एक सूत्र के मुताबिक, फोन के काल डिटेल रेकार्ड में मुजम्मिल और कई चिकित्सकों के बीच बातचीत के तथ्य सामने आए हैं। जब एजंसियों ने इन चिकित्सकों से संपर्क करने की कोशिश की तो उनके फोन बंद पाए गए। पूछताछ के लिए अल फलाह विवि भेजी गई एक टीम ने पाया कि उनमें से अधिकतर चिकित्सक गायब हैं। यह पता लगाने के लिए जांच जारी है कि क्या इन लापता डाक्टरों की कथित आतंकी साजिश रचने या उसे अंजाम देने में कोई भूमिका है।

अल-फलाह विवि पर दर्ज की दो प्राथमिकी : दिल्ली पुलिस ने अल फलाह विवि के खिलाफ जालसाजी और धोखाधड़ी के आरोप में दो अलग-अलग प्राथमिकी दर्ज की हैं। एक अधिकारी ने बताया कि पुलिस ने यूजीसी और राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (नैक) की ओर से विवि के बारे में चिंता जताए जाने के बाद यह कदम उठाया है।

विवि की ओर से मान्यता के संबंध में कथित तौर पर किए गए झूठे दावों को लेकर अपराध शाखा ने धोखाधड़ी और जालसाजी के आरोप में दो प्राथमिकी दर्ज की हैं। नैक ने विवि के कामकाज की समीक्षा के दौरान बड़े पैमाने पर अनियमितताओं का पता लगाया, जिसके बाद कानून लागू करने वाली एजंसियों को मामले में हस्तक्षेप करना पड़ा।

आतंकियों से संबंध रखने के आरोप में बंगाल से एमबीबीएस छात्र गिरफ्तार

अल फलाह विवि के दो चिकित्सकों समेत तीन हिरासत में

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 15 नवंबर।

एनआइए ने कथित रूप से आतंकी संगठनों से जुड़े एक एमबीबीएस छात्र को पश्चिम बंगाल के उत्तर दिनाजपुर जिले से गिरफ्तार किया है। वहीं, दिल्ली पुलिस ने हरियाणा के अल फलाह विश्वविद्यालय के दो चिकित्सकों समेत तीन लोगों को और पंजाब पुलिस ने पठानकोट से एक चिकित्सक को हिरासत में लिया है।

बंगाल पुलिस के एक अधिकारी ने बताया कि आरोपी की पहचान जानिसुर आलम उर्फ निसार आलम के रूप में हुई है, जो हरियाणा के अल-फलाह विवि का एमबीबीएस छात्र है व लुधियाना का निवासी है। छात्र को शुक्रवार सुबह सुरजापुर बाजार क्षेत्र से गिरफ्तार किया गया। उसके पास से डिजिटल उपकरण और दस्तावेज जब्त किए गए हैं।

दिल्ली पुलिस ने हरियाणा के अल फलाह विश्वविद्यालय के दो चिकित्सकों समेत तीन लोगों को और पंजाब पुलिस ने पठानकोट से एक चिकित्सक को हिरासत में लिया है।

दूसरी ओर, दिल्ली पुलिस के अधिकारियों ने बताया कि हिरासत में लिए गए दोनों चिकित्सक लाल किले के पास विस्फोट करने वाली कार के चालक डाक्टर उमर नबी के परिचित थे। दिल्ली पुलिस के विशेष प्रकोष्ठ और विभिन्न केंद्रीय एजंसी ने शुक्रवार रात हरियाणा के धौज, नूंह और आसपास के इलाकों में समन्वित छापेमारी के दौरान ये गिरफ्तारियां कीं। सूत्रों के अनुसार, एनआइए की टीम की सहायता से विशेष प्रकोष्ठ ने नूंह से अल फलाह विवि के दो चिकित्सकों मोहम्मद और मुस्तकीम को हिरासत में लिया। ये दोनों 'सफेदपोश' आतंकी तंत्र की व्यापक जांच के तहत गिरफ्तार किए गए डाक्टर मुजम्मिल गनई के कथित तौर पर संपर्क में थे।

सूत्रों ने बताया कि वे डाक्टर उमर नबी के भी करीबी मित्र थे। शुरुआती पूछताछ में पता चला है कि हिरासत में लिए गए चिकित्सकों में से एक विस्फोट वाले दिन दिल्ली में था। वहीं, पुलिस सूत्रों ने बताया कि लाल किले के पास हुए विस्फोट के सिलसिले में पूछताछ के लिए पंजाब के पठानकोट से एक चिकित्सक को हिरासत में लिया गया है। 45 वर्षीय चिकित्सक पठानकोट के एक निजी मेडिकल कालेज एवं अस्पताल में दो साल से अधिक समय से कार्यरत था।

हथियारों की तस्करी में गुजरात एटीएस ने वांछित को दबोचा

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 15 नवंबर।

गुजरात आतंकवाद निरोधक दस्ते (एटीएस) ने पंजाब पुलिस द्वारा वांछित एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया है जो देश में ग्रेनेड हमले करने के मकसद से पाकिस्तान स्थित आतंकी नेटवर्क के इशारे पर काम कर रहे एक गिरोह के लिए हथियारों की तस्करी करने में कथित रूप से शामिल था। एक अधिकारी ने यह जानकारी दी।

एटीएस ने शुक्रवार को एक विज्ञप्ति में बताया कि गुरप्रीत सिंह उर्फ गोपी बिल्ला को पंजाब पुलिस द्वारा साझा की गई एक विशिष्ट सूचना के आधार पर पंचमहल जिले के हलोल कस्बे से पकड़ा गया। उसे पंजाब पुलिस को सौंप दिया जाएगा। पंजाब के गुरदासपुर जिले में पुलिस ने ग्रेनेड की तस्करी एवं विस्फोट करने तथा सीमा पार सक्रिय आतंकी नेटवर्क की मदद करने के संबंध में कुछ व्यक्तियों के खिलाफ हाल में मामला दर्ज किया था। 'प्रारंभिक जांच से पता चला है कि मुख्य आरोपी मनु अगवान और मनिंदर बिल्ला (जो वर्तमान में मलेशिया में हैं) पाकिस्तान की आइएसआइ के संचालकों के इशारे पर पंजाब में आतंकवादियों की भर्ती कर रहे थे ताकि घनी आबादी वाले इलाकों में ग्रेनेड हमले करके आतंक फैलाया जा सके। हाल में गिरफ्तार किए गए दो अन्य आरोपियों से पूछताछ के दौरान पंजाब पुलिस को आतंकी हमलों की साजिश के तहत दो ग्रेनेड और दो पिस्तौल की तस्करी में सिंह की भूमिका के बारे में पता चला।

पेज 1 का बाकी

चुनाव आयोग अनुचित काम के लिए डाल रहा है दबाव

रहा है। हावड़ा में भी इसी तरह के विरोध प्रदर्शन की खबरें आईं। शुक्रवार को, शिबपुर विधानसभा क्षेत्र के 240 बीएलओ को टिकियापाड़ा में ईस्ट-वेस्ट बाईपास स्थित एक सरकारी कार्यालय में 'डेटा-एंट्री' प्रशिक्षण लेना था। उन्होंने शिकायत की कि उन्हें दो बार डेटा दर्ज करने के लिए कहा जा रहा है, एक बार 'मैनुअल' रूप से और फिर 'डिजिटल' रूप से। उनका यह भी कहना था कि इसके अलावा उन्हें बहुत कम समय में निर्वाचन आयोग को जमा करने वाले भारी मात्रा में फार्म भी संभालने पड़ रहे हैं।

बीएलओ ने यह भी आरोप लगाया कि कई पुराने अधिकारी तकनीक से अनभिज्ञ हैं और बदलाव के साथ तारतम्य बिठाने की उन्हें मशक्कत करनी पड़ रही है। एक शिक्षिका और प्रदर्शनकारी बीएलओ, सहेली नस्कर ने कहा कि हमें स्कूल में कक्षाएं लेनी पड़ती हैं और फिर दबाव में आकर ईसी का काम जल्दी-जल्दी निपटाना पड़ता है। हम इतना बोझ नहीं उठा सकते।

प्रदर्शनकारी बीएलओ ने कहा कि अब वे हमें डिजिटल डेटा-एंट्री का प्रशिक्षण लेने के लिए मजबूर कर रहे हैं। हम इतने दबाव में डिजिटल डेटा एंट्री नहीं करेंगे। हम इस काम का बहिष्कार कर रहे हैं। बंगाल में मतदाता सूचियों के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआइआर) के तहत घर-घर जाकर गणना प्रपत्र (ईएफ) वितरित करने के लिए 80,000 से अधिक बीएलओ को लगाया गया है।

फरीदाबाद में बरामद विस्फोटकों की जांच के दौरान धमाका, नौ की मौत

(तीनों फारेंसिक विज्ञान प्रयोगशाला में कार्यरत थे)। नायब तहसीलदार मुजफ्फर अहमद खान, क्षेत्र के चौकीदार सुहैल अहमद राठेर तथा दर्जी मोहम्मद शफी पार्रे भी इस आकस्मिक विस्फोट में मारे गए। धमाके में कुल 32 लोग घायल हुए हैं, इसमें 27 पुलिसकर्मी, दो राजस्व अधिकारी और आस-पास के इलाकों के तीन आम नागरिक शामिल हैं। उन्होंने बताया कि उन्हें इलाज के लिए तुरंत स्थानीय अस्पतालों में ले जाया गया।

डीजीपी के अनुसार, नमूने लेने की प्रक्रिया पिछले दो दिन से जारी थी। उन्होंने कहा कि बरामदगी की अस्थिर और संवेदनशील प्रकृति के कारण, नमूना लेने की प्रक्रिया और संचालन का कार्य एफएसएल टीम द्वारा अत्यंत सावधानी के साथ किया जा रहा था। उन्होंने कहा कि लेकिन इस प्रक्रिया के दौरान दुर्भाग्य से कल रात लगभग 11 बजकर 20 मिनट पर एक विस्फोट हुआ। प्राथमिकी संख्या 162/2025 की प्रक्रिया के तहत फोरेंसिक और रासायनिक जांच के लिए नमूने लिए जा रहे थे। इसी प्राथमिकी से जुड़े मामले की जांच में पूरे 'सफेदपोश' आतंकी तंत्र का पर्दाफाश हुआ और तीन चिकित्सकों समेत आठ लोगों को गिरफ्तार किया गया। इस भीषण विस्फोट से पुलिस थाने की इमारत बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई और आस-पास की इमारतें भी प्रभावित हुईं। शुरुआत में लगातार छोटे-छोटे विस्फोट होने से बचाव अभियान में बाधा आई। जिन सामग्रियों से नमूना लिया जा रहा था वे पहले बरामद किए गए लगभग 360 किलोग्राम विस्फोटक पदार्थों, अमोनियम नाइट्रेट, पोटेशियम नाइट्रेट और सल्फर समेत रासायनिक पदार्थों का हिस्सा थीं।

यह जखीरा जम्मू-कश्मीर पुलिस ने नौ और 10 नवंबर को आरोपी मुजम्मिल गनई के फरीदाबाद स्थित किराए के घर से बरामद किया था। मुजम्मिल को गिरफ्तार कर लिया गया है। यह 360 किलोग्राम विस्फोटकों का बड़ा हिस्सा नौगाम पुलिस स्टेशन के खुले क्षेत्र में सुरक्षित रूप से रखा गया था।

इस थाने में आतंकी तंत्र के संबंध में प्राथमिक मामला दर्ज किया गया था। अक्तूबर के मध्य में नौगाम के बनपोरा में दीवारों पर पुलिस और सुरक्षा बलों को धमकी देने वाले पोस्टर दिखाई देने के बाद पूरी साजिश का पर्दाफाश हुआ। श्रीनगर पुलिस ने इस घटना को गंभीर खतरा मानते हुए 19 अक्तूबर को मामला दर्ज किया था और एक समर्पित टीम का गठन किया था। सीसीटीवी फुटेज के विश्लेषण से जांचकर्ताओं को पहले तीन संदिग्धों की पहचान करने में मदद मिली। ये तीन संदिग्ध आरिफ निसार डार उर्फ साहिल, यासिर-उल-अशरफ और मकसूद अहमद डार उर्फ शाहिद हैं, जिन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। इन तीनों के खिलाफ पथराव के मामले दर्ज थे और इन्हें पोस्टर चिपकाते हुए देखा गया था। उनसे पूछताछ के बाद एक पूर्व चिकित्सक से इमाम बने मौलवी इरफान अहमद को गिरफ्तार किया गया। उसने ही पोस्टर मुहैया कराए थे और माना जाता है कि उसने चिकित्सा समुदाय तक अपनी आसान पहुंच का इस्तेमाल करके चिकित्सकों को कट्टरपंथी बनाया।

इस सुराग के आधार पर श्रीनगर पुलिस अंततः फरीदाबाद स्थित अल फलाह विवि पहुंची, जहां से उसने मुजम्मिल अहमद गनई और शाहीन सईद को गिरफ्तार किया। यहीं से अमोनियम नाइट्रेट, पोटेशियम नाइट्रेट और सल्फर सहित रसायनों का विशाल भंडार जब्त किया गया। जांचकर्ताओं का मानना है कि पूरा तंत्र चिकित्सकों की मुख्य तिकड़ी द्वारा चलाया जा रहा था। फरार मुजफ्फर राठेर के भाई अदील राठेर की भूमिका अब भी जांच के दायरे में है।

सभी आरोपियों के खिलाफ मामले वापस लेने के निर्देश

और चार-पांच अज्ञात लोगों पर आरोप लगाए गए। अखलाक और दानिश को नोएडा के एक निजी अस्पताल ले जाया गया, जहां अखलाक को मृत घोषित कर दिया गया और बाद में दानिश को दिल्ली के 'आर्मी रिसर्च एंड रेफरल' अस्पताल रेफर किया गया।

घटना के एक दशक बाद, यह मामला ग्रेटर नोएडा के सूरजपुर स्थित जिला अदालत में लंबित है। वहीं, मार्क्सवादी काम्युनिस्ट पार्टी (माकपा) के महासचिव एमए बेबी ने घटना के सभी आरोपियों के खिलाफ आरोप वापस लेने निंदा की है। बेबी ने 'एक्स' पर कहा कि उत्तर प्रदेश सरकार अब कथित तौर पर भाजपा नेता संजय राणा के बेटे सहित सभी आरोपियों के खिलाफ आरोप वापस लेने की कोशिश कर रही है। उन्होंने कहा कि इस कदम की कड़ी निंदा करता हूं, जो घृणा अपराधों और हत्याओं को सरकार द्वारा स्वीकृति प्रदान करने के समान है। उत्तर प्रदेश सरकार को इन खतरनाक अपराधियों को दोषमुक्त करने के प्रयासों से तुरंत बचना चाहिए।

लालू परिवार में कलह : रोहिणी ने राजनीति छोड़ी, तोड़ा परिवार से नाता

की सेवा करेंगे, और जीतेंगे। इस बात को लेकर विवाद हुआ था। इसी दौरान उनसे पार्टी से इस्तीफा मांगने की सूचना भी सामने आई।

इस पर कहा गया था कि राजद प्रमुख लालू प्रसाद यादव की पार्टी में राष्ट्रीय अध्यक्ष हैं, प्रदेश अध्यक्ष है। तमाम सांगठनिक अधिकारी हैं। ऐसे में संजय यादव इस्तीफा कैसे मांग सकते हैं। सूत्र बताते हैं कि रोहिणी आचार्य की ओर से अपने छोटे भाई तेज प्रताप को विजयी बनने का आशीर्वाद देने को पार्टी के विरुद्ध गतिविधि माना गया। ऐसे में रोहिणी आचार्य से विरोध करते हुए सोशल मीडिया पर राजनीति छोड़ने का एलान कर दिया। संजय यादव हरियाणा के महेंद्रगढ़ के रहने वाले हैं और तेजस्वी यादव के सबसे भरोसेमंद रणनीतिकारों में गिने जाते हैं। 2024 में राजद ने उन्हें राज्यसभा भी भेजा था। टिकट बंटवारे में संजय यादव की भूमिका इस चुनाव में काफी चर्चा में रही। पार्टी सूत्रों के अनुसार, सीट बटवारे से लेकर उम्मीदवार चयन तक संजय की सलाह को प्राथमिकता दी गई।

बिहार : सरकार बनाने के फार्मूले पर कवायद शुरू

नीतीश कुमार से भी मुलाकात की थी। वहीं जद (एकी) के सूत्रों का कहना है कि भाजपा और जद (एकी) मिलकर पहले सरकार गठन को लेकर चर्चा करेगी। इस बैठक में टिकट बंटवारे की तरह ही जद (एकी) मुख्यमंत्री और अन्य मंत्री पद को लेकर फार्मूला तय करने की बात रख देगी। उसके बाद भाजपा लोजपा (रा), हम (से) और राष्ट्रीय लोक मोर्चा से बात कर उन्हें दी जाने वाली मंत्री पद पर फैसला करेगी। पार्टी सूत्रों का कहना है कि चुनाव में जीते सीटों के फीसद के आधार पर मंत्री पद दिए जाएंगे। साथ ही मुख्यमंत्री नीतीश कुमार पर एक बार फिर से सहमति बनाई जाएगी। शनिवार को पटना में मुख्यमंत्री से मुलाकात के बाद केंद्रीय मंत्री और लोजपा (रा) प्रमुख चिराग पासवान ने कहा कि मुख्यमंत्री से मुलाकात की, उन्हें जीत की बधाई और शुभकामनाएं दीं। राजग ने नीतीश कुमार के नेतृत्व में ऐतिहासिक जीत दर्ज की है। मुझे खुशी है कि मुख्यमंत्री ने राजग में हर गठबंधन सहयोगी की भूमिका की सराहना की।

पूर्व मंत्री आरके सिंह ने भाजपा से दिया इस्तीफा

निलंबित किए गए सिंह ने राष्ट्रीय अध्यक्ष को लिखे पत्र में लगाए कई आरोप

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 15 नवंबर।

भाजपा से निलंबित पूर्व केंद्रीय मंत्री एवं आरा के पूर्व सांसद राज कुमार सिंह ने शनिवार को पार्टी की प्राथमिक सदस्यता से इस्तीफा दे दिया। सिंह ने भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा को भेजा गया पत्र सार्वजनिक करते हुए पार्टी नेतृत्व पर कई गंभीर आरोप लगाए। इसी प्रकार की कार्रवाई में पार्टी ने विधान परिषद सदस्य अशोक कुमार अग्रवाल और उनकी पत्नी तथा कटिहार की महापौर ऊषा अग्रवाल को भी निलंबित कर दिया।

अग्रवाल दंपति पर अपने बेटे सौरभ के पक्ष में प्रचार करने का आरोप है, जो विकासशील इंसान पार्टी (वीआइपी) के प्रत्याशी के तौर पर कटिहार विधानसभा सीट से चुनावी मैदान में थे, जहां उनका मुकाबला भाजपा के मौजूदा विधायक और पूर्व उपमुख्यमंत्री तार किशोर प्रसाद से था। पूर्व मंत्री ने संकेत दिया कि

पार्टी ने विधान परिषद सदस्य अशोक कुमार अग्रवाल और उनकी पत्नी तथा कटिहार की महापौर ऊषा अग्रवाल को भी निलंबित कर दिया।

संभवतः भाजपा को आपराधिक पृष्ठभूमि वाले व्यक्तियों को टिकट न देने की उनकी टिप्पणी को ही विवाद का आधार बनाया गया। भाजपा की ओर से शनिवार को निलंबन किए जाने के कुछ घंटों बाद सिंह ने यह इस्तीफा दिया है।

उन्होंने पत्र में दावा किया कि उन्हें निलंबन नोटिस की जानकारी केवल अग्रसारित संदेशों के माध्यम से मिली। नोटिस में यह स्पष्ट नहीं किया गया कि उनकी कौन-सी गतिविधि पार्टी विरोधी मानी गई। उनके अनुसार, बिना किसी आरोप का उल्लेख किए जवाब मांगना न्यायोचित नहीं है। उनका यह रुख पार्टी विरोधी नहीं, बल्कि राजनीति में बढ़ते अपराधीकरण और भ्रष्टाचार के खिलाफ था। सिंह के मुताबिक यह टिप्पणी राष्ट्रहित और जनहित में थी, लेकिन 'पार्टी के कुछ लोग इससे असहज हो गए।' उन्होंने बताया कि वे अपना विस्तृत जवाब बिहार प्रदेश प्रभारी को पहले ही भेज चुके हैं, लेकिन भाजपा की प्राथमिक सदस्यता से इस्तीफा देकर उन्होंने अपना निर्णय अंतिम कर दिया है।

पार्टी के अनुसार, सिंह को जारी निलंबन आदेश में उनसे यह बताने को कहा गया कि उन्हें पार्टी से निष्कासित क्यों न किया जाए। सिंह बिहार के उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी जैसे नेताओं पर आपराधिक मामलों में कथित संलिप्तता को लेकर आलोचना करते रहे हैं। आरा संसदीय सीट से लगातार दो जीत दर्ज करने के बाद 2024 लोकसभा चुनाव में हार का सामना करने वाले सिंह राज्य सरकार द्वारा भागलपुर में अडाणी समूह के साथ बिजली संयंत्र स्थापित करने के लिए हुए 'समझौते' के भी आलोचक रहे हैं।

मतदान से बड़ी जिम्मेदारी

बिहार की जनता ने अपना फैसला सुना दिया है। राजग को 202 सीटें और महागठबंधन को 35 सीटें मिली हैं। सभी नागरिकों को इस निर्णय को स्वीकार करना चाहिए। नई सरकार हमारी शुभकामनाओं की पात्र है, चाहे मुख्यमंत्री कोई भी हो। वैसे शुभकामनाओं की सबसे ज्यादा हकदार बिहार की जनता है।

बिहार में चुनावी गतिविधियों के प्रकाशन एवं प्रसारण में मीडिया ने खुद को गौरवान्वित नहीं किया है। कुछ मीडिया संस्थान (अखबार और टेलीविजन समाचार चैनल), जिन्होंने थोड़ा अलग रास्ता अपनाया था, वे भी इस भीड़ में शामिल हो गए। विभिन्न क्षेत्रों में मौजूद पत्रकार भी एक स्वर में बोल रहे थे: लोग जाति के आधार पर वोट कर रहे हैं; नीतीश कुमार के खिलाफ कोई सत्ता-विरोधी लहर नहीं है; तेजस्वी यादव चुनाव प्रचार में ऊर्जा तो लाए, लेकिन अपने पारंपरिक आधार से आगे अपनी नीतियों और विचारों का विस्तार नहीं कर पाए; प्रशांत किशोर ने मतदाताओं के सामने नए विचार रखे, लेकिन उन्हें एक नौसिखिया और अप्रमाणित माना जा रहा है; नरेंद्र मोदी मतदाताओं से तत्काल जुड़ जाते हैं; राहुल गांधी अपने मुख्य मुद्दे वोट चोरी और बेरोजगारी वगैरह पर अड़े रहे, आदि-आदि। नतीजे मीडिया के शोरगुल को सही साबित करते दिख रहे हैं। एकमात्र नया गीत था- मतदान से पहले, मतदान के दौरान और मतदान के बाद हर घर की एक महिला को दस हजार रुपए की नकद राशि देना।

निचले पायदान पर

बिहार के लोगों की याददाश्त बहुत गहरी है। उन्होंने लालू प्रसाद (या उनकी पत्नी) की 15 साल की सरकार (1990-2005) को याद किया और तेजस्वी यादव को बेवजह दोषी ठहराया, जो उस समय मुश्किल से 16 साल के थे, जब सरकार सत्ता से बाहर हुई थी। उन्होंने नीतीश कुमार (या उनके प्रतिनिधि) की 20 साल की सरकार को भी याद किया, लेकिन ऐसा लगता है कि उनकी तमाम नाकामियों के प्रति लोगों में कोई नाराजगी नहीं है।

क्या बिहार गरीब है? क्या यहां बड़े पैमाने पर बेरोजगारी है? क्या करोड़ों लोग नौकरी की तलाश में दूसरे राज्यों में पलायन कर रहे हैं? क्या बहुआयामी गरीबी लोगों के एक बड़े वर्ग को प्रभावित करती है? क्या शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा की स्थिति दयनीय है? 'शराबबंदी' के बावजूद क्या शराब खुलेआम उपलब्ध है? हर सवाल का जवाब 'हां' है। अगर ऐसा है, तो लोगों ने हाल ही में संपन्न चुनावों में जिस तरह से मतदान किया, उसका कोई स्पष्ट कारण नजर नहीं आता है। एक लेख में शेखर ने व्यंग्यात्मक लहजे में लिखा कि 'बिहार आज जो सोचता है, वह परसों भी वही सोचता था।' जो भी हो, इसके पीछे शायद कुछ अच्छे कारण हो सकते हैं, जो चुनाव बाद के सर्वेक्षणों में सामने आएंगे।

दूसरी नजर

पी चिदंबरम

क्या बिहार गरीब है? क्या यहां बड़े पैमाने पर बेरोजगारी है? क्या करोड़ों लोग नौकरी की तलाश में दूसरे राज्यों में पलायन कर रहे हैं? क्या बहुआयामी गरीबी लोगों के एक बड़े वर्ग को प्रभावित करती है? क्या शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा की स्थिति दयनीय है? 'शराबबंदी' के बावजूद क्या शराब खुलेआम उपलब्ध है? हर सवाल का जवाब 'हां' है। अगर ऐसा है, तो लोगों ने हाल ही में संपन्न चुनावों में जिस तरह से मतदान किया, उसका कोई स्पष्ट कारण नजर नहीं आता है।

मैं बिहार के लोगों से चंपारण युग की भावना को पुनः खोजने का आग्रह करता हूं। छात्रों को अयोग्य शिक्षकों; पुस्तकालयों, प्रयोगशालाओं और शिक्षकों से रहित कालेजों एवं स्कूलों; पर्चाफोड़; परीक्षाओं में सामूहिक नकल; हेरफेर किए गए परिणाम; बेकार डिग्रियां; और हास्यास्पद लोक सेवा भर्ती को चुपचाप बर्दाश्त नहीं करना चाहिए। युवाओं को अपने राज्य में नौकरियों की कमी को चुपचाप स्वीकार नहीं करना चाहिए और दूर-दूर ऐसे राज्य में किसी भी नौकरी के लिए नहीं जाना चाहिए, जहां के लोग, भाषा, खान-पान और संस्कृति उनके लिए अपरिचित हों। माता-पिता और परिवारों को यह भाग्य मानकर स्वीकार नहीं करना चाहिए कि पुरुष हमेशा उनसे दूर रहेंगे। बिहार के लोगों को अब अपने पिता और दादी की तरह नहीं रहना चाहिए।

संगठन ही कुंजी

स्पष्ट तौर पर विपक्षी राजनीतिक दल जनता के सामने एक वैकल्पिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करने और बदलाव की इच्छा जगाने में विफल रहे। प्रशांत किशोर ने ऐसा किया, लेकिन वे कई कमियों से घिरे रहे। अगर यह सच है, तो इसका दोष पूरी तरह से विपक्षी राजनीतिक दलों पर है। केवल सक्षम नेता और संसाधन ही पर्याप्त नहीं हैं; उनके पास जमीनी स्तर पर मजबूत पकड़ और एक सशक्त संगठन होना चाहिए। चुनाव जीतने में पार्टी के नेताओं या उम्मीदवारों से ज्यादा संगठन और कार्यकर्ता की भूमिका अहम होती है। एक नियम के रूप में- कुछ अपवादों को छोड़कर- हर चुनाव एक ऐसी पार्टी या पार्टियों के गठबंधन द्वारा जीता जाता है, जिसके पास संगठनात्मक शक्ति होती है, जो मतदाताओं को अपने पक्ष में मतदान करने के लिए प्रेरित कर सकता है। बिहार के नतीजों को देखते हुए ऐसा लगता है कि वहां पर भाजपा और उसके सहयोगी जद (एकी) के पास वह संगठनात्मक शक्ति थी।

दायित्व किसका

चुनाव आयोग की भूमिका सवालों के घेरे में रही। बिहार चुनाव से कुछ दिन पहले आयोग ने मतदाता सूचियों के विशेष गहन पुनरीक्षण की घोषणा की- केवल बिहार में- और बहस को भटका दिया। मतदान फीसद में वृद्धि आंशिक रूप से इसलिए हुई, क्योंकि मतदाता सूचियों में कुल मतों की संख्या कम थी, और इसका श्रेय विशेष गहन पुनरीक्षण को जाता है।

चुनाव की तारीखों की घोषणा से दस दिन पहले प्रधानमंत्री की ओर से मुख्यमंत्री महिला रोजगार योजना के एलान पर चुनाव आयोग ने आंखें मूंद लीं। महिलाओं के खाते में दस हजार रुपए का हस्तांतरण घोषणा से पहले शुरू हुआ और चुनाव प्रचार के दौरान जारी रहा; चुनाव आयोग ने इसे किसी भी स्तर पर नहीं रोका। यह धन हस्तांतरण मतदाताओं को एक खुली रिश्वत थी। तमिलनाडु में चुनाव आयोग की कार्रवाई से तुलना कीजिए। वहां किसानों के लिए नकद सहायता योजना मार्च 2003 में शुरू की गई थी; जब 2004 में लोकसभा चुनाव की तारीखों की घोषणा हुई, तो यह योजना बंद कर दी गई। वर्ष 2006 से एक मुफ्त रंगीन टीवी योजना लागू थी; 2011 में जब विधानसभा चुनावों की घोषणा हुई, तो इस योजना को अचानक स्थगित कर दिया गया (स्रोतः द हिंदू)। बिहार में चुनाव आयोग का पक्षपातपूर्ण आचरण स्पष्ट था।

इस सबके बावजूद, यह मानना होगा कि राजग ने शानदार जीत हासिल की।

मुझे इस बात की ज्यादा चिंता है कि अगले पांच वर्षों में राज्य सरकार को उसके वादों और जवाबदेही के लिए कौन जिम्मेदार ठहराएगा। बिहार की जनता ने राज्य विधानसभा में एक मजबूत विपक्ष के लिए वोट नहीं दिया है, और इसी वजह से जिम्मेदारी फिर से जनता पर ही आ जाती है। यह मत के अधिकार के इस्तेमाल से भी बड़ी जिम्मेदारी है।

साजिश के तार

लालकिले पर आतंकी हादसे के अगले दिन संयोग से मैं अपने एक कश्मीरी दोस्त से मिली। उन्होंने कहा, 'याद है मैंने तुमको क्या कहा था जब हम श्रीनगर में मिले थे दो साल पहले? उस वक्त पर्यटकों की बहार थी। ऐसा लगता था कि जिहादियों का बिल्कुल सफाया हो गया है और मैंने तुमको कहा था कि शांति सिर्फ ऊपर-ऊपर से है। याद है कि यह भी कहा था मैंने कि लोगों में अंदर से गुस्सा है जो कभी भी शांति को अशांति में बदल डालेगा। मेरा यह दोस्त एक कामयाब कारोबारी है जिसका ज्यादातर कारोबार दिल्ली से चलता है इसलिए कि असली पैसे मिलते हैं शालें, कालीन और अन्य कश्मीरी चीजें निर्यात करने से। इसकी न जिहादियों से कोई हमदर्दी है और न ही वह कश्मीर की सियासत से कोई वास्ता रखता है, लेकिन कश्मीर के उस दौरे पर मैंने उसकी बात राजनेताओं और पत्रकारों से भी सुनी थी।

घाटी पर जो शांति की चादर बिछी थी वह इतनी नाजुक थी कि कभी भी फट सकती थी, लेकिन मालूम नहीं क्यों केंद्र सरकार की खुफिया एजंसियों को यह बात पता नहीं थी। हर दूसरे दिन कोई आला राजनेता या अफसर बयान देता आया है कि घाटी से आतंकवाद को बिल्कुल समाप्त कर दिया गया है। यह बात केंद्रीय गृहमंत्री से हमने बहुत बार सुनी है और राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार से भी। पहला झटका उनको लगा जब पहलगाम में आतंकवादी हमला हुआ था। उसको हमने पाकिस्तान के सिर थोप कर आपरेशन सिंदूर द्वारा उस देश के अंदर 'घुस कर' आतंकवादियों के मुख्यालय नष्ट किए, लेकिन इस बात पर किसी ने नहीं ध्यान दिया कि घाटी के लोगों में भी जिहादी विचारधारा ने ऐसी मजबूत जड़ें बनाई हैं कि उनको उखाड़ना आसान नहीं है। जिन कश्मीरी डाक्टरों पर लालकिले वाली घटना को अंजाम देने का इल्जाम है, वे अपनी नजरों में अल्लाह के लिए लड़ रहे हैं अन्याय के खिलाफ।

ऐसा कह कर मैं बिल्कुल जिहादी आतंकवाद को सही नहीं कह रही हूं। मेरी नजरों में आतंकवादी कायर होते हैं, योद्धा नहीं, लेकिन इतना जरूर कह रही हूं कि इस जिहादी सोच को खत्म करना आसान नहीं होगा। देश भर में मुझे मिलते हैं मुसलमान, जो आकर्षित हुए हैं जिहादी सोच से, जबसे हिंदुत्व के नाम पर गौरक्षकों ने ऐसी जंग छेड़ी है कि कई बार उनका शिकार बने हैं बेगुनाह कारोबारी, किसान और आम लोग। जब पढ़े-लिखे डाक्टर ही बनने लगते हैं आतंकवादी, तो वास्तव में चिंता होनी चाहिए देश के नेताओं को और हमको भी।

लालकिले वाली घटना के बाद खबर पत्रकारों

वक्त की नब्ज

तवलीन सिंह

दिल्ली में बम फटने के अगले दिन लाउडस्पीकर लगा कर लोगों को सावधान करने का काम किया गया था, लेकिन दूर तक आतंकवाद से लड़ने में प्रशिक्षित सुरक्षाकर्मी नहीं दिखे मुझे। कहना यह चाहती हूं मैं कि अक्सर होता यह है कि किसी आतंकवादी घटना घटने के बाद हम सब भूल जाते हैं कि आतंकवाद एक ऐसा कायर युद्ध है जिसके खिलाफ लड़ने के लिए युद्धस्तर की तैयारी होनी चाहिए प्रशिक्षित सुरक्षाकर्मियों द्वारा।

को दी गई है कि हमारी सुरक्षा एजंसियों ने सतर्कता न दिखाई होती, तो तेरह लोग नहीं कई और मर सकते थे। सारी साजिश रची थी अल फलाह विश्वविद्यालय से जुड़े चार डाक्टरों ने, जिनसे साबित हो गया है कि एक ने लालकिले के सामने अपनी गाड़ी को बम बना कर बेगुनाह लोगों की जानें लीं और बीस से अधिक लोगों को गंभीर चोटें पहुंचाई। साबित हो गया है कि इस डाक्टर का नाम था उमर मोहम्मद राठर। जितनी भी जानकारी आप तक पहुंची है, वह सुरक्षा एजंसियों ने पत्रकारों तक चुपके से पहुंचाई है। तो पहला सवाल यह है कि औपचारिक तौर पर क्यों नहीं देश को यह जानकारी दी जाती है जैसे विकसित पश्चिमी देशों में होता है। 'सूत्रों' द्वारा जब पत्रकार जानकारी लेते हैं, तो खोजी पत्रकारिता नहीं करते हैं। करते तो शायद अल फलाह विश्वविद्यालय के डाक्टरों में तकरीबन चालीस फीसद कश्मीर घाटी से क्यों आते हैं, यह बताते। जानकारी शायद मिलती कि इस विश्वविद्यालय को जिहादियों के मुख्यालय में कैसे तब्दील किया गया और क्यों नहीं पहले किसी ने इस बात पर ध्यान दिया था। जब डाक्टरों की गुप्त मुलाकातें होती थीं कमरा नंबर-13 में, जिसमें जिहादी साजिशें रच रहे थे, तो कैसे हो सकता है कि अल फलाह विश्वविद्यालय के मालिक तक यह खबर किसी ने नहीं पहुंचाई?

सबसे बड़ा सवाल यह है कि इतनी बड़ी साजिश दो-तीन राज्यों में जैश-ए-मोहम्मद के प्यादों ने कैसे रची। इसके बारे में हमारी खुफिया एजंसियों को खबर क्यों इतनी देर से मिली? इस सवाल का जवाब मैं विनम्रता से खुद देना चाहती हूं।

मुंबई में रहती हूं और जब भी नवंबर का महीना आता है, तो मुझे याद आता है 26/11 वाला हमला। हर बार ध्यान में आता है कि जो हुआ था, वह दोबारा अगर पाकिस्तान के आतंकी संगठन करना चाहते हैं, तो उतनी ही आसानी से कर सकेंगे, जितनी आसानी से 2008 में उन्होंने किया था। कारण यह है कि जो प्रशिक्षण देना चाहिए था मुंबई के आम पुलिसवालों को, उसके आसार तक नहीं देखने को मिले हैं। जिस प्रशिक्षण को 'काउंटर-टेररिज्म' कहते हैं अंग्रेजी में, वह बहुत खास है और अपने देश में, अभी तक इसको सिर्फ उन सुरक्षा कर्मियों को दिया जाता है जो वीआइपी सुरक्षा के लिए रखे जाते हैं। आम थानों में जो पुलिसवाले तैनात हैं उनको आतंकवादियों से लड़ने के लिए कोई प्रशिक्षण नहीं दिया जाता है।

दिल्ली में बम फटने के अगले दिन शहर के बाजारों में लाउडस्पीकर लगा कर लोगों को सावधान करने का काम किया गया था, लेकिन दूर तक आतंकवाद से लड़ने में प्रशिक्षित सुरक्षाकर्मी नहीं दिखे मुझे। कहना यह चाहती हूं मैं कि अक्सर होता यह है कि किसी आतंकवादी घटना घटने के बाद हम सब भूल जाते हैं कि आतंकवाद एक ऐसा कायर युद्ध है जिसके खिलाफ लड़ने के लिए युद्धस्तर की तैयारी होनी चाहिए प्रशिक्षित सुरक्षाकर्मियों द्वारा। उम्मीद करती हूं कि हमारे शासक अपनी पीठ थपथपाने के बदले सुरक्षा में असली परिवर्तन लाने के प्रयास करना शुरू करेंगे अब।

जनादेश के मायने

मन को वे बातें झकझोर देती हैं जिसकी हम कल्पना तक नहीं कर पाते हैं। बिहार का जनादेश कुछ वैसा ही है। सभी अनुमान, पक्ष-विपक्ष का मूल्यांकन, सर्वे और अध्ययन सब धराशायी हो गए। ऐसा कैसे और क्यों हुआ, यह गहन चिंतन और अध्ययन का विषय है। भारत में बुद्धिजीवी इतने पूर्वाग्रह के शिकार हैं कि उन्होंने सामाजिक-राजनीतिक परिवर्तन की प्रक्रिया को समझने की स्वयं की क्षमता घटा ली है। ऐसा मान लिया गया था कि सामाजिक सोच अपरिवर्तनीय स्थिति में है। सुविधावादी राजनीति इसे और भी बढ़ा-चढ़ा कर प्रस्तुत करती रही है। यह नहीं भूलना चाहिए कि मनुष्य अपने मूल स्वभाव से प्रगतिशील होता है और आदर्श उसे लुभाता है। इसलिए किसी भी परिस्थिति में संकीर्णता आधारित जीवन मूल्य उसकी बाध्यता होती है, न कि वैचारिक बुनियाद। इसलिए जैसे ही उसे अवसर मिलता है, वह उस घरौंदे से बाहर निकल जाता है।

बिहार का जनादेश सामाजिक यथास्थिति को त्यागने का एक उदाहरण है। जनादेश ने दिखा दिया कि सर्वसमावेशी विकास में परंपरागत सोच को खत्म करने की अद्भुत क्षमता होती है। आर्थिक संपन्नता व्यक्ति को स्वावलंबी बनाती है। निर्णय लेने से उसकी स्वायत्तता बढ़ती है। राज्य की कल्याणकारी भूमिका एक बार फिर से परिभाषित हुई है। वर्ष 2014 के बाद से प्रधानमंत्री का सामाजिक दर्शन आर्थिक समूहों को चिह्नित कर उन्हें स्वावलंबी बनाना रहा है। वर्ष 2014 से पूर्व दी जाने वाली सहायता राज्य के विवेक पर निर्भर थी और उसमें अनिश्चितता रहती थी। मगर 2014 के बाद दी जाने वाली सहायता अधिकार आधारित, नीतिगत है और उसमें निश्चितता है। कल्याणकारी राज्य की अवधारणा में यह बुनियादी परिवर्तन है।

बिहार में बड़ी संख्या में किसानों को मिल रहा किसान सम्मान निधि इसका उदाहरण है। स्वास्थ्य, शिक्षा और आवास से जुड़ी कल्याणकारी योजनाओं में राज्य की सक्रियता ने ग्रामीण भारत की राजनीतिक चेतना को बढ़ाया है। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं कि अधिकांश नव कल्याणकारी योजनाएं प्रधानमंत्री के सामाजिक आर्थिक दर्शन से उपजी हैं। वे दिन प्रतिदिन की जरूरत या संभावित परेशानियों के समाधान के रूप में हैं। इसलिए हाशिये के लोगों के मन में वे स्थायी रूप से घर कर चुके हैं।

कल्याणकारी राज्य का यह विकास माडल बिहार में सबसे प्रभावी रूप से महिलाओं तक पहुंचा। ग्रामीण महिलाएं आमतौर पर अपने पति या परिवार के किसी पुरुष अथवा पड़ोसी पर अपने राजनीतिक निर्णय के लिए निर्भर रहती थीं। लेकिन अब वे पितृसत्तात्मक सोच से आंशिक या पूर्ण रूप से मुक्त हैं। बदलाव की इस ऐतिहासिक प्रक्रिया को परंपरागत राजनीतिक शैली के लोग समझ पाने में विफल रहे हैं। महिलाओं ने अपने आर्थिक हितों के आईने में राजनीतिक विकल्पों को देखना शुरू कर दिया है। बिहार में पुरुषों एवं महिलाओं का मतदान फीसद क्रमशः 62.98 और 71.78 है। सात जिलों में पुरुषों की तुलना में महिलाओं ने अधिक मतदान किया है। यह बिहार में लोकतंत्र का संख्यात्मक और गुणात्मक दोनों विस्तार है।

औपचारिक राजनीति के इतर राज्य के लाभार्थियों में अनौपचारिक चिंतन प्रक्रिया पिछले एक दशक से चल रही है। चुनाव परिणाम के बाद चिंतकों की नींद टूट गई है। बिहार के चुनावी परिवेश में महिलाओं के मन में मद्यपान निषेध की नीति में बदलाव का भय भी था। वर्ष 2016 में पूर्ण शराबबंदी के निर्णय से बिहार को प्रत्येक वर्ष लगभग साढ़े तीन हजार करोड़ की क्षति हुई। बिहार जैसे विपन्न राज्य के लिए यह नीतीश कुमार का बड़ा निर्णय था। आर्थिक लाभ के लिए सामाजिक सौहार्द की बलि नहीं चढ़ाई जा सकती है। पांचवें राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण की रपट के अनुसार मद्यपान के कारण 83 फीसद महिलाएं, घरेलू हिंसा की शिकार होती थी। उस पर विराम लग गया।

भारत के 'वाम उदारवादियों' की एक बड़ी विडंबना है। जब देश में जातियां हकीकत थीं, तब वे 'वर्ग चेतना' की पुस्तक लेकर घूम रहे थे और जब नव उदारवाद ने आर्थिक वर्गों की श्रेणियों का निर्माण कर दिया है, तब वे जाति-चेतना पर बात करने में लगे हैं। बिहार में भारतीय जनता पार्टी और भाकपा (माले) को छोड़ कर किसी भी दल के पास जीवंत राजनीतिक संरचना नहीं है। इसलिए राष्ट्रीय जनता दल का तर्क कि 'जंगल राज' इतिहास हो गया है, लोगों के गले नहीं उतर पाया।

इसलिए 2025 का जनादेश शुचिता आधारित सर्वसमावेशी शासन व्यवस्था की अग्रिम जिम्मेदारी भी है। प्रधानमंत्री द्वारा उल्लिखित चार नई

संदर्भ

राकेश सिन्हा

बिहार का जनादेश सामाजिक यथास्थिति को त्यागने का एक उदाहरण है। जनादेश ने दिखा दिया कि सर्वसमावेशी विकास में परंपरागत सोच को खत्म करने की अद्भुत क्षमता होती है। आर्थिक संपन्नता व्यक्ति को स्वावलंबी बनाती है। निर्णय लेने से उसकी स्वायत्तता बढ़ती है। राज्य की कल्याणकारी भूमिका एक बार फिर से परिभाषित हुई है। वर्ष 2014 के बाद से प्रधानमंत्री के सामाजिक दर्शन में आर्थिक समूहों को चिह्नित कर उन्हें स्वावलंबी बनाना रहा है।

जातियों का उत्थान ही संपूर्ण क्रांति माना जा सकता है। यह भी नहीं भूलना चाहिए कि इसमें थोड़ी भी चूक उतनी ही तीव्रता से पुरानी राजनीति या प्रतिक्रियावाद के पुनरागमन का अवसर तैयार कर देगी।

बिहार ने 1967 और 1977 में इसी प्रकार का जनादेश देकर राष्ट्रीय राजनीति को प्रभावित किया था। रचनात्मक राजनीति सामाजिक प्रगतिशीलता को आगे बढ़ाती है और पीढ़ियों के लिए नया प्रतिमान प्रस्तुत करती है। सहजानंद सरस्वती, सच्चिदानंद सिन्हा, राजेंद्र प्रसाद, जयप्रकाश नारायण और कर्पूरी ठाकुर ऐसे कुछ नाम हैं, जिनका राजनीतिक योगदान से कहीं अधिक सामाजिक योगदान है। बिहार के जनतंत्र का इतिहास सदियों पुराना है। लिच्छवी गणतंत्र का अभिषेक पुष्करणी सरोवर उसकी स्मृति के रूप में वैशाली में आज भी विद्यमान है। इसमें स्नान कर प्रतिनिधि पद और गोपनीयता की शपथ लेते थे। उसी संदर्भ में भगवान बुद्ध का विज्जी संदेश आज भी प्रसांगिक हो जाता है। जिस गणतंत्र की विधायिका जन सरोकार पर निरंतर बहस करती है, जहां महिलाओं को सम्मान मिलता है और जनप्रतिनिधि का चरित्र पारदर्शी होता है, उस गणतंत्र का कभी विनाश नहीं हो सकता है।

दस हजार का तड़का

चौदह नवंबर की सुबह बिहार के चुनाव परिणाम आते हैं। मतदान के बाद हुए सर्वेक्षण अपने नतीजे दे चुके थे और एकाध को छोड़ सब राजग को जिताते दिखे। कुछ राजग को डेढ़ सौ सीट भी देते दिखे और एकाध ने तो 170 से 180 सीटें तक दीं।

आठ बज रहे हैं। सारे खबर चैनल बिहार विधान सभा के चुनाव के आरंभिक रुझानों पर खबर देने की तैयारी कर चुके हैं। कुछ देर में 'डाक मतपत्र' गिने जा रहे हैं। फिर 'ईवीएम' के वोटों की गिनती शुरू और वहां से बहुत-सी सीटों पर राजग की जीत के रुझान नजर आने लगते हैं। महागठबंधन हर पल पीछे होता दिखता है और राजग आगे बढ़ता नजर आता है। एकाध एंकर को छोड़ अधिकतर एंकरों के चेहरे रुझानों को देख कुछ चकित नजर आते हैं। फिर उनमें से कई अपनी खुशी को नहीं छिपाते, कुछ अपनी खुशी को दबाते हुए महागठबंधन की खबर लेते हैं कि कथित 'एंटी इन्कंबेंसी' यानी सत्ता विरोधी रुझान का क्या हुआ। आपके समीकरणों का क्या हुआ? क्या इस चुनाव ने 'बिहार में जातिवाद निर्णायक है' के 'विचार' को ध्वस्त कर दिया? क्या महागठबंधन का सामाजिक फार्मूला नाकाम हो गया और राजग का पास हो गया? कई एंकर और संवाददाता कल तक नीतीश के 'बीमार' होने, उनके 'अक्षम' होने की कामना करने वालों से सवाल पूछने लगते हैं कि कल तक आप महागठबंधन की बड़ी जीत का दावा कर रहे थे, तो उस दावे का क्या हुआ? महागठबंधन का एक प्रवक्ता किसी तरह संभालता है कि अभी कुछ भी कहना उचित नहीं, अंतिम परिणामों का इंतजार करें।

दोपहर के बारह बज रहे हैं। राजग के जीतने के रुझान बताते हैं कि अब आईं उनकी इतनी सीटें। आंकड़ा हर पल, कुछ बढ़ता, कुछ घटता नजर आता है। फिर रुझान पलटने लगते हैं। राजग की बढ़त दो सौ सीटों से घटकर अचानक 190 तक आ जाती है, लेकिन फिर 'बढ़त' नजर आने लगती है। दोपहर के करीब दो बजे राजग 200 पार पर पहुंचा दिखता है, जबकि महागठबंधन कुछ पैंतीस-छत्तीस सीट पाता नजर आता है, जबकि 'जन सुराज' शून्य पर आ जाता है और बाकी सहयोगी दो से पांच के बीच दिखते हैं।

एक निलंबित कांग्रेसी वक्ता कहने लगते हैं कि भाजपा के नेताओं और कार्यकर्ताओं में जीत की जो भूख है, वह अतुलनीय है। यह उसका ही परिणाम है। उनकी राजनीति से असहमत हुआ जा सकता है, लेकिन उनकी यह कर्मठता तारीफ के योग्य है। एंकर चहकती है कि लीजिए इनका भी हृदय परिवर्तन हो गया। फिर महागठबंधन के एक प्रवक्ता आते हैं और कहने लगते हैं कि अभी जल्दी है, इंतजार करें, लेकिन एक बड़े प्रवक्ता आते हैं जो अपनी असफलता के कारणों का ठीकरा चुनाव आयोग पर फोड़ कर चले जाते हैं कि यह चुनाव ज्ञानेश गुप्ता (मुख्य चुनाव आयुक्त) बरक्स बिहार की जनता के बीच हुआ है। पत्रकार पूछते हैं तो वे फिर वही 'ज्ञानेश बरक्स बिहार की जनता' की बात को दुहराते रहते हैं। फिर एक पुराने प्रवक्ता आकर यह कहकर बात संभालते हैं कि अभी कुछ भी कहना जल्दबाजी होगी... सारे परिणाम आने दीजिए..!'

यानी कि फिर वही... 'वोट चोरी' और 'चुनाव चोरी' के आरोप। फिर एक बहस में महागठबंधन के एक वक्ता 'चुनाव चोरी' को 'चुनाव डकैती' में बदल देते हैं। एंकर कहता है कि आपके 'वोट चोरी' के आरोप को तो सुप्रीम कोर्ट तक ने 'नकार' दिया, फिर भी आप इसी पर अटके हैं और अब तो आप 'चोरी' की जगह 'डकैती' कहने लगे हैं, कल को क्या कहेंगे?

कुछ एंकर और विपक्षी प्रवक्ता इन परिणामों को 'कौन बनेगा मुख्यमंत्री' की ओर ले आते हैं और भाजपा के प्रवक्ताओं से बार-बार पूछने लगते हैं कि नीतीश मुख्यमंत्री बनाए जाएंगे या नहीं। एक चर्चा में एक पुरानी पत्रकार पूछती हैं कि कुछ दिन बाद भाजपा नीतीश को हटा कर अपना मुख्यमंत्री बनाएगी, जैसा कि महाराष्ट्र में हुआ। जवाब में राजग के प्रवक्ता साफ करते हैं कि हमारे नेता कह चुके हैं कि न प्रधानमंत्री की जगह खाली है, न मुख्यमंत्री की। एक प्रवक्ता तो यह तक कह देते हैं कि आप हमको आपस में लड़ाने की जुगत न करें। इससे कुछ होने वाला नहीं।

अपराह्न के तीन बजे हैं। बढ़त के रुझान ठहर से गए हैं। राजग की बढ़त 200 पार पहुंच गई दिखती है। इसके बरक्स महागठबंधन की बढ़त इकतीस सीटों पर ठहर गई दिखती हैं। हार के कारणों पर विचार करते हुए एक 'विश्लेषक' कहते हैं कि महागठबंधन वाले कई नेता कार्यकर्ता आम जनता के बीच काम नहीं करते, लेकिन राजग, खासकर भाजपा के नेता व कार्यकर्ता चुनाव जीतने के लिए चौबीसों घंटे सातों दिन काम करते है। एक एंकर बताती है कि जब महाराष्ट्र का चुनाव चल रहा था, तभी भाजपा के नेताओं ने बिहार के चुनाव की 'योजना' शुरू कर दी थी। यह 'आशातीत चुनाव परिणाम' राजग के 'जनहितकारी कार्यों' का सुफल है। वे अपनी जनता के सीधे संपर्क में रहते हैं... फिर राजग सरकार ने हर महिला को 'दस हजार का तड़का' दिया।

बाखबर

सुधीश पचौरी

एक चर्चा में एक पुरानी पत्रकार पूछती हैं कि कुछ दिन बाद भाजपा नीतीश को हटा कर अपना मुख्यमंत्री बनाएगी, जैसा कि महाराष्ट्र में हुआ, तो जवाब में राजग के प्रवक्ता साफ करते हैं कि हमारे नेता कह चुके हैं कि न प्रधानमंत्री की जगह खाली है, न मुख्यमंत्री की।

केदार

कहानी

उसने अपनी कड़ी मेहनत और ईमानदारी से अपने मालिक का दिल जीत लिया। फिर एक दिन मालिक ने उससे पूछा-'तुझे क्या चाहिए? कभी तो अपने मुंह से कुछ मांग लिया कर।'

पल्लवी सक्सेना

मोक्ष कहें या शांति। आप इसे कोई और भी नाम दे सकते हैं। लेकिन यह जितना मृत व्यक्ति के लिए महत्त्वपूर्ण होता है, उतना ही जीवित इंसानों के लिए भी मायने रखता है। पूजा-हवन कर हम मान लेते हैं कि दिवंगत आत्मा को शांति प्राप्त हो गई होगी। जीवित व्यक्ति के लिए तो ऐसा कुछ नहीं होता। वह तो जीते जी ही शांति की खोज में भटकता रहता है। विशेष रूप से यदि वह किसी ग्लानि का शिकार हो।

यह कहानी है केदार की। अनाथ बच्चा केदार किसी दिन सड़क पर रुके वाहन साफ करता, तो किसी दिन लोगों के जूते। अक्सर उसे भूखे पेट ही सोना पड़ता था। कई बार उसका मन किया कि भीख मांगकर खा ले। कई बार उसके आस-पास रहने वाले उसी के जैसे लोग उसे थोड़ा बहुत अपने साथ मिल बांटकर खाने को कहते, क्योंकि वे सभी लोग बहुत अच्छे से जानते थे कि भूख क्या चीज होती है। लेकिन केदार हमेशा उनसे यही कहता, 'मुझे खाना नहीं चाहिए। कहीं कोई काम मिल रहा हो तो बताओ!' एक दिन एक चाय की दुकान पर ग्राहकों को चाय देने और बर्तन आदि साफ करने का काम उसे मिल गया।

उसने अपनी कड़ी मेहनत और ईमानदारी से अपने मालिक का दिल जीत लिया। फिर एक दिन मालिक ने उससे पूछा-'तुझे क्या चाहिए? कभी तो अपने मुंह से कुछ मांग लिया कर बेटा, ग्राहक भी जब कभी तेरे से खुश होकर तुझे कुछ देते हैं तो तू साफ मना कर देता है'। 'मुझे कोई कुछ दे, यह अच्छा नहीं लगता बाबा। मैं कोई मंगता थोड़े ही हूं'। यह सुनकर बाबा को हंसी आ गई और उन्होंने कहा, 'जैसा तेरा नाम, वैसा ही तेरा व्यवहार है। एकदम भोला! कुछ भी तुझे बिन मांगे मिले उसे लेने में कोई बुराई नहीं है। वह भीख नहीं, तेरा हक है। तेरी मेहनत के बल पर मिल रहा है न कि तूने उसे किसी से मांगा है। मैं तुझे कुछ देना चाहता हूं और वो कोई दया या भीख नही है मेरे बच्चे, तेरा अधिकार है'। 'अधिकार...! उसका तो आप मुझे पैसा देते है ना...?' 'तेरा बाबा होने के नाते मेरा भी मन करता है कि मैं भी तुझे कुछ दूं'। बहुत देर तक केदार अपने चाय वाले बाबा का चेहरा देखता रहा और बहुत सोचने के बाद बोला, 'अच्छा यदि मैं तुमसे कुछ मांगूं तो क्या तुम मुझे सच में दे सकोगे..?' 'माना की मैं भी कोई रईस नहीं हूं। लेकिन अपने बच्चे की मांग पूरी कर सकूं, इतना तो सामर्थ्य रखता हूं। बता तुझे क्या चाहिए?'

'बाबा मैं पढ़ना चाहता हूं। दूसरे बच्चों की तरह स्कूल जाना चाहता हूं।' 'बस इतनी सी बात? मैं तो समझा जाने क्या मांग लेगा तू मुझ से'। 'यह इतनी सी बात नहीं है बाबा'। केदार ने उदास मन से कहा। 'यदि मैं स्कूल जाने लगा तो दुकान पर काम नहीं कर सकूंगा। फिर तुम्हारा भी कितना नुकसान हो जाएगा, और मैं ऐसा किसी कीमत पर नहीं होने देना चाहता। बाबा ने केदार से कहा, 'तुझे दुकान की चिंता करने की कोई जरूरत नहीं है। तेरे जैसे और भी न जाने कितने केदार होंगे जिन्हें मेरी जरूरत है वह कर लेंगे दुकान का काम, तू तो अपनी पढ़ाई पर ध्यान लगा'।

समय बीतने के साथ 12-13 साल का केदार पढ़-लिखकर इतना बड़ा हो गया कि अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद एक अच्छी कंपनी में अच्छे पद पर जा पहुंचा। आज उसका कद उसके बाबा से ऊंचा हो चुका है और बाबा की कमर झुक चुकी है। फिर एक दिन उसके जीवन में एक लड़की आई जिसका नाम पार्वती था। उसने केदार के व्यवहार के पीछे छिपे उसके सोने जैसे दिल को देखा, परखा, समझा। दोनों में प्रेम हुआ। पार्वती भी केदार के साथ उसी कंपनी में काम करती थी। लड़की के परिवार को यह रिश्ता मंजूर नहीं था क्योंकि केदार एक अनाथ व्यक्ति था। दोनों ने कोर्ट में जाकर शादी कर ली। बाबा को केदार की वजह से कोई परेशानी न हो, इसलिए अब वह अपनी पत्नी के साथ अलग घर में रहने के लिए चला गया था। दोनों बहुत खुश थे। उधर पार्वती की मां को कुछ रिश्तेदारों ने मिलकर केदार और उनकी बेटी के खिलाफ भड़काना प्रारंभ कर दिया। बात इतनी बिगड़ गई कि उन लोगों ने केदार को जान से मारने का मन बना लिया।

इधर केदार को पार्वती ने बताया कि वह बहुत जल्द ही पिता बनने वाला है। अब केदार अपनी पत्नी का खूब ध्यान रख रहा था। एक दिन दोनों अपनी होने वाली संतान के साथ आने वाले जीवन की सुनहरी कल्पना करते हुए अस्पताल से निकल ही रहे थे कि केदार को याद आया, वह गाड़ी की चाबी तो डाक्टर के केबिन में ही भूल आया था। उसने पार्वती को कार के पास जाने के लिए कहा और खुद चाबी लाने अंदर चला गया। कुछ ही देर में जब वो वापस आ रहा था, तो उसने दूर से ही गाड़ी खोलने के लिए चाबी के छल्ले में लगे बटन को दबाया ताकि पार्वती उसे खोलकर उसमें बैठ सके। जैसे ही उसने बटन दबाया, एक जोर का धमाका हुआ और सब खत्म हो गया। केदार को जब होश आया तब तक उसकी दुनिया उजड़ चुकी थी। उसकी आंखों के सामने वह विस्फोट अब भी बार-बार लगातार हो रहा था। उसका मानसिक संतुलन हिल गया था। उसकी समझ में यह बात कभी आई ही नहीं कि ऐसा सच में हुआ है। बाबा और उनके परिवार ने मिलकर पार्वती के अंतिम संस्कार के कर्मकांड किए। तभी किसी ने केदार को बताया कि, 'इस सब के जिम्मेदार पार्वती के परिवार वाले हैं, जो वास्तव में मारना केदार को चाहते थे, लेकिन शिकार खुद उनकी अपनी बेटी हो गई।

केदार की आंखों में ज्वाला भड़क उठी। वह क्रोध से तमतमाता हुआ सीधा पार्वती के घर पहुंचा, जहां खुद उसकी मां शोक सभा में बैठी विलाप कर रही थी और रोते हुए अपनी मरी हुई बेटी की तस्वीर के आगे क्षमा मांग रही थी। केदार ने क्रोध की अग्नि में जलते हुए कहा, 'तूने अपनी सगी बेटी की जान सिर्फ इसलिए ली कि उसने मुझ अनाथ से प्रेम किया था। एक मां होकर तूने दूसरी मां की जान ले ली। यह सुन कर पार्वती की मां के पैरों तले जमीन खिसक गई। तभी पुलिस वहां आ पहुंची और पार्वती की मां के साथ-साथ उसके परिवार के अन्य लोगों को भी गिरफ्तार कर ले गई।

केदार अपनी पत्नी के दुख में पूरी तरह पागल सा हो गया। कभी अपने आप से बातें करता, तो कभी सड़क पर खड़ी किसी भी गाड़ी को देखकर चिल्लाने लगता, लोगों को रोकता फिरता कि उसमें मत बैठना उसमें बम है मर जाओगे। न उसे अब खाने का होश रहा, न पहनने का, न नहाने का, मैले पुराने फटे हाल कपड़े पहने बढ़ी हुई दाढ़ी मूंछों के साथ बिखरे बाल लिए अक्सर वह उसी क्लीनिक के बाहर लोगों को आते-जाते देखता रहता और अपनी अदृश्य पार्वती से घंटों बातें करता रहता। उसकी पार्वती को तो शायद मोक्ष मिल भी गया होगा। लेकिन जीते जी केदार की जिंदगी से शांति हमेशा के लिए खत्म हो चुकी थी जो अब शायद उसकी मृत्यु के बाद ही उसे नसीब होगी।

समय सूचक

व्यक्ति की मुक्ति का काव्यात्मक बोध

जनसत्ता सरोकार

इक्कीसवीं सदी के पच्चीसवें बरस में 13 नवंबर को जयंती पर जब मुक्तिबोध याद किए गए, तब भी उन्हें समझना उतना ही मुश्किल रहा, जितना बीसवीं सदी में। गजानन माधव मुक्तिबोध हिंदी साहित्य को व्यक्ति की मुक्ति का जो बोध देकर गए हैं, वह काल और समय के अनुसार अद्यतन हो रहा है। नए आजाद भारत में शुरू हुई उनकी शाब्दिक अभिव्यक्ति बेमियादी हो चुकी है। उन्हें समझने के लिए पाठक को समय और स्वयं से टकराना होता है।

मुक्तिबोध का नाम लेते ही दिमाग में कौंधती है, उनकी सबसे चर्चित कविता 'अंधेरे में'। कविता का अर्थ जब मानव के अस्तित्व को झकझोरने लगे तो, बगल में मुक्तिबोध खड़े मिलते हैं। 'अंधेरे में' की रचना 1958 में हुई। यह वह समय था, वैसे रचनाकार थे, जब मुठभेड़ करती हुई पृष्ठभूमि से कविता का जन्म होता था। वैसा कारण, जो इतना व्यग्र कर दे कि अभिव्यक्ति समय और शब्द से परे चली जाए। मुक्तिबोध के मन में इस कविता की संरचना पत्रकारिता करते हुए बनी। नागपुर के एंप्रेस मिल के मजदूरों ने 1956 में हड़ताल की थी। जब मिल के मजदूरों पर लाठी व गोलियां चलाई जा रही थीं, उस वक्त मुक्तिबोध वहां बतौर पत्रकार मौजूद थे। इस गोलीकांड का मंथन उनके दिमाग में चलता रहा जो 1958 में 'अंधेरे में' के रूप में पूरा हुआ। हिंदी साहित्य में इस कविता को समझना और लिखना किसी शोध-पत्र को पूरा करने जैसा बन गया। पत्रकार, संपादक, कवि, आलोचक-मुक्तिबोध हर रूप में अपनी पैनी नजर को यथार्थ तक ले जाते हैं। हालांकि हिंदी का एक बड़ा तबका उन पर व्यक्तिवादी होने का भी आरोप लगाता है। 47 साल के अपने लघु जीवनकाल में वे हिंदी साहित्य को वर्तमान से लेकर इतिहास के द्वंद्वों को एक फलक पर लाने की वृहत्तर विधा दे गए।

गजानन माधव मुक्तिबोध

होलू क्या करे

दिविक रमेश

बाल कथा

'मां मैं थक गया हूं'।-होलू ने चलते-चलते मां से कहा। मां बोली-'थोड़ी दूर ही तो और जाना है होलू।' 'पर मां मैं थक गया हूं। मुझसे नहीं चला जा रहा।' होलू ने अपने मुंह पर ढेर सारी परेशानी लाकर कहा। उसने मां की ओर देखा। मां के सिर पर बड़ा-सा गट्ठर था। माथे से पसीना टपक रहा था। चेहरे पर ढेर सारी थकान थी। उसने कहा-'मां अब मैं छोटा बच्चा भी तो नहीं रहा कि कहूं गोदी ले लो। आपके सिर पर यह गट्ठर भी तो कितना बड़ा है।'

मां ने होलू का साहस बढ़ाते हुए कहा, 'कितनी अच्छी बात है न! अब तू बड़ा हो गया। थोड़ी दूर और चल ले बेटे। वहां पहुंच कर मैं तेरे बालों को सहलाऊंगी। तू खूब आराम करना।' होलू को कुछ नहीं सूझ रहा था। करे भी तो क्या करे वह। थोड़ी झुंझलाहट हुई उसे। सोच रहा था, मां के पास तो हर बात का जवाब होता है। जाने ऐसी क्यों होती है मां।

सच बात यह थी कि उसे खुद से ज्यादा मां की फिक्र हो रही थी। उसे एक तरकीब मिल गई। बोला-'मां एक बात बताओ। कोई काम करते-करते बहुत थक जाए तो क्या करे?' इस बार मां ने जवाब दिया। थोड़ा हांफते-हांफते, 'कुछ देर आराम कर लेना चाहिए।'

होलू विजेता की तरह बोला-'मां मैंने कहा न! मैं थक गया हूं। कुछ देर आराम करने दे न?' होलू की मां थोड़ा रुक कर बोली, 'होलू तू फिर उसी बात पर आ गया। समझता क्यों नहीं? कहा न! गांव बस कुछ दूर ही और है। वहां पहुंच कर जितना चाहे आराम करना। वहां सब हमारा इंतजार कर रहे होंगे।' आगे सिर पर रखे गट्ठर की ओर इशारा करते हुए कहा, 'उन तक समय पर सामान नहीं पहुंचा तो वे हमें पैसे नहीं देंगे।' इस बार होलू ने सीधे-सीधे कहा-'मां मुझे तो आप भी बहुत थकी लग रही हो। कितना तो पसीना आ रहा है!' 'अरे नहीं होलू! मैं ठीक हूं।'-मां ने एक हाथ से पसीना पोछते हुए कहा।

होलू ने देखा, मां मुश्किल से चल रही थी। लगा कि उसकी मां ऐसे चल रही थी जैसे उसके पांवों में पत्थर बंधे हों। वह बहुत ही चिंतित हो उठा था। तभी उसकी निगाह कुछ दूर पर खड़े एक घने वृक्ष की ओर गई। वह जोर से चीखा-'ओ चाचा पेड़! हम पहुंचने ही वाले हैं आप तक! क्या आप हमें अपनी छाया में बैठने दोगे?' मां ने होलू को वैसे बोलते सुना तो बोली-'होलू तू यह क्या बोल रहा है। पेड़ भला क्या जवाब देगा! तुझे छाया में बैठना हो तो बैठ जाना।'

होलू मन ही मन खुश हुआ। पर खुशी दिखाई नहीं। उसने फिर पेड़ की ओर देखा। पहले की ही तरह चीख कर बोला-'ओ चाचा पेड़! क्या मेरी मां को भी अपनी छाया में बैठने दोगे? बस थोड़ी देर। हमें समय पर गांव जो पहुंचना है।'

होलू की मां को कुछ अजीब सा लगा। उसने सोचा, 'कहीं होलू को कुछ हो तो नहीं गया है। वह बोली-'होलू पेड़ कोई आदमी है? वह क्या तो हमारी सुनेगा और क्या हमें उत्तर देगा। और फिर उसे क्या ऐतराज होगा। वह तो सबको अपनी छाया में बैठने देता है। सबका ख्याल रखता है।'

'सच मां? तो क्या वह आपको भी बैठने देगा। अपनी छाया में?'-होलू ने तपाक से पूछा।

'क्यों नहीं'?-मां ने पूछने के लहजे में कहा।

'तो मां, मेरे साथ आप भी कुछ देर, बस कुछ देर बैठ जाओगी न? पेड़ की छाया में?' 'ठीक है।'-मां ने कहा।

अब दोनों पेड़ के पास पहुंच गए थे। मां ने सिर से गट्ठर नीचे उतारा। छाया में बैठी। पास ही होलू भी बैठा था। देख रहा था। मां की थकान उतरते हुए। पसीना सूखते हुए। चेहरे पर भी ताजगी लौटते हुए।

कुछ ही देर बाद मां ने कहा-'होलू अब तो तेरी थकान उतर गई होगी। चलें?'

'हां मां! चलो!'-होलू ने फुर्ती से उठते हुए खुश होकर

होलू मन ही मन खुश हुआ। पर खुशी दिखाई नहीं। उसने फिर पेड़ की ओर देखा। पहले की ही तरह चीख कर बोला-'ओ चाचा पेड़! क्या मेरी मां को भी अपनी छाया में बैठने दोगे? बस थोड़ी देर। हमें समय पर गांव जो पहुंचना है।' होलू की मां को कुछ अजीब सा लगा। उसने सोचा, 'कहीं होलू को कुछ हो तो नहीं गया है।

कहा।

होलू सोच रहा था। सच बताए कि न बताए। थोड़ा चुप-चुप था। उसे चुप देख कर मां ने पूछ लिया-'होलू क्या तेरी थकान उतरी नहीं?'

होलू ने सोचा। लगा कि मां को सच बता दे। बोला-'मां एक बात सच-सच बताऊं। मैं तो थका ही नहीं था।'

'क्या? पर तू तो बार-बार कह रहा था। यही कि तू थक गया है।' मां ने थोड़े बनावटी गुस्से से कहा। कुछ-कुछ आश्चर्य से भी।

'हां मां! पर मैं इतना नहीं थका था। चल सकता था। अच्छा बताओ। पसीने किसे आ रहे थे?' होलू ने थोड़ा गंभीर होकर पूछा। 'मुझे!'-मां ने कहा। 'पैरों में पत्थर से किसके पांव में बंध गए थे?'-होलू ने दूसरा सवाल दागा। 'मेरे!'-मां ने जवाब दिया। किस के सिर पर भारी बोझ का गट्ठर रखा हुआ था?-होलू ने अगला सवाल किया। 'मेरे!'-मां ने बताया। 'तो थका कौन था?'-आंखें थोड़ा मटकाते हुए होलू ने पूछा। 'मैं!' मां ने कहा। 'तो आराम किसे चाहिए था?'-होलू ने चिंता दिखाते हुए कहा। 'मुझे!' मां ने थोड़ी हंसी दबाते हुए कहा। होलू हंसा। मां की आंखों में ढेर सारा प्यार उतर आया था। गीली भी हो आई थीं। बस इतना बोल पाई- 'होलू, तू इतना प्यारा क्यों है?'

'क्योंकि मेरी मां आप हैं!'-होलू ने मां को पकड़ते हुए कहा। और पूछा-'आप मेरे बाल सहलाओगी न?' गांव आ गया था।

मेहमान का परिधान

जनसत्ता सरोकार

वसुधा बचपन की सहेली की बेटी के शादी का आमंत्रण-पत्र पाकर बहुत खुश थी। करीबी दोस्त की बेटी, अपनी बेटी जैसी ही होती है। वसुधा की बेटी सुकृति स्कूल से लौटी तो उसने मेज पर पड़ा शादी का आमंत्रण-पत्र देखा। सुकृति को देख कर वसुधा ने कहा कि स्मृति मौसी की बेटी की शादी में हम सब चलेंगे। सुकृति ने आमंत्रण-पत्र को गौर से पढ़ते हुए कहा कि मां इस शादी में जाना तो बहुत महंगा पड़ेगा। इसके लिए पापा को कहीं अपने भविष्यनिधि खाते से पैसे न निकालने पड़ जाएं।

वसुधा ने चौंक कर पूछा, क्यों भई? सुकृति ने बताया कि आमंत्रण-पत्र में साफ-साफ लिखा है कि सभी कार्यक्रमों के लिए अलग-अलग तरह के परिधान पहन कर आना है। मेहंदी के लिए हरे रंग का सूट पहनना है तो हल्दी के लिए पीले रंग का लहंगा। शादी के वक्त लाल रंग का लहंगा पहनना है तो वर-वधू के स्वागत समारोह में पश्चिमी शैली का गुलाबी रंग का गाउन पहनना है। इसी तरह पुरुष मेहमान के परिधानों का भी निर्धारण किया गया है। इसका मतलब है कि मेरे, आपके और पापा के, कुल मिलाकर 12 जोड़ी नए कपड़े हमें

मार्गदर्शन

खरीदने पड़ेंगे। यह सब सुन वसुधा सोच में पड़ गई। शादी में जाने का उसका सारा उत्साह ही ठंडा हो गया। उसने सोचा था कि अपने बजट से समझौता कर सहेली की बिटिया को शादी के तोहफे में सोने की अंगूठी देगी। लेकिन इतने सारे महंगे कपड़े पहनने के बाद पैसे कहां से बचेंगे।

इन दिनों मेहमान और मेजबान के रिश्तों पर दिखावे का बाजार हावी हो चुका है। अब मेजबान की मांग होती है कि उसका मेहमान, उसके कार्यक्रम में क्या पहन कर आए और क्या नहीं पहन कर आए। शादी-ब्याह जैसी चीजों में लोग पहले भी अपने बजट से समझौता करते थे। कभी खेत-जमीन बेच कर तो कभी साहूकार से कर्ज लेकर शादी, मुंडन और मृत्यु-भोज जैसे संस्कार संपन्न किए जाते थे। धीरे-धीरे सामाजिक चेतना आई और इन चीजों में कर्ज लेकर खर्च को सामाजिक कुरीति माना गया।

अब जब शादी में दहेज जैसी कुरीतियों का दबाव कम हो गया है, तो दूसरे तरह की आधुनिक कुरीतियों ने घेर लिया है। कोई अपने घर के समारोह में कितने पैसे खर्च करता है, यह उसका निजी चयन है। लेकिन, आप मेहमानों के लिए पूर्व चयन कैसे कर सकते हैं कि वह क्या पहन कर आपके समारोह में आए। ऐसी चीजों की शुरुआत उच्च तबके से होती है, जिनके पास खूब पैसे होते हैं। धीरे-धीरे इस तरह के दिखावे को मध्य-वर्ग भी अपनी जरूरत बना लेता है। मेजबान तो पैसे की फिजूलखर्ची अपनी खुशी के लिए कर लेता है, लेकिन उन मेहमानों के लिए ऐसे समारोह में शामिल होना मुसीबत बन जाता है, जिनकी आय के साधन सीमित हैं, या जिनका बजट पूर्व निर्धारित खर्चों से बंधा है। मेहमान को तो अतिथि कहा जाता था, जिसके आने की तारीख तक तय न हो। लेकिन अब मेहमानों की तारीख ही नहीं कपड़े भी मेजबान के द्वारा तय किए जा रहे हैं। सब कुछ एकरंगा करने की जिद जीवन के रंग खो रही है।

तोत्तो चानः खिड़की पर बैठी लड़की

जनसत्ता सरोकार

तोत्तो चान आम बच्चों से थोड़ी अलग थी। उसका ध्यान किसी एक चीज पर केंद्रित नहीं रह पाता था। वह स्कूल में खिड़की पर बैठ कर राहगीरों से बात करने लगती थी। इन सब वजहों से उसे स्कूल से निकाल दिया गया। लेकिन तोत्तो चान की मां ने अपनी बेटी का पूरा साथ दिया। मां ने अपनी बेटी के लिए एक ऐसा स्कूल खोज लिया जहां हर कुछ उतना ही अलग और अद्भुत था, जैसी अन्य बच्चों के बीच में तोत्तो चान थी। स्कूल का पहला दिन था और तोत्तो चान के नए स्कूल के प्रधानाध्यपाक को चार घंटे तक उसकी बातें सुननी पड़ी। उन्होंने तोत्तो चान की बातें ऐसे सुनी, जैसे इतनी अद्भुत बातें कभी सुनी ही नहीं हो।

इस नए स्कूल में तोत्तो चान पेड़ पर चढ़ सकती है तो उसका दोस्त क्यों नहीं चढ़ सकता है? अपने पोलियो के शिकार दोस्त को वह पेड़ पर चढ़ाने की कोशिश करती है। आम स्कूलों की तरह ऐसा करने पर वह सजा नहीं पाती है। हां, वह अपने दोस्त की शारीरिक स्थिति को अब और बेहतर तरीके से समझ सकती है। स्कूल के प्रिंसिपल बागवानी करने वाले माली को भी बच्चों के शिक्षक की तरह ही देखते हैं। स्कूल में बच्चों के लिए दोपहर का दो तरह का भोजन बनता था-कुछ समुद्र से कुछ पहाड़ से।

तोत्तो चान, असल जिंदगी की वह अमर किरदार

अमर किरदार

मूल रूप से जापानी भाषा में लिखी इस किताब का अंग्रेजी अनुवाद डोरोथी ब्रिटन ने 'तोत्तो चान द लिटिल गर्ल एट द विंडो' के नाम से किया। डोरोथी के सहज अनुवाद ने इस किताब को दुनिया भर में लोकप्रिय बना दिया।

है जो मुक्त शिक्षा व्यवस्था की प्रतिनिधि चेहरा बन चुकी है। एक स्कूल और उसका माहौल क्या ऐसा हो सकता है कि वह स्कूल ही दुनिया भर के स्कूलों के लिए पाठ्यक्रम सरीखा हो जाए। जापान में तोत्तो चान को पढ़ाने वाला स्कूल तोमोए गाकुएन ने ऐसा ही कर दिखाया। स्कूल की स्थापना की थी सोसाकू कोबायाशी ने। वे स्कूल के प्रधानाध्यापक भी थे। कोबायाशी द्वारा अपनाई गई शिक्षा पद्धति ने स्कूल की छात्रा तेत्सुको कुरोयानागी को इतना प्रभावित किया कि उसने इस पर एक आत्मकथात्मक किताब लिख डाली। 'मादोगीवा नो तोत्तो-चान' के नाम से 1981 में प्रकाशित हुई इस किताब ने सीखने-सिखाने की संवेदनशील दुनिया को काफी प्रभावित किया।

मूल रूप से जापानी भाषा में लिखी इस किताब का अंग्रेजी अनुवाद डोरोथी ब्रिटन ने 'तोत्तो चान द लिटिल गर्ल एट द विंडो' के नाम से किया। डोरोथी के सहज अनुवाद ने इस किताब को दुनिया भर में लोकप्रिय बना दिया।

तोत्तो चान के जरिए कुरोयानागी पाठकों को ऐसे स्कूल में ले जाती है, जहां बच्चे की आंखों से लेकर दिमाग तक पर किसी भी तरह के अनुशासन का पहरा नहीं लगाया जाता। तोत्तो चान की बालसुलभ हरकतें बड़ों की दुनिया को बड़ा संदेश देती हैं कि बच्चों की स्वाभाविक दुनिया में किसी तरह की बंदिशें नहीं लगानी चाहिए। अपने सोचे को करने की आजादी ही बच्चों को आत्मनिर्भर, संवेदनशील नागरिक बनाती है। आज यह किताब दुनिया भर के भाषाओं में अनूदित हो चुकी है। खास कर स्कूली शिक्षा से जुड़े लोगों और अभिभावकों के लिए तो इसे अनिवार्य माना जाता है।

- कानपुर के जीएसवीएम मेडिकल कालेज से डा. शाहीन की बर्खास्तगी के कुछ समय बाद तीन और डाक्टर बर्खास्त किए गए थे
- जीएसवीएम मेडिकल कालेज के हफीजुल रहमान, हामिद अंसारी व निसार अहमद भी लंबे समय तक कालेज से रहे थे अनुपस्थित

दैनिक जागरण 8
नई दिल्ली, 16 नवंबर, 2025
www.jagran.com

श्रीनगर के नौगाम पुलिस स्टेशन में हुए धमाके को गृह मंत्रालय ने बताया हादसा

विस्फोट में जांच अधिकारी समेत नौ की हुई मृत्यु, 32 घायलों में 24 पुलिसकर्मी

जागरण न्यूज नेटवर्क, श्रीनगर: फरीदाबाद से सफेदपोश आतंकी नेटवर्क से जब्त अमोनियम नाइट्रेट की जांच के दौरान शुक्रवार देर रात श्रीनगर के नौगाम पुलिस स्टेशन में हुए विस्फोट को केंद्रीय गृह मंत्रालय ने एक हादसा बताया है। जम्मू-कश्मीर के पुलिस प्रमुख नलिन प्रभात और केंद्रीय गृह मंत्रालय के संयुक्त सचिव प्रशांत लोखंडे ने अलग-अलग बयान में इसमें किसी साजिश या आतंकी हमले से इन्कार किया है। विस्फोट में नायब तहसीलदार, जांच अधिकारी और एफएसएल टीम के सदस्यों समेत नौ लोगों की मौत हो गई और 32 अन्य घायल हो गए। घायलों में 24 पुलिसकर्मी शामिल हैं। इनमें से तीन की हालत नाजुक है।

विस्फोट शुक्रवार रात 11.20 बजे हुआ जब फोरेंसिक टीम व पुलिस अधिकारी विस्फोटक की जांच कर रहे थे। धमाका इतना जोरदार था कि चपेट में कुछ लोगों के शवों के अंग 50 से 80 मीटर दूर जाकर गिरे। साथ ही धमाके से पुलिस स्टेशन की पार्किंग में खड़ी गाड़ियों में आग लग गई। शनिवार सुबह एफएसएल की टीम ने धमाके के संदर्भ में वहां से आवश्यक सुबूत जमा किए। वहीं उपराज्यपाल मनोज सिन्हा ने भी हादसे की जांच के आदेश दिए हैं। धमाके में जान गंवाने वालों के स्वजनों को मुख्यमंत्री राहत कोष से 10 लाख व घायलों को एक लाख रुपए की सहायता दिए जाने की घोषणा राज्य सरकार ने की है।

मृतकों में पुलिस की विशेष जांच एजेंसी का एक अधिकारी, एक नायब तहसीलदार, अपराध शाखा के दो फोटोग्राफर, तीन एफएसएल कर्मी, एक नबंरदार और एक दर्जी शामिल हैं। गृह मंत्रालय की ओर से जारी बयान में बताया गया है कि फरीदाबाद से बरामद विस्फोटक के कुछ हिस्से को जांच के लिए नौगाम पुलिस स्टेशन में लाया गया था। टीमें दो दिन से विस्फोटक की जांच कर रही थी और पूरी सतर्कता बरती जा रही थी। यह धमाका दिल्ली विस्फोट में लिप्त जैश-ए-मोहम्मद और अंसार गजवात-उल-हिंद के पकड़े गए आतंकियों के गिरोह से फरीदाबाद में बरामद अमोनियम नाइट्रेट में विस्फोट के कारण हुआ।

नौगाम थाने में शुक्रवार रात धमाके के बाद लगी आग को बुझाता बचाव दल ● वीडियो ग्रैब

इसी थाने ने पोस्टर से जांच को आरंभ किया था : फरीदाबाद में विस्फोटक की बरामदगी और दिल्ली विस्फोट में लिप्त जैश-ए-मोहम्मद और अंसार गजवात-उल-हिंद के सफेदपोश आतंकियों का पर्दाफाश करने में नौगाम पुलिस स्टेशन की मुख्य भूमिका है। नौगाम क्षेत्र में लगे जैश के पोस्टर से जांच शुरू हुई थी और यह जांच राजधानी दिल्ली, हरियाणा और उत्तरप्रदेश सहित देश के विभिन्न शहरों तक जा पहुंची और कई डाक्टरों और उनकी टीम को हिरासत में लिया गया। इस माड्यूल के तार तुर्किए, पाकिस्तान व अफगानिस्तान से जुड़े हैं। इसके सदस्य डा मुजम्मिल गनई की निशानदेही पर फरीदाबाद स्थित ठिकाने से 360 किलोग्राम और 2563 किलोग्राम अमोनियम नाइट्रेट बरामद हुआ था। विस्फोटक को फरीदाबाद से एक टाटा पिकअप ट्रक में छोटे-छोटे बैगों में भरकर लाया गया था। इसके एक हिस्से को ही थाने में रखा गया था। 19 अक्टूबर को नौगाम पुलिस स्टेशन में केस दर्ज हुआ था। इसलिए फरीदाबाद से बरामद विस्फोटक उस केस की प्रापर्टी थे। लिहाजा, उसे जब्त कर लाया गया था।

हादसे के कारणों की हो रही जांच : गृह मंत्रालय के संयुक्त सचिव प्रशांत लोखंडे ने बताया कि हादसे के कारणों की जांच हो रही है। बरामद विस्फोटक को खुले में रखा गया था और तय नियमों का पालन किया जा रहा है। नई दिल्ली में एक बयान पढ़ते हुए उन्होंने बताया कि क्योंकि काफी मात्रा में विस्फोटक मिले थे, ऐसे में लगातार दो दिन से उनकी फोरेंसिक जांच की जा रही थी। इसमें निरंतर सतर्कता भी बरती जा रही थी, लेकिन यह अनहोनी हो गई। उन्होंने इसे दुर्भाग्यपूर्ण बताया।

लापरवाही बरतने के लग रहे आरोप दिल्ली की तर्ज पर ही श्रीनगर में धमाका हुआ। दिल्ली में विस्फोट के बाद आसपास के वाहनों में आग लगी थी। कुछ ऐसा ही श्रीनगर धमाके के बाद हुआ। धमाके पर बड़ा सवाल उठता है कि विस्फोटक को थाने में क्यों रखा गया। जबकि नौगाम थाने के आसपास पूरा आबादी वाला एरिया है।

नौगाम धमाका चेतावनी : कांग्रेस

नई दिल्ली, प्रेट्र: कांग्रेस ने जम्मू-कश्मीर के नौगाम थाने में शुक्रवार को हुए ब्लास्ट पर गंभीर चिंता जताई और कहा कि देश में बढ़ते आतंकवाद के खतरे पर चर्चा के लिए तत्काल सर्वदलीय बैठक बुलाने की मांग की है। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने शनिवार को कहा कि श्रीनगर में हुआ धमाका केंद्र सरकार के लिए चेतावनी है और सरकार को खुफिया तंत्र और आतंकवाद रोधी मेकेनिज्म को मजबूत करने की जरूरत है। खरगे ने कहा कि सरकार अपनी जवाबदेही से बच नहीं सकती है। एक्स पर एक पोस्ट में खरगे ने दुर्घटनावश हुए धमाके में मारे गए लोगों को श्रद्धांजलि अर्पित की और पीड़ित परिवारों के प्रति संवेदना जताई। उन्होंने कहा कि ये घटना दिल्ली कार ब्लास्ट आतंकी हमले के कुछ दिनों के अंदर हुई है, जो केंद्र के लिए सचेत होने का संदेश है। पार्टी प्रमुख ने कहा कि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस आतंकवाद के खिलाफ राष्ट्र के साथ खड़ी है।

थाने में बैग सिलने गया था दर्जी शफी

राज्य, जागरण ● श्रीनगर: नौगाम पुलिस स्टेशन में शुक्रवार रात हुए जोरदार विस्फोट ने कई घरों में हमेशा के लिए अंधेरा कर दिया है। इस पुलिस स्टेशन में आतंकी हमले में सुबूतों के लिए बैग सिलाई करने गए दर्जी मोहम्मद शफी परे को क्या पता था कि वह घर लौटकर नहीं आएगा। धमाके में उसके शरीर के चिथड़े तक उड़ गए। वह परिवार में एकमात्र कमाने वाले थे।

नौगाम पुलिस स्टेशन से करीब 500 मीटर दूर रहने वाले वाहिद जिलानी ने बताया कि धमाके के बाद क्षेत्र में भूकंप जैसा कंपन का अहसास हुआ। हम सब सहम गए थे। बाहर आकर देखा तो थाना जल रहा है। चारों तरफ आग के साथ धुएं के गुब्बार और मांस के लोथड़ों के जलने की बू आ रही थी। मोहल्ले से बड़ी संख्या में लोग थाने की तरफ भागे। वहां किसी का हाथ बिखरा पड़ा था तो किसी के पांव। दर्जी मोहम्मद परे भी इनमें से एक थे। उनके दोनों पांव उड़ चुके थे।

बरामद अमोनियम नाइट्रेट के विस्फोट के लिए जम्मू-कश्मीर पुलिस जवाबदेह

नीलू रंजन ● जागरण

- उत्तर प्रदेश के पूर्व डीजीपी ने कहा, फरीदाबाद से श्रीनगर ले जाना एसओपी का उल्लंघन
- एनएसजी के पूर्व डीजी बोले-बम निरोधक दस्ते की मदद के बिना सैंपल लेना घोर लापरवाही

नई दिल्ली: तीन पोस्टरों से शुरू हुई जांच को करीब 3,000 किलोग्राम विस्फोटकों की बरामदगी और एक दर्जन से अधिक आतंकियों की गिरफ्तारी तक पहुंचाकर जांच की मिसाल कायम करने वाली जम्मू-कश्मीर पुलिस की कई स्तरों पर लापरवाही भारी पड़ गई। बरामद अमोनियम नाइट्रेट और डेटोनेटर के सैंपल लेने के दौरान हुए धमाके में एक दर्जन लोगों की जान चली गई और दो दर्जन से अधिक घायल हो गए। उत्तर प्रदेश के पूर्व डीजीपी विक्रम सिंह इसे क्राइम एविडेंस के रूप में विस्फोटकों को संभालने के लिए तैयार एसओपी का उल्लंघन बताते हैं, वहीं विस्फोटकों से जुड़े मामलों की नोडल एजेंसी एनएसजी के एक पूर्व महानिदेशक बम निरोधक विशेषज्ञ की गैरमौजूदगी में फारेंसिक एक्सपर्ट द्वारा सैंपल लिए जाने को बड़ी चूक मानते हैं।

एनएसजी के पूर्व प्रमुख के अनुसार, अमोनियम नाइट्रेट में विस्फोट अपने आप नहीं हो सकता है। उसके साथ डेटोनेटर में स्पार्क जरूरी होता है। फरीदाबाद में 360 किलो अमोनियम नाइट्रेट के साथ-साथ 20 डेटोनेटर और 20 टाइमर भी मिले थे और उन्हें सुबूत के तौर पर थाना परिसर में रखा गया था। उनके अनुसार, अमोनियम नाइट्रेट का सैंपल तो आसानी से लिया जा सकता है लेकिन डेटोनेटर का सैंपल काफी सावधानी से लेना पड़ता है। सामान्य तौर पर डेटोनेटर में बैटरी के इस्तेमाल से स्पार्क कर विस्फोट किया जाता है, लेकिन कई बार डेटोनेटर में ज्यादा तेज कंपन और तेज झटके के कारण भी विस्फोट हो सकता है। यदि डेटोनेटर को घर पर ही तैयार किया गया हो तो इसकी आशंका और बढ़ जाती है । विक्रम सिंह विस्फोटकों को श्रीनगर ले जाने के जम्मू-कश्मीर पुलिस के फैसले पर ही सवाल उठाते हैं। इसे एसओपी का उल्लंघन और लापरवाही बताते हुए कहा, क्राइम एविडेंस के रूप में आधा किलो अमोनियम नाइट्रेट ले जाना काफी था। बाकी विस्फोटकों का वीडियो कोर्ट के सामने पेश किया जा सकता था। फरीदाबाद से श्रीनगर तक विस्फोटकों को ले जाने वाली टीम भी लगातार खतरे में रही होंगी।

यूनिवर्सिटी से एक साथ गायब हो जाते थे तीनों आतंकी डाक्टर

दीपक पांडेय ● जागरण

फरीदाबाद के धौज स्थित अल फलाह यूनिवर्सिटी ● जागरण आर्काइव

फरीदाबाद: अल फलाह यूनिवर्सिटी प्रबंधन न केवल आतंकी डाक्टरों की नियुक्ति को लेकर बल्कि उन्हें लंबी छुट्टी देने में भी पूरी तरह से मेहरबान रहा। दिल्ली ब्लास्ट मामले में शामिल डा. उमर नबी बट, डा. मुजम्मिल और डा. शाहीन लंबी छुट्टी पर एक साथ यूनिवर्सिटी से गायब रहे। फिर वापस आकर उन्होंने ड्यूटी भी ज्वाइन कर ली। यूनिवर्सिटी सूत्रों के अनुसार तीनों के इतनी लंबी छुट्टी से वापस आने के बाद भी किसी को नोटिस देकर कोई पूछताछ नहीं की गई।

अल फलाह यूनिवर्सिटी में कश्मीरी डाक्टरों की संख्या 35 के आसपास है। प्रबंधन की ओर से कश्मीर से आने वाले डाक्टरों की नियुक्ति प्रक्रिया के साथ अन्य तरह की भी विशेष सुविधाएं दी गई हैं। खासकर डा.उमर नबी बट, डा.शाहिन और डा.मुजम्मिल की तो प्रबंधन में सीधी पैठ थी। इनकी पैठ का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि कुछ ही समय में महिला आतंकी डा.शाहीन को सहायक प्रोफेसर के पद से प्रमोशन देकर फार्मा विभाग का एचओडी बना दिया गया, जबकि उससे अनुभवी कई डाक्टरों को दरकिनार किया गया। यह तीनों ही एक साथ तीन से चार माह के लिए गायब होते थे। इसके लिए प्रबंधन को कोई वजह भी नहीं बताई जाती थी। अब जांच एजेंसियां इस बात का सुराग खोजने में जुट गई हैं कि यूनिवर्सिटी से एक साथ गायब होने के बाद तीनों कहां कहां गए। वहीं कितने लोगों से इन्होंने संपर्क किया।

यूनिवर्सिटी के एक छात्र ने नाम न छापने की शर्त पर बताया कि डा.उमर काफी कट्टर विचारधारा का था। उमर छात्रों के अपनी सहपाठी छात्रा के साथ भी आपस में अधिक बात करने पर एतराज जता देता था। इसके साथ वह छात्रों को छात्राओं के साथ बैठा देख लेता तो टोक देता था।

पूछताछ के बाद लौटे छात्र ने रूममेट से बातचीत भी की बंद: दो दिन के बाद लौटे एक छात्र ने अपने रूममेट से बातचीत बंद कर दी है। यहां तक अपने रूममेट कोई दूसरा कमरा देखने के लिए कह दिया है। एक छात्र के अनुसार तीनों आतंकी डाक्टर से अगर किसी ने एक बार भी किसी भी विषय को लेकर बातचीत की है तो दिल्ली पुलिस उन्हें भी पूछताछ के लिए ले गई है। शनिवार को भी यूपी एसटीएफ की टीम फतेहपुर तगा स्थित इमाम के मकान पर पहुंची, जहां पर मुजम्मिल ने किराए पर कमरा लेकर अमोनियम नाइट्रेट रखा हुआ था। टीम ने आसपास के लोगों से इमाम व मुजम्मिल को लेकर पूछताछ की।

हमले से पहले आतंकी उमर ने की थी मुजफ्फर से बात

राकेश कुमार सिंह ● जागरण

नई दिल्ली: लाल किला के बाहर पाकिस्तानी आतंकी संगठन जैश-ए-मोहम्मद के आतंकी डा. उमर नबी बट द्वारा धमाका करने के मामले की जांच कर रही जांच एजेंसियों को एक और नई जानकारी मिली है। सूत्रों के मुताबिक, 10 नवंबर की दोपहर धमाके से कुछ देर पहले उमर ने अपने एक मोबाइल को सुनहरी मस्जिद की पार्किंग में आन कर फरार मास्टरमाइंड डा. मुजफ्फर से लंबी बातचीत की थी। उससे उमर ने क्या बातचीत की थी, यह जानकारी जांच एजेंसी को नहीं मिल पाई है, माना जा रहा है कि मुजफ्फर से निर्देश मिलने पर उमर ने लाल किला के बाहर धमाका किया हो। जांच एजेंसी मुजफ्फर को इस माड्यूल का मास्टरमाइंड मान रही है। वह दुबई में रहता है, लेकिन आतंकी वारदात के बाद से वह फरार हो चुका है। जम्मू-कश्मीर में पुलवामा के काजीगुंड गांव के रहने वाले मुजफ्फर के अफगानिस्तान में होने की जानकारी मिली है। जांच एजेंसियों को उम्मीद है कि मुजफ्फर के पकड़े जाने पर इस माड्यूल के पूरे नेटवर्क का पता लग सकेगा।

सूत्रों के मुताबिक, उमर के पास दो मोबाइल नंबर होने की जानकारी जांच एजेंसियों को मिली थी। एक सीसीटीवी फुटेज से इसकी पुष्टि भी हुई है। दोनों नंबर 30 अक्टूबर की रात से बंद हैं, लेकिन मुजम्मिल के पकड़े जाने के बाद उमर ने इन्हीं दो में से एक मोबाइल सुनहरी मस्जिद की पार्किंग में कुछ देर के लिए चलाया था। सूत्र बताते हैं कि इस माड्यूल के सभी आतंकी दो टेलीग्राम ग्रुप में जुड़े थे, जिसमें कट्टरपंथी सामग्री मिलती थी। ये आतंकी माड्यूल डेड ड्राप ईमेल इस्तेमाल करते थे। इसमें ईमेल में संदेश लिखकर ड्राफ्ट में छोड़ देते थे, ईमेल की आइडी व पासवर्ड सभी सदस्यों के पास होता था। इससे वे ईमेल को खोलकर ड्राफ्ट में चेक करते थे। इंटेलीजेंस मुजफ्फर के खिलाफ रेड कार्नर नोटिस जारी करने की तैयारी में है। उसे इंटर स्टेट ह्वाइट कालर' टेरर माड्यूल का अहम सदस्य है। सहारनपुर से पकड़े गए डा. आदिल का बड़ा भाई है। फरीदाबाद-सहारनपुर माड्यूल के आठ से अधिक सदस्यों को एनआइए, जम्मू-कश्मीर, स्पेशल सेल, हरियाणा व यूपी पुलिस गिरफ्तार कर चुकी है।

पता चला है कि मुजफ्फर अगस्त में दुबई गया था। अब उसके अफगानिस्तान भाग जाने की जानकारी मिली है। मुजफ्फर फरीदाबाद-सहारनपुर माड्यूल और पाकिस्तानी हैंडलर्स के बीच कड़ी का काम कर रहा था। उसने ही जैश के हैंडलर से इन सभी को मिलाकर हमले के लिए साजिश रची थी।

नूंह की हिदायत कालोनी का वह मकान जहां पर आतंकी उमर किराये पर रहा था ● जागरण

तुर्किये में जैश आतंकी उकाशा से हुई थी मुलाकात

मुजफ्फर की जैश के आतंकी व कश्मीरी युवक उकाशा से तुर्किये में मुलाकात हुई थी, जो जैश के नेटवर्क को देखता है। उकाशा के भी अफगानिस्तान में होने की आशंका है। सूत्रों के मुताबिक, उमर, मुजफ्फर और डा मुजम्मिल पहले भी तुर्किये जा चुके थे। वहीं पर इनकी मुलाकात हुई थी। वहीं पर फंडिंग से लेकर आपरेशन का रूट, हमले की प्लानिंग को फाइनल किया था। भाई आदिल की गिरफ्तारी के बाद मुजफ्फर अफगानिस्तान भाग गया। उकाशा ने ही आदिल, उमर, मुजम्मिल और मौलवी इरफान की मुलाकात करवाई थी।

आतंकियों ने एक पैकेट में रसायन मिला पहले से कर रखी थी धमाके की तैयारी!

राज्य ब्यूरो, जागरण ● श्रीनगर: फरीदाबाद से आतंकी डा. मुजम्मिल की निशानदेही पर बरामद अमोनियम नाइट्रेट के एक सीलबंद पैकेट को क्या पहले से ही धमाके के लिए तैयार किया गया था। सुरक्षा एजेंसियां अब इस बिंदु पर भी जांच कर रही है। बताया जा रहा है कि ऐसे ही एक पैकेट को खोलने के दौरान धमाका हुआ और पूरा पुलिस स्टेशन ही नष्ट हो गया।

पुलिस भले ही पूरी सतर्कता बरतने के दावे करे पर यह तय है कि जांच के दौरान अति उत्साह या लापरवाही के कारण कुछ चूक हुई हैं। विशेषज्ञ भी इसकी ओर इशारा कर रहे हैं। सबसे अधिक सवाल इस बात पर उठ रहा है कि पूरा अमोनियम नाइट्रेट श्रीनगर क्यों लाया गया? कहा जा रहा कि इतनी बड़ी मात्रा में विस्फोटक एक थाने में क्यों रखा गया। इसकी सुरक्षा के लिए जो संसाधन चाहिए, वह उक्त थाने में नहीं थे।

शनिवार को एनआइए, सीआरपीएफ, जम्मू-कश्मीर पुलिस की एफएसएल और राज्य जांच एजेंसी की टीम ने भी मौके पर जाकर स्थिति का जायजा लिया और घटनास्थल से कुछ नमूने जमा किए हैं। धमाके में आतंकी कनेक्शन की भी आशंका जताई गई लेकिन इसे पुलिस के साथ गृह मंत्रालय ने भी नकार दिया है।

सूत्रों ने बताया कि तीन टन के करीब अमोनियम नाइट्रेट व अन्य विस्फोटक व्हाइट कालर टेरर माड्यूल से बरामद किए हैं। डा. मुजम्मिल की निशानदेही पर फरीदाबाद में बरामद अमोनियम नाइट्रेट व अन्य विस्फोटक पिकअप वैन में गत सोमवार व मंगलवार को नौगाम पुलिस स्टेशन में लाए गए थे। इनकी पूरी प्रकृति का पता लगाने और अदालत में पेश किए जाने वाले साक्ष्य के तौर पर इनके नमूने लिए जा रहे थे। विस्फोटक अलग-अलग पैकेटों में बंद था। प्रत्येक पैकेट को खोल उससे नमूना लेकर संबंधित अधिकारियों व गवाहों की मौजूदगी में दोबारा सील किया जा रहा था। यह प्रक्रिया गुरुवार से जारी थी। करीब छह-सात पैकेट बचे थे,जिनके नमूने शुक्रवार रात को लिए गए।

- फरीदाबाद से जम्मू-कश्मीर लाया विस्फोटक अलग-अलग पैकेटों में बंद था
- गुरुवार से जारी थी विस्फोटक के पैकेटों से सैंपल लेने की प्रक्रिया

डीजी ने नौगाम पुलिस स्टेशन का जायजा लिया

पुलिस महानिदेशक नलिन प्रभात, एडीजीपी सीआरपीएफ व अन्य सुरक्षा एजेंसियों के वरिष्ठ अधिकारियों ने भी नौगाम पुलिस स्टेशन का मौके पर जायजा लिया। उन्होंने नुकसान का आकलन किया। एनआइए, पुलिस की एसआइए, एफएसएल,सीआइके व अन्य एजेंसियों के विशेषज्ञों ने भी मौके पर पहुंच कर जांच के लिए अपनी आवश्यकतानुसार कुछ नमूनों को जमा किया है। नौगाम पुलिस स्टेशन और आसपास क्षेत्र को पुलिस ने घेर रखा है। नौगाम स्टेशन में आम लोगों की आवाजाही को पूरी तरह बंद कर दिया गया है।

एक अधिकारी ने आशंका जताई कि संभवतः एक पैकेट में केवल अमोनियम नाइट्रेट नहीं रहा होगा और उसे आतंकियों ने तेल मिलाकर या अन्य कोई रसायन जोड़कर आईईडी के लिए तैयार कर रखा हो। हो सकता है कि उक्त पैकेट को जैसे ही खोला गया और धमाका हो गया।

रात को सैंपलिंग की क्या जरूरत थी : एक सेवानिवृत्त पुलिस अधिकारी ने धमाके को घोर लापरवाही बताते हुए कहा कि जिस तरह से लोग पूछ रहे हैं कि रात को सैंपलिंग की क्या जरूरत थी, जायज है। यह कई तरह की शंकाओं को जन्म देता है। यह सही है कि आप किसी भी समय बरामद सामान के नमूने ले सकते हैं, लेकिन यह काम तो आपको पहले ही दिन करना चाहिए था। इसे आप मौके पर फरीदाबाद में भी कर सकते थे। नमूने लेने में देरी पर आगे चलकर आपको अदालत में भी जवाब देना पड़ेगा। अगर यह धमाका रास्ते में कहीं हो जाता, या वहीं फरीदाबाद में होता तो आप नुकसान का जायजा लगा सकते हैं। क्या नौगाम पुलिस स्टेशन में इतनी बड़ी मात्रा में विस्फोटक पदार्थ को सुरक्षित रखने की जगह और आवश्यक उपकरण हैं। रात को विस्फोटकों को हैंडल करने से बचा जाता है। अगर बात करें कि अमोनियम नाइट्रेट की तो उसमें धमाके के लिए जो परिस्थितियां होनी चाहिए, वह प्रथम दृष्टया इस मामले में नजर नहीं आती हैं, इसलिए यह कहा जा सकता है कि जो अमोनियम नाइट्रेट के जो पैकेट या बाक्स बरामद किए हैं,उनमें से एक को आतंकियों ने धमाके के लिए तैयार कर रखा होगा।

नूंह में किराये के घर में दस दिन तक छिपा रहा आतंकी उमर

जागरण संवाददाता नूंह: दिल्ली बम धमाके में शामिल आतंकी उमर मुजम्मिल की गिरफ्तारी के बाद से 10 दिन तक नूंह की हिदायत कालोनी में किराये पर कमरा लेकर छिपा था। यह कमरा अल फलाह यूनिवर्सिटी के इलेक्ट्रीशियन शोएब ने अपनी एक महिला रिश्तेदार का दिलवाया था। अफसाना नाम की यह महिला नूंह के गोलपुरी गांव की रहने वाली बताई गई है। शनिवार को एनआइए की टीम जांच करने पहुंची। हालांकि जिस मकान में उमर रह रहा था, उसमें ताला लटका मिला। जांच टीम महिला की तलाश कर रही है। जांच टीम मकान के समीप गोयल अल्ट्रासांउड केंद्र के सीसीटीवी कैमरे भी खंगाले, जिसमें संदिग्ध सफेद रंग की कार के फुटेज मिले हैं। जानकारी अनुसार यह वहीं कार थी, जिसका प्रयोग आतंकी उमर ने राजधानी में बम विस्फोट को किया था। वहीं नूंह में रहने के दौरान आतंकी उमर रात में फिरोजपुर झिरका के एचडीएफसी एटीएम से पैसे निकासी को गए था, लेकिन एटीएम में पैसे नहीं होने के कारण उसे वापस लौटना पड़ा था।

अल फलाह यूनिवर्सिटी के इलेक्ट्रीशियन शोएब ने आतंकी को एक महिला रिश्तेदार के घर में दिलवाया था कमरा

सूचना के आधार पर शनिवार को एनआइए टीम जांच के लिए हिदायत कालोनी के उस मकान पर पहुंची जहां आरोपित ठहरा हुआ था। फिलहाल वह मकान बंद है। टीम के पहुंचने के साथ ही स्थानीय लोगों में भी हलचल मची हुई है। सूत्रों के मुताबिक, जांच के दौरान सीसीटीवी फुटेज में एक सफेद रंग की आई-20 कार नजर आ रही है, जो डा. उमर की बताई जा रही है। हालांकि कार का नंबर प्लेट अभी धुंधला होने के कारण स्पष्ट नहीं हो सका है। इससे पहले भी डा. उमर की यही कार दिल्ली-मुंबई-बडोदरा एक्सप्रेसवे पर एक टोल प्लाजा के सीसीटीवी में कैद हो चुकी है।

जांच में सामने आया है कि पहले से हिरासत में लिए शोएब इल्क्ट्रीशियन अल फलाह यूनिवर्सिटी ने मकान दिलाने में अहम भूमिका निभाई थी। महिला अपने स्वजन के साथ गायब बताई जा रही है।

जीएसवीएम मेडिकल कालेज से बर्खास्त हुए तीन और डाक्टरों की भी जांच शुरू

अंकुश शुक्ल ● जागरण

- 2013 से तीनों थे अनुपस्थित, नोटिसों का भी नहीं दिया जवाब, दुबई जाने का भी पता चला है
- डा. शाहीन ने विदेश जाने और पासपोर्ट बनवाने की मांगी थी अनुमति,

कानपुर: डा. शाहीन के व्हाइट कालर टेरर को लेकर नया राज सामने आया है। शाहीन की बर्खास्तगी के कुछ दिन के अंतराल में तीन और डाक्टर फिजियोलाजी विभाग के हफीजुल रहमान, एनाटामी के हामिद अंसारी व सर्जरी विभाग के निसार अहमद भी जीएसवीएम मेडिकल कालेज से बर्खास्त किए गए थे। यह तीनों भी बिना किसी सूचना के अपने-अपने विभागों से लंबे समय तक अनुपस्थित रहे थे। इन्हें आठ से 10 बार नोटिस भेजे गए, लेकिन कोई जवाब नहीं मिलने पर वर्ष 2021 में शासन स्तर से बर्खास्तगी की कार्रवाई की गई।

सूत्रों के मुताबिक जांच में पता चला है कि डा. शाहीन ने विदेश जाने व पासपोर्ट बनवाने के लिए भी मेडिकल कालेज से अनुमति मांगी थी। तीनों डाक्टरों में से एक हामिद के पिछले साल ही कानपुर देहात के राजकीय मेडिकल कालेज में तैनाती की जानकारी जांच एजेंसियों को पता चली है। उसकी बर्खास्तगी के समय तत्कालीन मेडिकल कालेज प्रशासन ने उसके भी दुबई में रहने की जानकारी शासन को दी थी। इससे आशंका है कि डा. शाहीन सहित चारों एक साथ दुबई भी जा चुके हैं। एजेंसियां पता लगा रही हैं कि चारों ने क्या कभी विदेश यात्राएं की हैं। जांच एजेंसियों को तीनों के बारे में जीएसवीएम मेडिकल कालेज में वर्ष 2006 से 2013 तक लगभग आठ साल फार्माकोलाजी की प्रवक्ता व 15 माह विभागाध्यक्ष रही शाहीन के रिकार्ड खंगालने के दौरान पता चला। कानपुर देहात के राजकीय मेडिकल कालेज के एक अधिकारी के अनुसार, हामिद प्रत्येक मंगलवार को वहां आते हैं। इसके बाद काकादेव क्षेत्र में निजी क्लीनिक में बैठते हैं, लेकिन सही पता नहीं बता सके। वह 2021 से 2024 तक कहां रहे, यह किसी को नहीं पता है। सर्जरी विभाग के निसार अहमद के भी लखनऊ के किसी अस्पताल में काम करने की जानकारी एजेंसियों को मिली है।

भर्ती के समय भी डा. हामिद ने दी गलत जानकारी: कानपुर देहात के राजकीय मेडिकल कालेज में भर्ती के समय भी डा. हामिद अंसारी की ओर से चयन बोर्ड को गलत जानकारी देने की बात सामने आई है। इस संबंध में हामिद को फोन मिलाया गया और उन्हें मैसेज भी किए गए, लेकिन उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया।

शाहीन 15 माह रही फार्माकोलाजी विभागाध्यक्ष, बोर्ड से हटाया गया नाम

जागरण संवाददाता, कानपुर: जीएसवीएम मेडिकल कालेज में वर्ष 2006 से 2013 तक लगभग आठ साल फार्माकोलाजी की प्रवक्ता रही डा. शाहीन एक सितंबर, 2012 से 31 दिसंबर, 2013 तक विभागाध्यक्ष रही।

टेरर नेटवर्क में उसका नाम आने के बाद मेडिकल कालेज प्रशासन ने फार्माकोलाजी विभाग में लगे विभागाध्यक्षों के नाम के बोर्ड पर लिखे डाक्टर शाहीन के नाम को सफेद पट्टी से ढक दिया है। सूत्रों के अनुसार, विभाग में पढ़ने वाले छात्र-छात्राओं में शाहीन की राष्ट्र विरोधी गतिविधियों की चर्चा हो रही है। इससे छात्रों पर भी विपरीत असर पड़ सकता है। परिसर को उसकी चर्चा से बचाने के लिए सफेद कागज से शाहीन के नाम व कार्यकाल की अवधि को ढका गया है। अब बोर्ड बदलकर नया लगाया जाएगा। इसके लिए निर्देश भी दिए जा चुके हैं।

दुबई में बैठकर मुजफ्फर ने डा. मुजम्मिल के लिए भेजे थे रुपये

जागरण संवाददाता, सहारनपुर: आतंकी संगठन जैश-ए-मोहम्मद के सफेदपोश आतंकी माड्यूल से जुड़ा डा. आदिल अहमद राथर सहारनपुर में रहकर फंडिंग का काम करता था। इसको लेकर श्रीनगर पुलिस और जांच एजेंसियों को पुख्ता इनपुट मिले हैं। डा. आदिल को रकम महीने की 15 तारीख से पहले चाहिए होती थी। दुबई से उसका भाई डा. मुजफ्फर भी उसे हर महीने रकम भेजता था। बी-ब्रास हास्पिटल से उसे समय से वेतन नहीं मिल रहा था, इसलिए उसने यहां से नौकरी छोड़कर फेमस अस्पताल में नौकरी पकड़ी थी। एटीएस को डा. आदिल अहमद राथर के पास से दस्तावेज और पुराना रिकार्ड मिला है, जिसमें उसके बैंक खाते से काफी लेनेदन भी हुआ है। बी-ब्रास अस्पताल से भी यही जानकारी मिली है।

डा. आदिल वेतन व भाई से मिली रकम को लगाता था आतंकी गतिविधियों में, हर महीने 15 तारीख से पहले चाहता था वेतन

खुफिया एजेंसियों को डा. आदिल के खाते से फरीदाबाद में रह रहे मुजम्मिल को भी रकम भेजने के साक्ष्य मिले हैं। जांच में यह स्पष्ट हो चुका है कि सफेदपोश आतंकियों का हैंडलर डा. मुजफ्फर अहमद राथर था।

****

संपादकीय जागरण

रविवार, 16 नवंबर, 2025 : मार्गशीर्ष कृष्ण - 12 वि. 2082

धैर्य ही महानता का पहला कदम है

सबक सिखाने वाला हादसा

इससे दुर्भाग्यपूर्ण और कुछ नहीं कि जो जम्मू-कश्मीर पुलिस अपनी अतिरिक्त सतर्कता के चलते फरीदाबाद के खतरनाक आतंकी माड्यूल तक पहुंची, वह उसी विस्फोटक के एक हिस्से में हुए विस्फोट की चपेट में आ गई, जिसे उसने बरामद किया था। श्रीनगर के नौगाम थाने में हुए विस्फोट में नौ लोगों ने जान गंवाई। विस्फोट अमोनियम नाइट्रेट नामक उस विस्फोटक में हुआ, जिसका इस्तेमाल फरीदाबाद माड्यूल के एक आतंकी की कार में दिल्ली में लाल किले के निकट हुआ था। उसकी कार में हुए धमाके से 13 लोग मारे गए थे। यदि फरीदाबाद में विस्फोटक मिलते ही उसका भंडारण करने वाले आतंकियों के शेष साथियों की गहन तलाश को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाती तो शायद लाल किले के निकट हुए धमाके को रोका जा सकता था। इसी तरह यदि फरीदाबाद में मिले विस्फोटक को श्रीनगर ले जाने की जरूरत नहीं पड़ती तो नौगाम थाने के जानलेवा हादसे से बचा जा सकता था। ये दोनों प्रसंग यही सबक दे रहे हैं कि पुलिस को और अधिक सजगता बरतने और अपनी कार्यप्रणाली में परिवर्तन लाने की जरूरत है। फरीदाबाद में आतंकियों के ठिकाने से बरामद विस्फोटक को श्रीनगर के नौगाम थाने इसलिए ले जाया गया, क्योंकि इस आतंकी माड्यूल के खिलाफ एफआइआर यहीं दर्ज की गई थी। आखिर विस्फोटक के एक अंश को नमूने के तौर पर ले जाने के बजाय उसकी इतनी अधिक मात्रा क्यों ले जाई गई? अच्छा हो कि संवेदनशील विस्फोटकों को संबंधित थाने ले जाने की बाध्यता खत्म की जाए।

अमोनियम नाइट्रेट बहुत ही संवेदनशील और अस्थिर प्रकृति का विस्फोटक है। तनिक भी असावधानी या प्रतिकूल परिस्थिति उसमें विस्फोट का कारण बन सकती है। यह ठीक नहीं कि खतरनाक विस्फोटक को बड़ी मात्रा में फरीदाबाद से श्रीनगर ले जाया गया और जब उसका परीक्षण किया जा रहा था तो तमाम सावधानी के बाद भी उसमें विस्फोट हो गया। आज जब आतंकियों का नेटवर्क देशव्यापी होने लगा है और वे घातक विस्फोटक कई ठिकानों में छिपाने लगे हैं, तब उन्हें हर जगह से उसी थाने ले जाना जरूरी नहीं होना चाहिए, जहां से मामले की जांच शुरू हुई हो। आतंकियों के पास से मिले विस्फोटकों के मामले में तो इस चलन को रोका ही जाना चाहिए। अब हर राज्य में आतंकवाद निरोधक दस्ता है। उसे यह सुविधा मिले कि अन्य राज्यों की पुलिस के लिए विस्फोटकों की जांच कर सके। आखिर फरीदाबाद में मिले विस्फोटक की जांच हरियाणा में ही क्यों नहीं हो सकती थी? प्रश्न यह भी है कि जब फरीदाबाद माड्यूल का भंडाफोड़ होते ही वह स्पष्ट हो गया था कि यह आतंकवाद से जुड़ा मामला है और इसकी जांच राष्ट्रीय जांच एजेंसी अपने हाथ में लेगी, तब भी विस्फोटक श्रीनगर क्यों ले जाया गया?

सही कदम

दिल्ली सरकार ने अग्नि सुरक्षा प्रमाणपत्र नवीनीकरण प्रक्रिया को आनलाइन कर दिया है। इसके लिए पोर्टल की शुरुआत की गई है। इससे लोगों को सुविधा मिलने के साथ ही प्रमाणपत्र नवीनीकरण प्रक्रिया में पारदर्शिता आएगी। आवेदक को अग्निशमन विभाग के अधिकारियों के कार्यालय के चक्कर नहीं लगाने पड़ेंगे। आवेदक यह भी जांच कर सकेगा कि उसकी फाइल कहां पर है। मौजूदा व्यवस्था में भ्रष्टाचार की भी शिकायत मिलती थी। इस तरह की परेशानी के कारण कई लोग समय पर भवन की अग्नि सुरक्षा प्रमाणपत्र का नवीनीकरण नहीं कराते थे। अब उनकी परेशानी दूर होने की उम्मीद है, लेकिन इसके लिए निरीक्षण व अन्य प्रक्रिया को समय पर और निष्पक्ष तरीके से करने की आवश्यकता है, क्योंकि निरीक्षण में अक्सर लापरवाही की जाती है।

> निरीक्षण व अन्य प्रक्रिया को समय पर व निष्पक्ष तरीके से करने की आवश्यकता है, क्योंकि निरीक्षण में अक्सर लापरवाही की जाती है

दिल्ली में अनियोजित विकास और अवैध निर्माण के कारण आपदा प्रबंधन का ध्यान नहीं रखा जा रहा है। झुग्गियों, अनधिकृत कालोनियों, संकरी गलियों के साथ ही औद्योगिक क्षेत्रों में भी आपदा प्रबंधन की उचित व्यवस्था नहीं है। सुरक्षा मानकों की अनदेखी की जाती है। यही कारण है कि आग लगने की घटनाएं होती रहती हैं। बहुमंजिला भवन बनाने की अनुमति तो दी जाती है, लेकिन आग से बचाव के लिए उचित प्रबंध नहीं किए जाते हैं। सभी आवासीय, सरकारी व व्यावसायिक भवनों में सुरक्षा के उपाय सुनिश्चित करना होगा।

कह के रहेंगे — माधव जोशी

जागरण जनमत — कल का परिणाम

क्या कांग्रेस सहयोगी दलों पर बोझ बन रही है?

आज का सवाल

क्या बिहार में महागठबंधन की करारी हार के बाद आइएनडीआइए के अस्तित्व पर खतरा मंडराने लगा है?

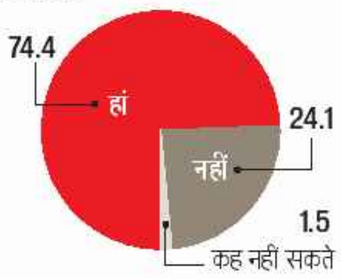

परिणाम जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है। सभी आंकड़े प्रतिशत में।

बड़ी जीत ने अपेक्षाएं भी बढ़ाईं

संजय गुप्त

चूंकि राजग ने प्रचंड जीत हासिल की है, इसलिए बिहार के लोगों को उसकी डबल इंजन सरकार से उम्मीदें भी कहीं अधिक बढ़ गई हैं

बिहार में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन की जो अप्रत्याशित जीत हुई, उसने बिहार की यह छवि तोड़ने का काम किया कि यहां के मतदाता जाति और मजहब के आधार पर वोट करते हैं। यदि बिहार के नतीजों में सत्ता विरोधी प्रभाव नहीं दिखा तो इसका प्रमुख कारण यह रहा कि यहां के मतदाताओं ने मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के साथ प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के वादों पर अधिक भरोसा किया। जहां राजद की ओर से महिलाओं को तीस हजार रुपये सालाना और हर परिवार के एक सदस्य को सरकारी नौकरी का वादा था, वहीं भाजपा-जदयू के नेतृत्व वाले राजग ने महिलाओं को दस हजार रुपये देने का वादा तो किया ही, उस पर अमल भी शुरू करके यह संदेश दिया कि वह जो कह रहा है, उसे पूरा करने को प्रतिबद्ध है। महागठबंधन का वादा अधिक लुभावना तो था, लेकिन वह पूरा किए जाने लायक नहीं दिख रहा था। किसी को समझ नहीं आ रहा था कि आखिर हर परिवार के एक सदस्य को सरकारी नौकरी देना कैसे संभव है? राजनीति में लोक-लुभावन वादे से अधिक यह महत्व रखता है कि उसे कर कौन रहा है और वह पूरा करने लायक है या नहीं? इस मामले में बिहार की जनता ने नीतीश और मोदी पर अधिक भरोसा किया तो उनके पिछले रिकार्ड के कारण। यह भी स्पष्ट है कि डबल इंजन सरकार के नारे ने बिहार में असर दिखाया।

जदयू के लिए भाजपा किस तरह एक ताकत और सहारा बनी, इसका प्रमाण यह है कि वह सबसे बड़े दल के रूप में उभरी। दूसरी ओर राजद के लिए कांग्रेस बोझ साबित हुई। उसे मात्र छह सीटें मिलीं। यदि भाजपा जदयू की ताकत बनी तो प्रधानमंत्री मोदी की सशक्त नेता की छवि और उनकी सरकार के कामकाज के कारण। राजग की जीत में मोदी की लोकप्रियता एक बड़ा कारण रही। बिहार की जनता यह देख रही थी कि जहां मोदी के चलते भाजपा देश भर में अपनी राजनीतिक जमीन मजबूत करती जा रही है, वहीं कांग्रेस खोती जा रही है। राहुल गांधी ने जहां वोट चोरी का मुद्दा उठाकर बिहार के लोगों को बरगलाने की नाकाम कोशिश की, वहीं प्रधानमंत्री मोदी ने अपने भाषणों से राज्य के लोगों की नब्ज पर हाथ रखा। जब प्रधानमंत्री ने जंगलराज की चर्चा की तो कांग्रेस उस पर सफाई देती दिखी। जंगलराज की चर्चा से राजद को इसलिए भी नुकसान उठाना पड़ा, क्योंकि उसके कई समर्थकों ने यह दिखाया कि यदि महागठबंधन सत्ता में आया तो कानून एवं व्यवस्था को चुनौती दी जाएगी। राजद की जो छवि लालू यादव के समय बनी, उससे वह अब भी मुक्त नहीं हो सकी है। यह छवि उसके लिए फिर से परेशानी का

अवधेश राजपूत

सबब बनी। तेजस्वी यादव से उम्मीद थी कि वह बीस साल पुरानी राजद की छवि को तोड़कर एक सार्थक और समन्वय वाली राजनीति की तरफ आगे बढ़ेंगे, पर वे ऐसा कर नहीं सके। वे अपने समर्थकों को संयमित आचरण के लिए भी समझा नहीं सके। इसी का उल्लेख करते हुए मोदी ने आगाह किया कि कट्टा वाली सरकार की वापसी नहीं होनी चाहिए।

राजग की बड़ी जीत में जहां प्रधानमंत्री मोदी की सशक्त नेता की छवि काम आई, वहीं मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की कुशल प्रशासक और बेदाग नेता की छवि भी एक बड़ा आधार बनी। नीतीश ने मतदाताओं के एक बड़े वर्ग को अपने पक्ष में गोलबंद किया है। इसमें सबसे प्रभावी वर्ग है महिलाओं का। मोदी की तरह नीतीश भी महिलाओं को अपने पक्ष में लाने के लिए सक्रिय हैं। अपने शासनकाल के प्रारंभ में उन्होंने स्कूली लड़कियों को साइकिल देकर महिला मतदाताओं को अपनी ओर आकर्षित किया, फिर उन्हें स्थानीय निकायों के साथ नौकरी में आरक्षण देने के साथ उनके हित में अन्य कई फैसले किए। इनमें एक बड़ा फैसला शराबबंदी का रहा। शराबबंदी भले ही प्रभावी ढंग से लागू न हो सकी हो, लेकिन महिलाएं उसे अपने हित में मानती हैं। बिहार में सड़कों का जो जाल बिछा है और बिजली, पानी की सुविधा बढ़ने के साथ कानून एवं व्यवस्था में जो सुधार हुआ है, उसका श्रेय नीतीश कुमार को जाता है। जदयू-भाजपा ने यह जो दिखाया कि नीतीश पहले से अधिक सक्षम और प्रभावी सरकार दे सकते हैं, उसके कारण ही राजग को प्रचंड जीत मिली। राजग के मुकाबले महागठबंधन ने जिन मुद्दों को चुनावी मुद्दा बनाया, उन्होंने सुर्खियां तो बटोरीं, लेकिन जनता ने उन्हें महत्व नहीं दिया। ऐसा ही एक मुद्दा था वोट चोरी का। चुनाव आयोग की ओर से मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण यानी एसआइआर को वोट चोरी करार दिया गया। इसे लेकर राहुल एवं तेजस्वी ने वोटर अधिकार यात्रा निकाली और यह संदेश देने की कोशिश की कि चुनाव आयोग गलत काम कर रहा है। एसआइआर को सुप्रीम कोर्ट में भी चुनौती दी गई, पर विपक्ष को वहां से भी कोई राहत नहीं मिली। कांग्रेस और राजद ने जिस मुद्दे को खूब उछाला, उसकी चुनाव आते-आते हवा निकल गई, क्योंकि बिहार के लोग समझ गए कि एसआइआर एक जरूरी प्रक्रिया है।

बिहार में राजग की विजय केवल नरेन्द्र मोदी और नीतीश कुमार की कैमेस्ट्री का ही नतीजा नहीं, वह इस गठबंधन के सभी घटकों के बीच बेहतर सामंजस्य का भी परिणाम है। राजग के मुकाबले महागठबंधन अनबन और अविश्वास से ग्रस्त दिखा। इसका एक प्रमाण यह रहा कि 11 सीटों पर उसके प्रत्याशी आमने-सामने थे। इसकी तुलना में राजग ने सीट बंटवारे से लेकर चुनाव प्रचार में तालमेल दिखाया। इसी कारण भाजपा, जदयू के साथ-साथ चिराग पासवान, जीतनराम मांझी, उपेंद्र कुशवाहा के दलों ने भी बेहतर प्रदर्शन किया। पिछली बार जदयू इसलिए कमजोर साबित हुआ था, क्योंकि चिराग पासवान ने नीतीश को निशाने पर लेते हुए अलग चुनाव लड़ा था। चूंकि राजग ने प्रचंड जीत हासिल की है, इसलिए बिहार के लोगों की नीतीश सरकार से उम्मीदें कहीं अधिक बढ़ गई हैं। बिहार अभी भी एक पिछड़ा हुआ राज्य है और यहां बहुत कुछ करना बाकी है। इतनी बड़ी जीत के साथ जो सरकार बनेगी, उसे लोगों की बढ़ी हुई अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए तैयार रहना चाहिए। यह ठीक है कि धीरे-धीरे बिहार सही रास्ते पर आ गया है, लेकिन उसे पिछड़े राज्य की छवि से मुक्त होने की आवश्यकता है। बिहार के लोगों में जो मेधा है, उसका कोई सानी नहीं, पर उद्योग-धंधों के अभाव से राज्य पिछड़ गया है। अब यहां की डबल इंजन की सरकार से उम्मीद है कि वह बिहार को तेजी से विकास की ओर ले जाए।

response@jagran.com

मिल गया कैशलेस काल सम्मान

हास्य-व्यंग्य

एक रोज किसी 'काल' सम्मान समिति से काल आया। बोले, बधाई हो, काल के वार्षिक कालजयी लेखक सम्मान हेतु पांच लेखकों के पैनल में आपका नाम पहले नंबर पर चल रहा है। सब कुछ ठीक रहा तो मानकर चलिए सम्मान आपको ही मिलेगा। मैंने खुशी से कम और हैरानी से ज्यादा पूछा, 'काल' यह कैसा नाम है? पहली बार सुन रहा हूं। आजकल बिना जैक-जुगाड़ सम्मान मिलते कहां हैं। वैसे इस 'काल' का फुलफार्म क्या है? उधर से आवाज आई, कवि एंड लेखक। अपने नामानुरूप समिति प्रतिवर्ष एक कवि और एक लेखक को सम्मानित करती है। जिस पर काल का ठप्पा लगा, समझो उसका स्वर्णकाल शुरू और उसे कालजयी लेखक की पहचान तो तत्काल प्रभाव से मिल जाएगी।

मुकेश राठौर

मैं सम्मान अनुरागी नहीं हूं, लेकिन सम्मान के नाम पर जब बड़े-बड़े पिघल जाते हैं, फिर अपन तो उभरते हुए लेखक हैं

मैंने कहा, लेकिन मुझे करना क्या होगा? काल वाले महाशय बोले, इस वर्ष प्रकाशित अपनी पुस्तक की तीन प्रतियां, साहित्यिक परिचय, अपनी फोटो समेत मुझे भेज दीजिए। मैंने ऐसा ही किया। करता भी क्या? एक तो सम्मान हेतु वे आग्रह कर रहे थे और दूसरे मुझे लग रहा था कि आखिर अभी तक किसी पारखी की मुझ जैसे उभरते लेखक पर नजर क्यों नहीं पड़ी? हालांकि मैं सम्मान अनुरागी नहीं हूं, लेकिन सम्मान के नाम पर जब बड़े-बड़े साहित्यकार पिघल जाते हैं, फिर अपन तो उभरते हुए लेखक हैं। कैसे न पिघलें? अब मैं उनके काल की प्रतीक्षा करने लगा कि कब खुशखबरी मिले और मैं कलफदार कुर्ता-पायजामा, जैकेट सिलवाऊं, क्योंकि आदमी भीतर से चाहे जितना फटा हो, बाहर से झकास दिखना चाहिए। कुछ समय बाद उनका काल आया। बोले, बहुत-बहुत बधाई। आप कालजयी लेखक बनने वाले हैं। फलां तारीख को बड़े-बड़े बुद्धिजीवियों और कुर्सीजीवियों की उपस्थिति में आपको सम्मान स्वरूप 25 हजार रुपये का चेक भेंट किया जाएगा, लेकिन एक तकनीकी समस्या आ रही है? मैंने पूछा, कैसी समस्या? वे बोले, सम्मान से पहले आपको समिति की सदस्यता लेने होगी, क्योंकि समिति की ओर से अपने सम्मानित सदस्यों को ही सम्मानित किया जाता है और आप अभी तक हमारी समिति के सदस्य नहीं बने हैं। मैंने पूछा, मुझे क्या करना होगा। वे बोले, 21 हजार रुपये भेजकर समिति की सदस्यता ले लीजिए। फिर आपको काल सम्मान मिलकर रहेगा।

मैंने हैरान-परेशान होते हुए कहा, लेकिन 21 हजार देकर 25 हजार लेने का क्या मतलब। दो-चार हजार तो राजधानी आने-जाने में ही खर्च हो जाएगा। मुझे क्या फायदा? मुझे नहीं लेना ऐसा सम्मान। उन्होंने मेरे टूटे दिल को दिलासा देते हुए और कुछ नाराज होते हुए कहा कि आप ऐसे कैसे मना कर सकते हैं। आपके नाम से सारे बैनर, निमंत्रण कार्ड बन गए हैं। काल की इज्जत का सवाल है। सम्मान तो लेना पड़ेगा श्रीमान। मैंने सवाल दागा, अगर मैं सम्मान न लूं तो? वे बोले तो फिर काल आपके लिए काल बन जाएगा। आपके खिलाफ अभियान छेड़ दिया जाएगा कि आप लेखक हो ही नहीं और आपने अभी तक जो सम्मान अर्जित किए हैं, वे सब खरीदे हैं। मैंने कहा, भाई साहब, मुझे तो आज तक कोई सम्मान ही नहीं मिला है। वह बोले, अरे! आप सीरियस हो गए। एक काम करते हैं, बराबर में निपट लेते हैं। मैंने हैरानी से कहा, मैं कुछ समझा नहीं? वे बोले, "मेरे घर आना नहीं और तुम्हारे घर खाना नहीं। समझे? इसका मतलब है कैशलेस सदस्यता और कैशलेस सम्मान।" मैंने राहत की सांस ली और अब कैशलेस काल सम्मान से सज्जित हूं।

response@jagran.com

ऊर्जा

अंतर्ध्वनि

सामान्यतः दर्शन, श्रवण और चिंतन की दो प्रवृत्तियां होती हैं-बहिर्मुखी और अंतर्मुखी। बहिर्मुखी प्रवृत्ति हमेशा बाह्य जगत को देखने, सुनने और चिंतन करने की प्रेरणा देती है, जबकि अंतर्मुखी प्रवृत्ति सूक्ष्म रूप में विद्यमान अंतर्जगत को देखने, अंतर्ध्वनि को सुनने एवं उसी के अनुसार कार्य करने की प्रेरणा देती है। ध्वनि एक आंतरिक ऊर्जा है, जो जीवन को चेतन बनाए रखने का आधार है। किंतु निर्धारित मानक से अधिक होने पर यही मानसिक और शारीरिक विकारों को जन्म देकर जीवन के लिए खतरा बन जाती है। ध्वनि मस्तिष्क के एक विशिष्ट स्थान स्फोट से प्रस्फुटित होती है। फिर वाक् इंद्रिय से प्रकट होकर श्रवणेंद्रिय का विषय बनती है। यही अंतर्मन को झंकृत कर अन्य इंद्रियों के लिए उत्प्रेरण का काम करती है तथा समस्त जागतिक व्यवहारों के संपादन का कारण बनती है।

अंतर्चेतना की दृष्टि से मानसिक एवं आत्मिक चेतना ध्वनि प्रस्फुटन के कारण हैं। यद्यपि दोनों पर बाह्य जगत का प्रभाव पड़ता है। किंतु मन की चंचल प्रवृत्तियों पर निर्भर होने से मानसिक चेतना से निःसृत ध्वनि सर्वदा क्षेमकरी नहीं होती। आत्मिक चेतना से उद्भूत ध्वनि स्वार्थ, लोभ और मोहादि मनोविकारों से मुक्त होती है। इस पर बाह्य जगत के शोर का प्रभाव भी नहीं पड़ता। इसलिए सर्वमंगल की पवित्र भावनाएं समाहित रहती हैं। प्रत्येक क्रिया से पूर्व यह सबके अंतःकरण में यही भाव लेकर ध्वनित होती है। किंतु बाहरी शोर के प्रभाव में हम या तो इसे सुनना नहीं चाहते या सुनकर भी अनसुना कर देते हैं, जिसका परिणाम समाज में अशांति के रूप में देखा जाता है। अंतर्ध्वनि को सुनने के लिए मन की निर्मलता आवश्यक है। सामाजिक सुख-शांति हेतु विधि का अनमोल वरदान मानकर अंतर्ध्वनि को निष्पक्ष भाव से सुनें और अपनी कार्य संस्कृति का आधार बनाएं।

डा. सत्यप्रकाश मिश्र

तथ्य-कथ्य

जीएसटी संग्रह करने वाले शीर्ष दस राज्य

(आंकड़े करोड़ रुपये में)

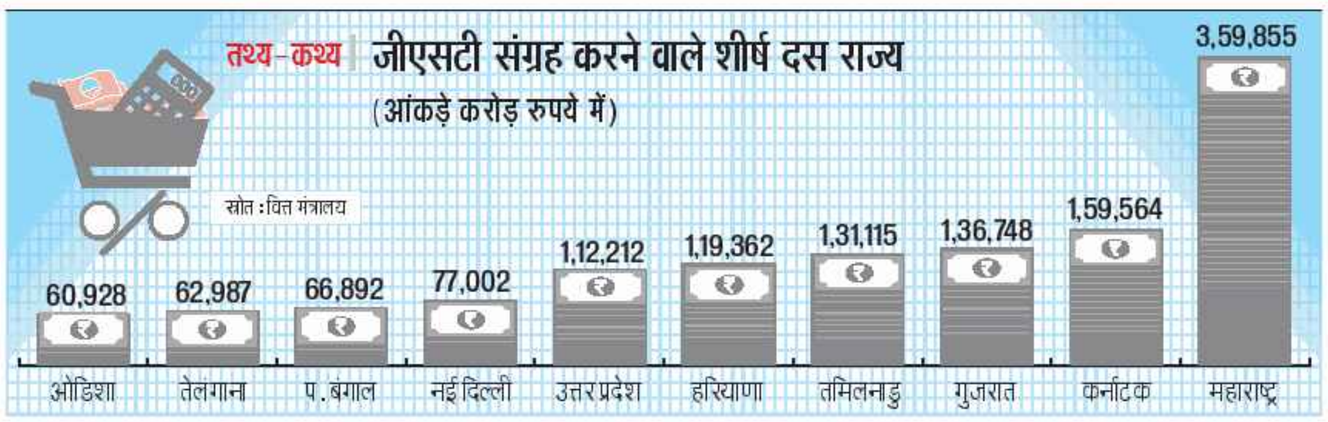

अपने-अपने सिर सेहरा

एक कहावत है कि सफलता के कई माई-बाप होते हैं। बिहार चुनाव में एनडीए को मिली अभूतपूर्व जीत के बाद उनके ऐसे नेताओं की ओर से भी जीत का श्रेय लेने की होड़ हो रही है जिन्हें खुद उनके करीबी भी श्रेय नहीं दे रहे हैं। इनमें कोई सिर्फ इस बात को लेकर श्रेय लेने की होड़ में जुटा है कि उसे चुनाव के दौरान जिस जिले की जिम्मेदारी दी गई थी, वहां से विधानसभा की सारी सीटों या फिर छह में पांच सीटों पर उसने जीत दिला दी है। इसमें कई मुख्यमंत्रियों के स्टाफ की ओर से भी दावा किया जा रहा है कि फलां जाति में उन्होंने सेंध लगा दी। कुछ नेताओं की ओर से यह दावेदारी की गई है कि उन्हें जिस विधानसभा की जिम्मेदारी दी गई थी, उसे जितवा दिया। इनकी ओर से डाटा इंटरनेट मीडिया पर शेयर किया जा रहा है और यह भी बताया जा रहा है कि कितने प्रतिशत वोट उन्होंने राजग को दिलवाए। दिलचस्प बात यह है कि लोकसभा चुनाव के दौरान भी इनमें से कई नेताओं को इसी तरह से जिम्मेदारी बांटी गई थी, लेकिन जब पार्टी की सीटें घट गईं तो कोई भी जवाबदेही लेने आगे नहीं आया।

राजरंग

तालमेल की गुंजाइश

हरियाणा में हांडी न चढ़ी, महाराष्ट्र में मात मिली, दिल्ली ने दिल तोड़ा और बिहार ने भी बाहर का रास्ता दिखा दिया। ऐसा क्या है कि कहीं दाल गल ही नहीं रही, लेकिन अपनी दाल के कंकड़ देखने की फुर्सत या जरूरत किसे है? फिर संदेह के घेरे में दाल ही है कि दाल में कुछ काला है। यूं महागठबंधन के नेताओं की फिलहाल इतनी कसरत जरूर बच गई कि हार का ठीकरा फोड़ने के लिए अपनों के बीच ही कोई सिर ढूंढ़ने की मशक्कत नहीं करनी पड़ी और ठीकरा फोड़ दिया चुनाव आयोग पर। मगर जरूरत तो उन नेताओं के सुर अपने साथ मिलाने की है, जो अपने चश्मे से चुनाव परिणामों को देख रहे हैं। वरिष्ठ नेता शरद पवार मानते हैं कि महिलाओं के वोट ने राजग को ताकत दी तो तमिलनाडु के सीएम एमके स्टालिन राजग के चुनाव प्रबंधन को उसकी जीत का कारण मान रहे हैं। शिवसेना (उद्धव) गुट के एक नेता ने भी राहुल गांधी को आईना दिखाने की कोशिश की है। अब चुनौती है कि चुनाव से पहले न सही, परिणाम की समीक्षा पर ही तालमेल बैठ जाए।

शिपिंग के अंगने में...

केंद्रीय पोर्ट एवं शिपिंग मंत्रालय में एक गाना बज रहा है कि मेरे अंगने में तुम्हारा क्या काम है...? हुआ यह है कि पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्री हरदीप सिंह पुरी पिछले दिनों दक्षिण कोरिया की यात्रा पर गए। उम्मीद थी कि वह पेट्रोलियम क्षेत्र में सहयोग पर चर्चा करने के लिए गए हैं, लेकिन वहां से जो सूचनाएं आ रही हैं, वह शिपिंग क्षेत्र में भारत एवं दक्षिण कोरिया के बीच सहयोग को लेकर हैं। ऐसे में लोगों ने शिपिंग मंत्रालय के अधिकारियों से पूछना शुरू कर दिया कि क्या मंत्रालय की जिम्मेदारी माननीय पेट्रोलियम मंत्री को दे दी गई है, क्योंकि केंद्रीय शिपिंग मंत्री तो सर्बानंद सोनोवाल हैं। मजेदार तथ्य यह है कि सोनोवाल देश में बंदरगाह और जहाजरानी मंत्रालय से जुड़े कार्यक्रमों में हिस्सा ले रहे थे। ऐसे में यह चर्चा का विषय है कि शिपिंग क्षेत्र में सहयोग पर बात करने के लिए केंद्रीय शिपिंग मंत्री की जगह पेट्रोलियम मंत्री को क्यों भेजा गया? क्या यह भविष्य का कोई संकेत तो नहीं है?

पोस्ट

महिलाएं किसी भी राज्य की हों, सुरक्षित रहना चाहती हैं। बिहार ने बता दिया। अब बंगाल की बारी है।

प्रमिला दीक्षित@pramiladixit

कड़ी मेहनत को सिर्फ उससे भी ज्यादा मेहनत ही हरा सकती है। भाजपा चुनावों को इतनी गंभीरता से लेती है कि उसका मुकाबला करने वाले उसकी तैयारी और रणनीति को समझ ही नहीं पाते। उसके पास मानव और आर्थिक संसाधन, दोनों हैं और वह चुनावों में इनका पूरा उपयोग करती है। कमलेश सिंह@kamleshksingh

यदि कांग्रेस खुद को एनडीए के सामने एक विश्वसनीय विकल्प के रूप में बनाए रखना चाहती है तो सही मुद्दों पर ध्यान दे और पुराने दोषारोपण वाले खेल से बाहर निकले।

मालिनी पार्थसारथी@MaliniP

जब आप सत्ता में होते हैं तो चाटुकार, चापलूस आपको घेरे रहते हैं। यह सामान्य है, पर आप विपक्ष में हों तो ऐसे ही लोगों से घिरे रहें और उन्हीं की चले तो परिणाम वैसे ही आते हैं, जैसे बिहार के आए हैं। विपक्ष के नेताओं को अपने निंदक नजदीक रखने चाहिए, नहीं तो और भी बुरे दिन आएंगे। राजीव रंजन@rajeevranjanMKH

जनपथ

'गंगा सागर' की तरफ किया जाय प्रस्थान,
मोदी जी ने कह दिया शुरू करो अभियान।
शुरू करो अभियान बड़ा है अबकी पंगा,
हों विजयी बंगाल बजा समझो तब डंका!
ममता जी से छीन सके जो मत की गागर,
है उसका ही भाग्य नहाए 'गंगा सागर'!!

- ओमप्रकाश तिवारी

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त, पूर्व प्रधान संपादक-स्व.नरेन्द्र मोहन, नॉन एग्जीक्यूटिव चेयरमैन-महेन्द्र मोहन गुप्त, प्रधान संपादक-संजय गुप्त, नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा जागरण प्रकाशन लि. के लिए डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित एवं 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित, संपादक (दिल्ली एनसीआर)-विष्णु प्रकाश त्रिपाठी
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 011-43166300, नोएडा कार्यालय : 0120-4615800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I No 50755/90 समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई शुल्क अतिरिक्त। वर्ष 36 अंक 121

****

मेहमान कलम

संसार और हम

इंसान में इतना लोभ और दंभ है कि उसे लगता है कि दुनिया में जो कुछ भी हो रहा है, सब उसके लिए है या उसके इर्द-गिर्द ही घटित हो रहा है, जबकि वास्तविकता होती कुछ और है। विवेक रंजन अग्निहोत्री का व्यंग्य...

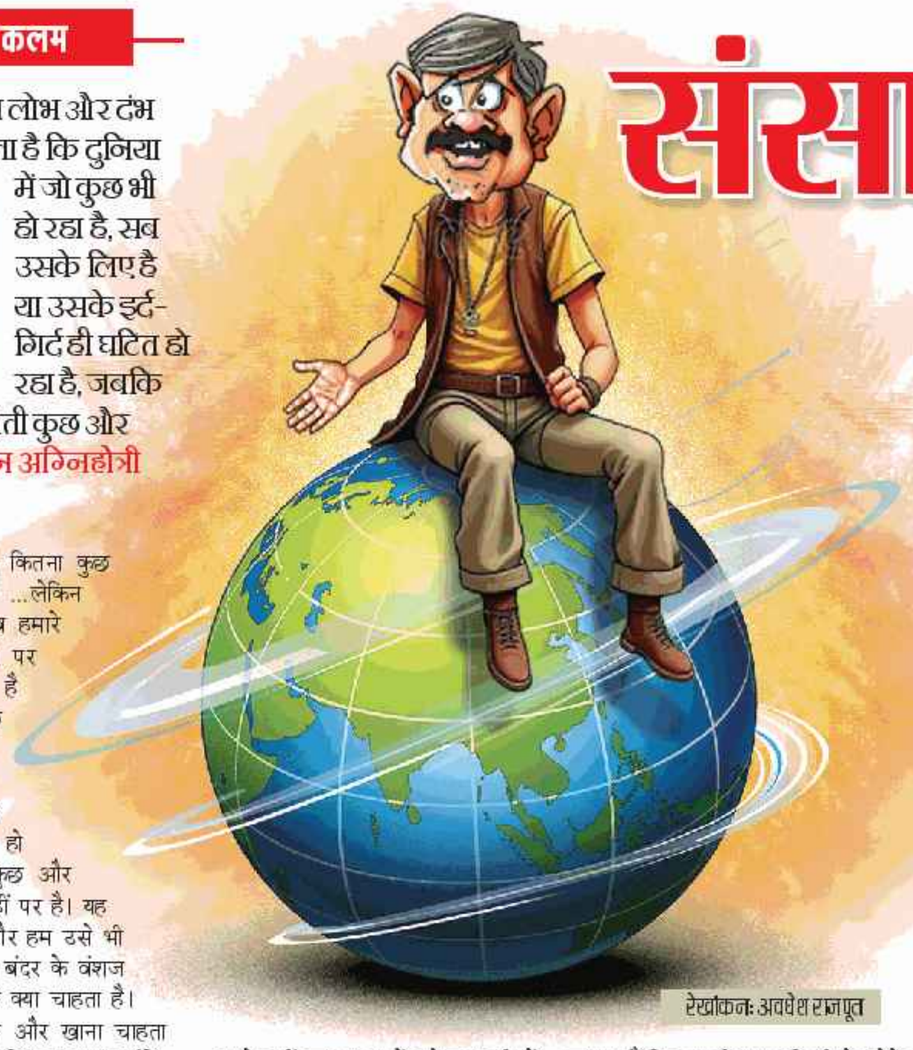

रेखांकनः अवधेश राजपूत

इस संसार में कितना कुछ है, अपरंपार। ...लेकिन क्या यह सब हमारे लिए है? पता नहीं। पर इतना जरूर पता है कि हम सब कुछ चाहते हैं या तो उसे बनाना चाहते हैं या भोगना। अब हमें यह भी यकीन हो गया है कि कहीं कुछ और भी है जो दिखता नहीं पर है। यह हमारा अनुमान है और हम उसे भी चाहते हैं। अगर हम बंदर के वंशज हैं तो जरा देखें बंदर क्या चाहता है। बंदर उछलना-कूदना और खाना चाहता है। उसे न स्टेटस चाहिए, न सुख-शांति, न अध्यात्म। न गाड़ी, बंगला, शादी या यश की जरूरत। न कपड़ों का मोह, न मोबाइल या चश्मे का आकर्षण। पर इंसान उसे भी कपड़े पहनाकर, चश्मा लगवाकर नचवाता है और खुश होता है कि देखो, बंदर सभ्य हो गया।

मुझे नहीं लगता कुत्तों को उन चीजों की कोई चाह है जो इंसान उनके लिए बनाता है, फैक्टरियों में, बड़े शो-रूम में, महंगे दामों पर। क्या कुत्ता नकली हड्डी चाहता है? क्या वह टेनिस की गेंद के पीछे भागना चाहता है? क्या पेड़-पौधे गमलों में उगना चाहते हैं? क्या शेर चाहता है कि उसकी खाल किसी के सोफे पर सजी हो? क्या मगरमच्छ चाहता है कि वह किसी रईस का पर्स बने? शायद नहीं।

अगर प्रकृति को ध्यान से देखें तो दिखता है कि पेट भरने और वंश चलाने के अलावा किसी को कुछ नहीं चाहिए। न भगवान को समझने की जिज्ञासा है, न जीवन या मृत्यु को जानने की। सब अपने-अपने नृत्य में लीन हैं। हवा, पानी, धरती, पशु, पक्षी, सभी एक अनदेखी लय में झूम रहे हैं।

पर इंसान, इंसान नृत्य नहीं देखता, नर्तक को देखता है। वह सोचता है कि यह नृत्य क्यों हो रहा है, इसका निर्देशक कौन है, इसका अंत कब होगा। फिर भ्रम पाल लेता है कि यह नृत्य उसी के लिए हो रहा है, इसलिए इसका आनंद लेना सिर्फ उसका अधिकार है। उसे लगता है यह नृत्य अनंत है, तो क्यों न इसके पात्रों को अपने भोग के लिए चुरा ले। थोड़ी छेड़छाड़ कर ले, कौन देख रहा है। उसे न नृत्य की सुंदरता में रस है, न लय में। उसे तो बस नर्तक चाहिए, अपने मनोरंजन और व्यसन के लिए। जैसे पुराने जमाने में डाकू गांव के नृत्य से सुंदर नर्तकियां उठा ले जाते थे। कौन समझाए कि वह खुद भी उसी नृत्य का हिस्सा है। बाकी सब एक ताल, एक सुर, एक तरंग में झूम रहे हैं, बस इंसान ही है जो अपनी अलग ताल, अलग सुर, अलग मुद्रा में नाच रहा है। जैसे किसी फिल्म में पूरा गांव होली खेल रहा हो और खलनायक खून की होली खेलना शुरू कर दे। यही इंसान का नृत्य है, विध्वंस का नृत्य।

कभी इस दृष्टि से भी इंसान की भूमिका को समझना चाहिए। पशु, पक्षी, पेड़, पौधे, नदी, पर्वत, सूरज, चांद, सितारे, कोई एक-दूसरे से नहीं लड़ता। वे जितना जरूरी है, उतना ही भोगते हैं। उन्हें न ईश्वर की चिंता है, न धर्म-मोक्ष की। वे बस उस महान नृत्य का हिस्सा हैं। जब उनकी भूमिका समाप्त होती है, वे शांत हो जाते हैं। पर इंसान, इंसान नृत्य को लगातार अपने भोग के लिए भंग करता रहता है। जो चाहिए भी नहीं, उसे भी इकट्ठा करता है। जिस ईश्वर के नाम पर चलता है, उसी के नाम पर दूसरों को काटता है। जबसे इंसान बना है, खून की होली कभी रुकी नहीं। वह स्वर्ग और नरक की कल्पना करता है और फिर उसी कल्पना में नरक जीता है, बिना यह जाने कि अगर कहीं स्वर्ग है तो यही पृथ्वी है और अगर कोई स्वर्गिक आनंद है तो यही जीवन है। हालांकि यह जानने के लिए नृत्य में उतरना पड़ता है। उसमें लीन होकर उसके साथ एक हो जाना पड़ता है, दर्शक नहीं, स्वयं दृश्य बनकर। किंतु उसके लिए तीसरी आंख चाहिए। क्योंकि दो आंखों से इंसान बस वही देखता है जो है नहीं और जो सच में है, उसे देख पाने की इन दो आंखों में क्षमता नहीं। इसीलिए वह उस प्राकृत, अलौकिक नृत्य के विध्वंस में लगा है, जिसका वह स्वयं हिस्सा है।

यही इंसान की विडंबना है। यही उसका श्राप। शायद यही उसका नरक भी।

(राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित फिल्मकार एवं बेस्टसेलिंग लेखक)

प्रकृति के पाठ

पर्यावरण का संकट बनती विदेशी हरियाली

पेड़-पौधे और हरियाली, चाहे वे झाड़ियां हों, खेतों की घास या जंगल की छटा, पहली नजर में भले ही सुखद और जीवनदायी लगती हैं, पर हर हरियाली शुभ संकेत नहीं होती। कई बार हरियाली की इन परतों में विदेशी प्रजातियों का मूक आक्रमण छिपा होता है। इनका प्रसार धीरे-धीरे हमारी जैव विविधता, कृषि, और स्वास्थ्य पर गहरी चोट करता है। डा. दीपक कोहली का आलेख...

आक्रामक विदेशी प्रजातियां ऐसे पौधे या जीव होते हैं, जिन्हें मानव गतिविधियों द्वारा उनके प्राकृतिक भौगोलिक क्षेत्र से जानबूझकर या अनजाने में किसी नए क्षेत्र में लाया जाता है। ये प्रजातियां नए वातावरण में खुद को तेजी से स्थापित कर लेती हैं और स्थानीय प्रजातियों के लिए बड़ा खतरा बन जाती हैं। ये आक्रामक प्रजातियां स्थानीय पौधों के साथ भोजन, पानी और आवास जैसे संसाधनों के लिए प्रतिस्पर्धा करती हैं, जिससे देसी प्रजातियां इनके सामने टिक नहीं पातीं। इससे स्थानीय वनस्पतियों की कई प्रजातियां विलुप्त भी हो चुकी हैं। जो जानवर इन देसी पौधों पर भोजन या आवास के लिए निर्भर करते हैं, उन पर भी इसका सीधा नकारात्मक असर पड़ता है। भले ही ये पौधे पहली नजर में हरे-भरे दिखें, लेकिन इनकी आक्रामकता मिट्टी, जल, जंगल, खेती और मानव स्वास्थ्य सभी को धीरे-धीरे नुकसान पहुंचाती है।

टूट जाता है प्रकृति का चक्र

ये प्रजातियां मिट्टी की संरचना, पोषक तत्वों के चक्रण और जल विज्ञान को बदल देती हैं। उदाहरण के लिए, कुछ आक्रामक पौधों को बड़ी मात्रा में पानी चाहिए, जिससे भूजल स्तर गिर जाता है और अन्य स्थानीय पौधों के लिए पानी की कमी हो जाती है। आक्रामक पौधे स्थानीय पौधों को प्रकाश, पानी और पोषण से वंचित कर देते हैं। इससे स्थानीय पौधों की प्रजातियां घटती जाती हैं, जिससे उनसे जुड़े कीट-पतंगे, पक्षी और छोटे जीव भी संकट में पड़ जाते हैं। जब ये पौधे स्थानीय पौधों की जगह लेते हैं, तो वन्यजीवों के लिए भोजन के स्रोत समाप्त हो जाते हैं। इससे शाकाहारी जानवरों को भोजन नहीं मिलता, जिससे पूरे खाद्य चक्र पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। कई आक्रामक प्रजातियां मिट्टी की रासायनिक संरचना बदल देती हैं। इन पौधों के पराग भी हानिकारक हो सकते हैं।

ये रहे हैं कई प्रयास

आक्रामक पौधों की प्रजातियों को नियंत्रित करना चुनौतीपूर्ण है क्योंकि वे तेजी से फैलती हैं और विपरीत परिस्थितियों में भी जीवित रहती हैं। पौधों को उखाड़ना या काटकर नष्ट करना छोटे क्षेत्रों में श्रमसाध्य होने के बावजूद कारगर है। शाकनाशियों का उपयोग केवल आपात स्थितियों में और नियंत्रित मात्रा में ही किया जाना चाहिए, ताकि पर्यावरण को नुकसान न हो। विज्ञानियों ने भृंग (जाइगोग्रामा बाइकोलोराटा) और कुछ कवकों का सफलतापूर्वक प्रयोग किया है जो इन प्रजातियों पर हमला करते हैं। गांवों और कस्बों के स्तर पर लोगों को इन पौधों की पहचान और नष्ट करने की शिक्षा देना सबसे स्थायी उपाय माना जाता है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर जैव विविधता पर कन्वेंशन और राष्ट्रीय स्तर पर वन्यजीव संरक्षण अधिनियम, 1972 तथा राष्ट्रीय जैव विविधता प्राधिकरण इस समस्या से निपटने के लिए कानूनी सहायता प्रदान करते हैं।

हर वर्ग की जिम्मेदारी

आक्रामक विदेशी पादप प्रजातियां केवल पर्यावरणीय समस्या नहीं हैं, बल्कि यह कृषि, पशुपालन, मानव स्वास्थ्य और राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था सभी को प्रभावित करने वाला संकट है। यदि समय रहते इन पर नियंत्रण नहीं किया गया तो आने वाले वर्षों में हमारी जैव विविधता को अपूरणीय क्षति पहुंच सकती है। आज वैज्ञानिक अनुसंधान को बढ़ावा देने, स्थानीय समुदायों को सक्रिय भागीदारी के लिए तैयार करने और नीति-निर्माताओं को सख्त कदम उठाने की आवश्यकता है। स्वस्थ पर्यावरण और जैव विविधता की सुरक्षा केवल सरकारी प्रयासों से नहीं, बल्कि समाज के हर वर्ग की सहभागिता से ही संभव है।

(लेखक उत्तर प्रदेश सचिवालय, लखनऊ में विशेष सचिव हैं)

17 महत्वपूर्ण मेगाडायवर्स देशों में से एक है भारत जैव विविधता के मामले में। यहां के वनों, घासभूमियों और कृषि-क्षेत्रों में कई विदेशी पौधे प्रवेश कर चुके हैं और उनका प्रसार स्थानीय पारिस्थितिकी को चुनौती दे रहा है।

भारत में पाई जाने वाली प्रमुख आक्रामक विदेशी प्रजातियां

लैंटाना कैमारा (पंचफूली/गंधैल)
सजावटी झाड़ी के रूप में मूल रूप से दक्षिण अमेरिका से लाया गया यह पौधा आज मध्य भारत, पश्चिमी घाट और हिमालयी क्षेत्रों में फैल चुका है। यह स्थानीय झाड़ियों और घासों को पूरी तरह दबा देता है। इसकी सूखी टहनियां जंगल की आग को और भयावह बना देती हैं। इससे बाघों के आवासों और चरागाहों में देसी वनस्पति का भी नुकसान हो रहा है।

पार्थेनियम हिस्टेरोफोरस (गाजर घास)
1950 के बाद गेहूं की खेप के साथ भारत पहुंचा यह अत्यंत आक्रामक खरपतवार अब देशभर में फैल चुका है। कांग्रेस घास या गाजर घास के नाम से प्रचलित यह प्रजाति फसलों और चरागाहों को नुकसान पहुंचाती है, फसलों की पैदावार घटाती है और खेतों को बंजर करती है। इसके पराग और सूक्ष्म रेशे त्वचारोग, एलर्जी, श्वसन रोग और अस्थमा उत्पन्न करते हैं। जानवरों में भी एलर्जी का कारण बनता है।

आइकोर्निया क्रैसिपेस (जलकुंभी)
बोलचाल में इसे जलकुंभी कहते हैं। जल निकायों में तेजी से फैलने वाली यह प्रजाति पानी की सतह को पूरी तरह से ढककर सूर्य के प्रकाश को कम करने के साथ ही पानी में आक्सीजन का स्तर कम कर देती है। इससे जलीय जीवन को खतरा होता है।

प्रोसोपिस जूलीफ्लोरा (विलायती बबूल)
देसी भाषा में विलायती बबूल के नाम से प्रचलित प्रोसोपिस ने पर्यावरण, भूजल स्तर, जैव विविधता और स्थानीय कृषि अर्थव्यवस्था को गंभीर रूप से नुकसान पहुंचाया है। शुष्क और बंजर जमीन को हरा-भरा बनाने के लिए लाई गई इस प्रजाति ने स्थानीय पौधों को नष्ट कर दिया। यह अत्यधिक भूजल का दोहन करता है, जिससे भूजल स्तर गिरता है तथा इसकी जड़ें मिट्टी को कठोर और अम्लीय बना देती हैं।

मिमोसा डिप्लोट्रिका
कांटेदार बेल के रूप में तेजी से फैलने वाले मिमोसा डिप्लोट्रिका की घने झाड़-जंगल जैसी संरचना सूर्य के प्रकाश को जमीन तक पहुंचने ही नहीं देती, जिससे घास और छोटे पौधे दम तोड़ देते हैं। इसकी कांटेदार शाखाएं पशुओं के चरने में बाधा बनती हैं और खेतों को भी अनुपयोगी बना देती हैं। एक बार स्थापित होने के बाद इसे उखाड़ना अत्यंत कठिन हो जाता है।

किताबघर

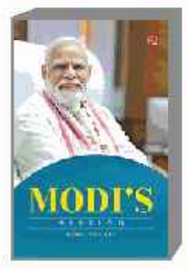

मोदीज मिशन
बर्जिस देसाई
कथेतर
प्रथम संस्करण: 2025
रूपा पब्लिकेशन इंडिया प्रा. लि., नई दिल्ली
मूल्य: 595 रुपये

नवभारत की परिकल्पना

यतीन्द्र मिश्र

भारतीय राजनीति के वर्तमान परिदृश्य में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ऐसे व्यक्तित्व हैं, जिनकी उपस्थिति मात्र से विमर्श की दिशा निर्धारित हो जाती है। वडनगर की एक साधारण चाय की दुकान से लेकर विश्व मंचों पर भारत की सशक्त आवाज बनने तक का यह सफर केवल एक व्यक्ति की उपलब्धियों का इतिहास नहीं, राष्ट्र चेतना के पुनर्जागरण की गाथा है। द प्रीडेस्टिनेड प्राइम मिनिस्टर- अर्थात् वह प्रधानमंत्री, जिसकी नियति स्वयं राष्ट्र-निर्माण से जुड़ी हो। बर्जिस देसाई की 'मोदीज मिशन' इसी विलक्षण यात्रा को केंद्र में रखती है। संघर्षों से भरे बचपन, संघ के संस्कारों, कर्मनिष्ठ युवावस्था और गुजरात के विकासकालीन अनुभवों ने मिलकर नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व को गहराई और दिशा प्रदान की। इन विविध अनुभवों ने उनके भीतर ऐसा दृष्टिकोण विकसित किया, जिसने शासन को केवल सत्ता संचालन नहीं, बल्कि जनसेवा, पारदर्शिता और परिणामोन्मुखता का माध्यम बना दिया। पुस्तक में उनके नेतृत्व में लिए गए ऐतिहासिक निर्णयों का विस्तृत विश्लेषण है- अनुच्छेद 370 का हटाया जाना, अर्थव्यवस्था का औपचारिकीकरण, जीएसटी का क्रियान्वयन, नोटबंदी का साहसिक निर्णय तथा शासन में पारदर्शिता और जवाबदेही स्थापित करने के सतत प्रयास। किस प्रकार मोदी ने बीते वर्षों में भारत को केवल एक उभरती हुई अर्थव्यवस्था नहीं, बल्कि एक गौरवशाली और आत्मविश्वासी सभ्यता के रूप में विश्व मंच पर स्थापित किया।

अयोध्या में श्रीराम जन्मभूमि मंदिर पुनर्निर्माण, आपरेशन सिंदूर में सेना का पराक्रम, जीरो टालरेंस नीति के तहत आतंकवाद पर कठोर रुख, कोविड संकट का कुशल प्रबंधन, सी.ए.ए. और कश्मीर सहित राष्ट्रनिर्माण और राष्ट्रीय गौरव के अन्य निर्णायक अध्यायों में नरेन्द्र मोदी का नेतृत्व एक सशक्त और प्रेरक रूप में उभरता है। गुजरात के मुख्यमंत्री बनने पर जब किसी ने रिश्तेदारी के नाम पर अनुचित लाभ मांगा, तो मोदी ने स्पष्ट कहा- 'मोदी नो कोई सगो नाथी' (मोदी का कोई सगा नहीं)। उन्होंने मां के सिवा सभी पारिवारिक नातों से स्वयं को बिना किसी पछतावे के अलग कर लिया। देसाई पुस्तक में उन भ्रांत धारणाओं का भी प्रतिवाद करते हैं, जिन्हें तथाकथित बौद्धिक वर्गों ने नरेन्द्र मोदी के शासन को लेकर फैलाया। भारत का बौद्धिक अभिजात वर्ग आज भी नरेन्द्र मोदी को समझ नहीं पाया है, वे एक साधारण पृष्ठभूमि से उठे, राष्ट्र-चेतना से प्रेरित नेता को स्वीकार नहीं कर सके। पुस्तक उन मिथकों को तोड़ने और नरेन्द्र मोदी के वास्तविक स्वरूप को समझने का प्रयास है। लेखक न किसी राजनीति से जुड़े हैं, न किसी सरकारी संस्था या विचारधारा से और यही निष्पक्षता उन्हें नरेन्द्र मोदी के व्यक्तित्व और कार्य को वस्तुनिष्ठ दृष्टि से देखने की स्वतंत्रता देती है। उनके अनुसार, नरेन्द्र मोदी के बाद आने वाले प्रधानमंत्री, चाहे किसी भी दल के हों, उन्हें नरेन्द्र मोदी की कसौटी पर ही आंका जाएगा। विकास और राष्ट्रगौरव का संतुलन साधते हुए मोदीज मिशन अब भी अपने नियत पथ पर अग्रसर है- और आने वाले वर्षों में भारत की सामूहिक चेतना को दिशा देता रहेगा।

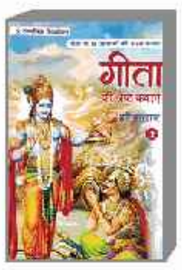

गीता की श्रेष्ठ कथाएं भाग-1 एवं 2
हरि भारद्वाज
कहानी संग्रह
प्रथम संस्करण, 2025
सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली
मूल्य: 500 रुपये (दो खंड)

पराक्रम और सत्य का आत्यंतिक मिलन

भारतीय मनीषा और प्रज्ञा को आलोकित करने वाले सर्वश्रेष्ठ दार्शनिक ग्रंथ के रूप में श्रीमद्भगवतगीता का स्थान सर्वोपरि माना जाता है। हिंदी और अंग्रेजी समेत लगभग समस्त भारतीय भाषाओं में इस पर विभिन्न कालखंडों में टीकाएं, व्याख्या, निबंध, औपन्यासिक कृतियां और नाटक आदि लिखे गए। बाल गंगाधर तिलक की टीका हो या कि वासुदेव शरण अग्रवाल द्वारा लिखित भारत सावित्री, ढेरों ग्रंथों ने गीता का प्रणयन किया है और उसकी आधुनिक व्याख्याएं प्रस्तुत की हैं। वरिष्ठ लेखक हरि भारद्वाज की दो खंडों में प्रकाशित गीता की श्रेष्ठ कथाएं, गीता के 18 अध्यायों की सरल 18 बोध-कथाएं हैं, जिससे गीता को समझने की एक सहज और मानवीय दृष्टि मिलती है। भूमिका में वे मानते हैं- 'गीता कृष्ण ने कही नहीं है। गीता कृष्ण से बही है। जैसे गंगा हिमालय से बहती है। कृष्ण गीता के रचयिता नहीं हैं। रचयिता तो परमात्मा हैं, परम शक्ति है। स्रोत तो परम चेतना है, परम ऊर्जा है।' गीता के इस आत्यंतिक सत्य को पहचानते हुए और उसी के साथ अर्जुन के आत्मबोध को श्रीकृष्ण द्वारा जगाने की दार्शनिक प्रक्रिया के फलस्वरूप निर्मित हुई ये कहानियां प्रेरक लगती हैं।

पहली ही कथा 'शोक' कुरुक्षेत्र में हताश अर्जुन के द्वंद्व को समझने की प्रक्रिया का अंग है, जिसमें श्रीकृष्ण यह सिद्ध करते हैं कि एक योद्धा की तलवार ही उसका हाथ है और धनुष-बाण ही उसका आत्मा। हालांकि शोक-ग्रस्त मन से अर्जुन धनुष-बाण और दूसरे सभी आयुध त्यागकर, रथ के पार्श्व भाग में जाकर बैठ जाता है। 'स्वधर्म' कहानी में यह बात रेखांकित होती है कि परधर्म में निजता कैसे ढूंढी जा सकती है। 'पद्म-पत्र' में कृष्ण द्वारा कर्मों के सिद्धांत को समझाने का व्यावहारिक पक्ष उभरता है, जबकि समस्त तर्कों को सुनने के बावजूद अर्जुन उतना ही उलझता जाता है। नैतिक और अनैतिक, अस्तित्व और परमात्मा का स्वीकार, ज्ञान और आत्मा के प्रकाश की चर्चा इस कहानी को विस्तार देती है। 'अंतर्यात्रा' में अपने आभ्यंतर की अंतःपरिक्रमा चलती है, जिसमें योग और विज्ञान के बहाने वृत्तियों के शुद्धतम साक्षात्कार की बात हुई है। 'ऐश्वर्य' कहानी में मन की निश्चल अवस्था में श्रद्धा और भक्ति से युक्त होकर हरि को पाने की दार्शनिकता अर्जुन को समझाई जाती है। यहां पुरुषार्थ को बड़े स्वरूप में देखा गया है और निश्चल ध्यान योग द्वारा परमात्मा में सन्निहित होने का भाव निहित है। इसी तरह की अन्य कहानियां अर्जुन में जिजीविषा, कर्तव्यबोध, पराक्रम, क्षत्रिय धर्म और धर्म की स्थापना के संदर्भ में युद्ध करने की तर्कसंगत व्याख्या के तहत रची गई हैं, जिसमें 'दर्शन', 'माया', 'त्रिगुण', 'संपदा', 'समर्पण', 'परिचय' और 'संभवामि युगे-युगे' जैसी कहानियां अन्यतम रूप से सत्य के द्वार को खोलने का जतन करती हैं। एक ऐसी युक्ति को सुलझाने की कोशिश, जिसके तहत मनुष्य की सारी जिज्ञासा, खोज और उपलब्धि किसी वृहत्तर अर्थ के लिए तिरोहित हो जाती है।

आप भी कुछ कहना चाहते हैं.. **kitabghar@nda.jagran.com**

टैरो कार्ड्स

मां प्रेम ऋतंभरा

सितारे बोलते हैं
16 से 22 नवंबर, 2025

ओशो कहते हैं, सभी इन्कार तनाव पैदा करते हैं। आप आराम करना चाहते हैं, तो स्वीकार ही एकमात्र रास्ता है। जो कुछ भी चारों ओर हो रहा है उसे स्वीकार करें, उसे एक समग्र रूप में विकसित होने दें।

मेष (ARIES) (21 मार्च-20 अप्रैल) शुभ अंकः 10 शुभ रंगः स्काई ब्लू
व्यक्तिगत और व्यावसायिक गतिविधियों में संतुलन बनाए रखेंगे। पुराने ढर्रे, व्यसनों और सीमाओं से दूर जाने में सफलता मिलेगी। आपकी शैली, प्रतिभा और व्यक्तित्व के कारण आपको देखा, पहचाना और सुना जाएगा। आप विभिन्न व्यक्तित्वों के बीच अपनी चमक बिखेरेंगे। थोड़े समय के संघर्ष के बाद सफलता मिलेगी। व्यक्तिगत संबंधों में स्थिरता बनी रहेगी और व्यवसाय में आपकी एक शक्तिशाली स्थिति होगी।

वृष (TAURUS) (21 अप्रैल-21 मई) शुभ अंकः 7 शुभ रंगः रायल ब्लू
साहस के साथ नए अवसरों का लाभ उठाएंगे और ऐसे निर्णय लेंगे, जो आपके जीवन की दिशा बदल सकते हैं। व्यक्तिगत संबंधों और व्यावसायिक उपक्रमों में अपार ऊर्जा और उत्साह का संचार करेंगे। सामाजिक जीवन व्यस्त और थका देने वाला रहेगा। जीवन में नए व्यक्ति के प्रभाव से ताजगी भरे पल सामने आएंगे। आप व्यक्तिपरक और व्यावसायिक परिस्थितियों में प्रतिभाशाली सिद्ध होंगे। प्रेम और रोमांस के योग बनेंगे।

मिथुन (GEMINI) (22 मई-21 जून) शुभ अंकः 15 शुभ रंगः चाकलेट ब्राउन
फैसला लेने से पहले दिल के साथ-साथ दिमाग की भी सुनें। मन :स्थिति और भ्रम से सावधान रहें। निजी रिश्तों में प्रेम और उत्सव मजबूती लाने का कारक बनेंगे। परिवार और साथियों पर निर्भर रहने से बचें। परिवार के लिए सामंजस्य बिठाकर काम करेंगे। जीवन में जो भी आएगा, उसे बिना किसी अपेक्षा या मांग के कृतज्ञता के साथ स्वीकार करेंगे। प्रकृति के बीच समय बिताएंगे।

कर्क (CANCER) (22 जून-22 जुलाई) शुभ अंकः 3 शुभ रंगः रेड
उन लोगों के प्रति अपनी वफादारी रहेंगेग, जिनकी आप परवाह करते हैं और जिन पर विश्वास करते हैं। पेशेवर और व्यावसायिक मामलों में सक्रिय, कुशल और चतुर साबित होंगे। बौद्धिक और रचनात्मक गतिविधियों से लाभ मिलेगा। दूसरों की भावनाओं और मनोभावों के प्रति उदासीन रहने के प्रति सावधान रहें। नई शुरुआत करने के लिए खुद को और दूसरों को माफ करें।

सिंह (LEO) (23 जुलाई-23 अगस्त) शुभ अंकः 2 शुभ रंगः चेरी रेड
प्रतिस्पर्धियों के साथ कूटनीति और व्यावसायिक परियोजनाओं में रचनात्मक रवैया अपनाएं। स्वजनों के साथ आनंद और प्रेमपूर्ण समय बिताएंगे। दोस्तों और आस-पास के लोगों की परवाह करेंगे। विचारों के प्रतिग्रहणशील और खुले रहेंगे। महिलाएं जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगी। एकीकरण, सहयोग और समर्थन से व्यावसायिक सफलता मिलेगी।

कन्या (VIRGO) (24 अगस्त-23 सितंबर) शुभ अंकः 1 शुभ रंगः एमराल्ड ग्रीन
भ्रमों से परे जाकर व्यावसायिक और व्यक्तिगत पहलुओं में चीजों को उनके वास्तविक रूप में देखेंगे। सत्य को अपने भीतर खोजें। महत्वपूर्ण निर्णय लेते समय दिल और दिमाग अलग-अलग दिशाओं में ले जाएंगे। इस दौरान अंतर्मन की सुनें। करियर विकल्पों और व्यक्तिगत निर्णयों में स्वतंत्रता को प्राथमिकता दें। ध्यान के जरिए शांति और स्पष्टता महसूस करेंगे। सेहत और वित्तीय स्थिति के प्रति सतर्क रहें।

तुला (LIBRA) (24 सितंबर-23 अक्टूबर) शुभ अंकः 6 शुभ रंगः फारेस्ट ग्रीन
चीजें तेजी से घटेंगी और आपको त्वरित निर्णय लेने के लिए तैयार रहना होगा अन्यथा आप महत्वपूर्ण संपर्कों और अनुभवों से चूक सकते हैं। व्यावसायिक अवसर रोमांचक होंगे और उन्हें तलाशने की आवश्यकता होगी। विदेश से संचार और मित्र अप्रत्याशित रूप से खुशी लाएंगे। जैसे-जैसे आप अधिक स्वतंत्रता और स्वायत्तता देंगे, व्यक्तिगत और व्यावसायिक संबंधों में नई जान आएगी। यात्रा के योग बनेंगे।

वृश्चिक (SCORPIO) (24 अक्टूबर-22 नवंबर) शुभ अंकः 10 शुभ रंगः रायल ब्लू
अधीर होकर पेशेवर तथा निजी जीवन से जुड़े मामलों में जल्दबाजी करने से बचें। कामों का अपने समय पर पूर्ण होने की प्रतीक्षा करना ही आपके लिए बेहतर होगा। सफलता और विफलता दोनों का सामना करना पड़ सकता है। इसलिए आपके लिए शांत और धैर्यवान बने रहना जरूरी है। नकारात्मक विचारों को दूर रखने का प्रयास करें। सप्ताह के अंत में समय आत्मचिंतन के लिए अच्छा रहेगा।

धनु (SAGITTARIUS) (23 नवंबर-23 दिसंबर) शुभ अंकः 4 शुभ रंगः एमराल्ड ग्रीन
पारिवारिक मामलों में सौम्य और विनम्र रहेंगे और निजी रिश्तों में सहयोगी साबित होंगे। काम के मामले में व्यस्त रहेंगे। आंतरिक ऊर्जा का संतुलन रिश्तों और रचनात्मक कार्यों में झलकेगा। सप्ताह के अंत में दोस्तों के साथ गलतफहमी दूर कर सकेंगे। आंतरिक आवाज सुनने के लिए जागरूक और सचेत रहें। पुरानी नकारात्मक आदतों को छोड़कर जिंदगी को आगे बढ़ाने का अवसर है।

मकर (CAPRICORN) (24 दिसंबर-20 जनवरी) शुभ अंकः 8 शुभ रंगः रेड
स्थितियों का विरोध करने के बजाय चीजों के बदलने का इंतजार करें। एक बार में एक कदम उठाने से आप सफलता के शिखर पर पहुंच सकेंगे। नकारात्मक सोचकर और सबसे बुरी कल्पना कर के खुद पर जो दबाव डाल रहे हैं, इस सप्ताह वह निश्चित रूप से दूर होगा। पुराने ढर्रे से हटकर कुछ नया करने की कोशिश करेंगे। महत्वपूर्ण विकल्प चुनने के अवसर मिलेंगे। भौतिक लाभ प्राप्त होगा।

कुंभ (AQUARIUS) (21 जनवरी-19 फरवरी) शुभ अंकः 8 शुभ रंगः वाइट
दीर्घकालिक योजनाओं के बारे में अपने निर्णय, पसंद और बारीकियों से लगाव छोड़ेंगे तो नई संभावनाएं और रास्ते मिल जाएंगे। जीवन में जो हो रहा है, उसे स्वीकार करने के लिए तैयार रहें। जिस मुकाम की कल्पना करते रहे हैं, उसकी ओर कदम मजबूती से बढ़ेंगे। जीवन के इंद्रधनुषी रंगों, भावनाओं और ऊर्जा की ऊंचाइयों और गहराइयों के प्रति सजग और साक्षी बने रहेंगे।

मीन (PISCES) (20 फरवरी-20 मार्च) शुभ अंकः 8 शुभ रंगः लोटस पिंक
आर्थिक स्थिति, स्वास्थ्य, छोटी-छोटी बातों को लेकर चिंतित रहेंगे। सप्ताह के अंत तक अच्छी खबर और रचनात्मक अवसर मिलेंगे। पैटर्न को तोड़ने में सक्षम होंगे। योग और ध्यान आपको चेतना के उच्च स्तर पर ले जाएंगे। अवसाद तथा विलंब के दौर के बाद जीवन में प्रेम लाएंगे। जैसे-जैसे वर्ष का अंत करीब आएगा, आप जागरूकता और साक्षीभाव के साथ अस्तित्व के साथ अपना गहरा संबंध पाएंगे।

****

इधर... मोतियाबिंद कांड की जांच पूरी, जांच रिपोर्ट सौंपी

ओटी का प्रोटोकॉल सही, दवाइयां ठीक तो आंखों में इंफेक्शन के लिए कौन जिम्मेदार?

एक्सक्लूसिव

पीलूराम साहू
patrika.com

रायपुर. बीजापुर जिला अस्पताल में हुई मोतियाबिंद सर्जरी के बाद आंखों में इंफेक्शन के लिए आखिर कौन जिम्मेदार है? दरअसल तीन सदस्यीय जांच टीम को सर्जरी व इसके बाद उपयोग की गई दवाइयां ठीक मिली हैं। ऑपरेशन थिएटर भी प्रोटोकॉल के अनुसार पाया गया। हालांकि कुछ दवाइयों के कुछ सैंपल व सर्जरी में उपयोग किए गए उपकरण को जांच के लिए भेजा गया है। बड़ा सवाल है कि बिना रिपोर्ट टीम ने कैसे मान लिया कि दवाइयां ठीक क्वॉलिटी की हैं? कमेटी ने रिपोर्ट हैल्थ डायरेक्टर डॉ. प्रियंका शुक्ला को सौंप दी है। बीजापुर जिला अस्पताल में 24 अक्टूबर को मोतियाबिंद सर्जरी कराए 9 लोगों की आंखों में इंफेक्शन के बाद 12 नवंबर को आंबेडकर अस्पताल लाया गया था। मामले की गंभीरता को देखते हुए स्वास्थ्य विभाग ने जांच के लिए तीन सदस्यीय कमेटी बनाई थी। कमेटी ने बीजापुर जाकर व मरीजों से बातचीत कर जांच पूरी कर ली हैं। रिपोर्ट भी सौंप दी गई है। पत्रिका ने जांच कमेटी के एक सीनियर अधिकारी से बात की तो चौंकाने वाली बात सामने आई। उक्त अधिकारी का कहना है कि आई ओटी में नियम विरुद्ध कुछ नहीं मिला। यानी जैसे आई ओटी होना चाहिए, वैसा ही मिला है। यहां सवाल ये उठता है कि आखिर जांच टीम के पहुंचने के पहले क्या ओटी को मैनेज नहीं किया जा सकता? अगर ओटी सही है तो मरीजों की आंखों में इंफेक्शन की क्या वजह हो सकती है?

मरीजों से नहीं हो सकी बात

पत्रिका रिपोर्टर शनिवार की दोपहर 12 बजे नेत्र रोग विभाग की ओपीडी में मरीजों से बातचीत करने पहुंचा। स्टाफ ने बताया कि सभी को जांच के लिए ओटी ले जाया गया है। आधे घंटे के इंतजार के बाद भी कोई मरीज वार्ड नहीं पहुंचा। दरअसल केस की गंभीरता को देखते हुए मरीजों की रोज आंखों की जांच की जा रही है।

जांच रिपोर्ट सौंप दी

जांच पूरी हो गई और रिपोर्ट उच्चाधिकारियों को सौंप दी गई है। ओटी प्रोटोकॉल के अनुसार मिला। दवाइयां भी ठीक मिली हैं। बाकी ज्यादा डिटेल जानकारी उच्चाधिकारी दे पाएंगे।

-डॉ. निधि अत्रिवाल, जांच कमेटी की सदस्य व स्टेट नोडल अफसर अंधत्व नियंत्रण कार्यक्रम

उधर... जिला फोरम ने डॉक्टर को 5500 रुपए देने को कहा

डॉक्टर ने फीस लेकर भी नहीं किया इलाज, मरीज ने जिला फोरम में 4 साल लड़ी लड़ाई

पत्रिका ब्यूरो
patrika.com

रायपुर. फीस लेने के बाद भी उपचार नहीं करने वाले डॉक्टर पर जिला उपभोक्ता फोरम ने जुर्माना लगाया है। 500 रुपए के लिए 4 साल से लड़ाई लड़ने वाले मरीज को आयोग ने यह न्याय दिलाया। मरीज ने डॉक्टर की लापरवाही साबित करने के लिए जिला फोरम के समक्ष दस्तावेजी साक्ष्य पेश किए। इसमें बताया कि डॉक्टर ने बिना दवाई और प्रिसक्रिप्शन लिखे उसे लौटा दिया था। इसके चलते दूसरे अस्पताल में उपचार कराना पड़ा। सुनवाई के बाद फोरम ने डॉक्टर को 6 फीसदी ब्याज के साथ 500 रुपए लौटाने का आदेश दिया। इसके साथ ही उपभोक्ता को मानसिक कष्ट व वाद व्यय के 5000 रुपए देने का आदेश दिया।

फोरम ने माना सेवा में निम्नता : श्रीराम पाण्डे ने फोरम के समक्ष अपना तर्क प्रस्तुत किया। इसमें बताया कि फीस जमा करने और टेस्ट रिपोर्ट देखने के बाद भी डॉक्टर ने प्रिस्क्रिप्शन और दवाइयां नहीं लिखीं। जबकि उनकी हालत को देखते हुए तत्काल दवाई दी जानी चाहिए थी। वहीं, रिसर्च सेंटर ने उपभोक्ता के दावे को गलत बताते हुए दवाइयां और प्रिस्क्रिप्शन लिखने की बात कही। रिसर्च सेंटर का कहना था कि बदनाम करने के लिए झूठा मामला पेश किया गया है। इसके कारण उनकी छवि धूमिल होने के साथ ही मान-प्रतिष्ठा को ठेस पहुंची है। रिसर्च सेंटर ने इस दौरान यह भी आरोप लगाया कि उन्हें परेशान करने के लिए विधिक सूचना भेजी गई थी, जिसका उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम में कोई प्रावधान नहीं है।

दूसरे डॉक्टर से इलाज कराना पड़ा

रायपुर की समता कॉलोनी निवासी श्रीराम पाण्डे (47) ने 1 सितंबर 2021 को लैब में शुगर की जांच कराई। शुगर लेबल 233 होने का पता चलने पर लैब संचालक ने श्रीराम को डॉक्टर से सलाह लेने का सुझाव दिया था। रिपोर्ट लेकर वह 2 सितंबर को राजातालाब स्थित परिधि डायबीटिक एंड रिसर्च सेंटर पहुंचे। यहां नियमानुसार 500 रुपए फीस देने के बाद डॉक्टर मनोज अग्रवाल से मिले। डॉक्टर ने रिपोर्ट देखने के बाद वापस लौटा दिया। कोई जवाब नहीं मिलने पर श्रीराम को दूसरे डॉक्टर से उपचार कराना पड़ा था। घटना से आहत श्रीराम पाण्डे ने अपने अधिवक्ता से माध्यम से विधिक नोटिस भेजा। डॉक्टर ने इसका भी जवाब नहीं दिया। इस पर श्रीराम ने फोरम का दरवाजा खटखटाया।

हादसा

बीएसपी में निर्माण कार्य के दौरान मजदूर गिरा, मौत

पत्रिका ब्यूरो
patrika.com

भिलाई . बीएसपी के स्टील मेल्टिंग शॉप-2 (एसएमएस-2) में निर्माणाधीन प्रोजेक्ट बिल्डिंग में बुधवार को बड़ा हादसा हो गया। मेकॉन कंपनी की सुपरविजन में चल रहे इस निर्माण कार्य में पेटी ठेकेदार एम. मोहन के अधीन काम कर रहे वर्षीय देवेंद्र चंद्राकर(43) की ऊंचाई से गिरकर मौत हो गई। प्राप्त जानकारी के अनुसार, बिल्डिंग निर्माण के लिए ऊपर तक सामान पहुंचाने एक ट्रॉलीनुमा स्ट्रक्चर लगाया गया था। मजदूर देवेंद्र ने सुरक्षा के लिए अपना हार्नेस उसी स्ट्रक्चर पर लगाया था। अचानक स्ट्रक्चर का हिस्सा टूट गया और देवेंद्र भी उसके साथ नीचे आ गिरा। जमीन पर गिरने से उसे गंभीर चोटें आईं। साथियों ने तुरंत उसे नीचे से उठाया, लेकिन तब तक उसकी मौत हो चुकी थी।

कार्रवाई

नकली ब्रॉन्ड का पेयजल बेचने पर 1.80 लाख का जुर्माना

पत्रिका ब्यूरो
patrika.com

राजनांदगांव. खाद्य सुरक्षा मानकों का उल्लंघन करते हुए मिथ्या छाप पैकेज्ड ड्रिंकिंग वाटर का उत्पादन और बिक्री करने पर ग्राम कोपेडीह स्थित मेसर्स समरस इंडस्ट्रीज के संचालक भवदीप सिंह पर कड़ी कार्रवाई की गई है। अतिरिक्त जिला दंडाधिकारी एवं न्याय निर्णयन अधिकारी, राजनांदगांव ने मामले की सुनवाई के बाद संचालक पर एक लाख 80 हजार रुपए का जुर्माना लगाया है। अधिकारियों की जांच में यह तथ्य सामने आया कि संस्थान द्वारा 'पोपो एक्वा पैकेज्ड ड्रिंकिंग वाटर' (250 एमएल) का उत्पादन मिथ्या छाप लेबल लगाकर किया जा रहा था।

पश्चिम बंगाल में भी जंगलराज : साय

रायपुर@पत्रिका. जनता ने पीएम मोदी पर भरोसा जताया है। बिहार में एनडीए की बड़ी जीत हुई है। पहले बिहार को कुशासन और जंगलराज से जोड़कर देखा जाता था। लेकिन अब एनडीए सरकार में सुशासन और विकास हो रहा है। यह बात मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने शनिवार को बस्तर रवाना होने से पहले बिहार चुनाव के परिणाम को लेकर कही। उन्होंने पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव की ओर इशारा करते हुए कहा पश्चिम बंगाल में भी जंगलराज है, वहां की जनता भी उससे छुटकारा चाहती है।

तैयारी छत्तीसगढ़ अंजोर विजन 2047 का रखना होगा ध्यान

मनमर्जी से बजट नहीं बना सकेंगे सरकारी विभाग

पत्रिका ब्यूरो
patrika.com

रायपुर. वर्ष 2026-27 के लिए राज य के बजट की तैयारी शुरू हो गई है। रजत जयंती वर्ष को ध्यान में रखते हुए राज्य सरकार भविष्य के लिए आवश्यक पहलुओं को बजट में शामिल करने का प्लान बनाया है। इस बार सरकारी विभाग बजट बनाने में अपनी मनमर्जी नहीं चला पाएंगे।

बजट बनाने से पहले विभागों को इसके उद्देश्य, लक्ष्य और परिणाम की जानकारी देनी होगी। साथ ही विभागों को छत्तीसगढ़ अंजोर विजन 2047 और सतत विकास के लक्ष्यों (2030) को शामिल करते हुए बजट तैयार करना होगा। ऐसा पहली बार हो रहा है कि जब भविष्य को ध्यान में रखकर बजट की रूपरेखा तैयार की जा रही है। विभागों को अपना बजट प्रस्ताव 21 नवंबर तक वित्त विभाग के पास भेजना होगा। इसके साथ ही वित्त विभाग ने यह भी स्पष्ट कर दिया है कि सभी विभाग योजनावार अलग-अलग जानकारी देंगे। बजट के साथ उसका औचित्य भी बताना होगा। यदि कोई नई योजना लागू की जानी है, तो विभागों को उसका बजट प्रस्ताव अलग से भेजना होगा। इसके साथ ही इसके आय-व्यय का संभावित लेखाजोखा भी देना अनिवार्य होगा।

बजट प्रस्ताव तैयार करते समय सभी विभागों को उसके दूरगामी परिणामों को ध्यान में रखना आवश्यक होगा। इनकी पूर्ति के लिए विभाग आवश्यकतानुसार नवीन योजनाओं को भी प्रस्ताव में शामिल करेंगे।

भविष्य का रोडमैप वाला होगा राज्य का बजट

बजट के उद्देश्य-परिणाम की भी देनी होगी जानकारी

सिर्फ 5 फीसदी वृद्धि कर सकेंगे विभाग

इस बार सबसे खास बात यह भी होगी कि सभी विभाग अपने बजट के आकार में सिर्फ फीसदी ही वृद्धि कर सकेंगे। इसमें अनावश्यक जरूरतों को शामिल करके ज्यादा बजट नहीं मांग सकते। इस संबंध में वित्त विभाग ने साफ निर्देश भी दिए हैं। हालांकि पिछले बजट में 2 विभाग ऐसे थे, जहां 100 फीसदी से अधिक की वृद्धि हुई थी। इनमें वाणिज्य एवं उद्योग विभाग में 119 फीसदी और खेल एवं युवा कल्याण विभाग में 100 फीसदी की वृद्धि की गई थी।

नौकरी और नई योजनाओं की सौगात

आगामी बजट में सरकार कई विभागों में नौकरी की सौगातें दे सकती हैं। शिक्षा विभाग में करीब 4700 से अधिक पदों पर भर्ती की तैयारी की जा रही है। इसके अलावा मोदी की गारंटी के तहत दो-तीन नई योजनाओं की भी घोषणा बजट में हो सकती है। बता दें कि इससे पहले वित्त विभाग ने सभी विभागों से रिक्त पदों की जानकारी भी मांगी थी।

विजन 2047 का रखेंगे विशेष ध्यान

विकसित भारत और विकसित छत्तीसगढ़ को ध्यान में रखकर बजट तैयार किया जा रहा है। विजन 2047 का भी विशेष ध्यान रखा जाएगा। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के विजन की झलक बजट में दिखाई देगी। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय की मंशा के अनुरुप नए प्रावधान भी किए जाएंगे।

-ओपी चौधरी, वित्त मंत्री

विदेश से मिलने वाली सहायता की जानकारी मांगी

सभी विभागों को अलग-अलग मिलने वाली सहायता राशि की जानकारी अलग से देनी होगी। इसमें विदेश से मिलने वाली सहायता को भी अलग से बताना होगा। वित्त विभाग ने कहा कि योजना का संक्षिप्त विवरण दिया जाए, जिसमें योजना का स्वरूप तथा उद्देश्य का उल्लेख किया जाए। इसमें केन्द्र/एजेंसी के साथ ही राज्यांश के अनुपात का स्पष्ट उल्लेख होना चाहिए।

मंत्रियों की पसंद को भी महत्व

वित्त विभाग अपने बजट को अंतिम रूप देने से पहले सभी से सलाह भी लेता है। इसके तहत आम जनता से भी सुझाव लिए जाएंगे। इसके अलावा बजट को अंतिम रूप देने से पहले मंत्रियों के साथ अलग-अलग बैठक होंगी। इसमें उनकी पसंद के बारे में जानकारी ली जाएगी। बता दें कि वित्त विभाग सबसे पहले विभागों से अलग-अलग जानकारी मंगवाता है। इसके बाद प्रस्ताव मंगाया जाता है। इसके आधार पर विभाग के सचिवों से चर्चा की जाती है। विभाग की प्राथमिकताओं को समझा जाता है। इसके बाद ही विभाग के बजट को अंतिम रूप दिया जाता है।

आधी-अधूरी तैयारियों के बीच धान खरीदी शुरू

रायपुर @पत्रिका. प्रदेश में शनिवार से धान खरीदी की शुरुआत आधी-अधूरी तैयारियों के बीच शुरू हुई है। कहीं ऑपरेटर नदारद थे तो कहीं पर कर्मचारी नहीं थे। पहले दिन 188 केंद्रों में 18639 क्विंटल धान की खरीदी हुई। कुछ खरीदी केंद्रों पर किसानों ने खुद अपना धान तौलने का काम किया। डिप्टी सीएम अरुण साव ने बिलासपुर जिले के सेंदरी केंद्र में वहीं डिप्टी सीएम विजय शर्मा ने कबीरधाम जिले के बोड़ला के महराजपुर में धान खरीदी की शुरुआत की। कांकेर में खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण विभाग की सचिव तथा राजस्व एवं आपदा प्रबंधन विभाग की आयुक्त रीना बाबा साहेब कंगाले ने धान खरीदी केन्द्रों का औचक निरीक्षण किया।

जनजातीय गौरव दिवस: भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती

मुख्यमंत्री साय बोले- जनजातीय समुदाय के विकास के लिए सरकार संकल्पित

पत्रिका ब्यूरो
patrika.com

जगदलपुर. मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय शनिवार को जगदलपुर आए और यहां जनजातीय गौरव दिवस कार्यक्रम में शामिल हुए। उन्होंने भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती के अवसर पर आयोजित इस कार्यक्रम में कहा कि केंद्र और छत्तीसगढ़ की सरकार जनजातीय समुदाय के समग्र विकास के लिए संकल्पित है। सीएम साय ने जनजातीय उत्थान और सम्मान के लिए उठाए गए ऐतिहासिक राष्ट्रीय कदमों का स्मरण करते हुए कहा कि जनजातीय कल्याण की दिशा में तीन बड़े मील के पत्थर रखे गए हैं। उन्होंने पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के दूरदर्शी नेतृत्व को याद किया, जिनके कार्यकाल में ही आदिवासी बहुल छत्तीसगढ़ और झारखंड राज्यों का गठन किया गया। मुख्यमंत्री ने इसे जनजातीय पहचान को सम्मान देने और उनके त्वरित विकास की दिशा में युगांतरकारी निर्णय बताया। इसके अतिरिक्त, अटलजी ने ही जनजातीय हितों की रक्षा और विकास हेतु एक अलग 'जनजातीय कार्य मंत्रालय' का गठन किया।

बिलासपुर

बिरसा मुंडा की प्रतिमा लगेगी

सीएम साय ने बिलासपुर में आयोजित कार्यक्रम में कहा कि यहां भी भगवान बिरसा मुंडा की आदमकद प्रतिमा स्थापित की जाएगी, साथ ही एक प्रमुख चौक का नामकरण भी उनके नाम पर किया जाएगा। लाल खदान ओवरब्रिज का नामकरण शहीद वीर नारायण सिंह के नाम पर किए जाने की घोषणा भी की गई।

हेट स्पीच: कोर्ट ने दो दिन के रिमांड पर भेजा

आपत्तिजनक टिप्पणी करने पर कथावाचक गिरफ्तार

पत्रिका ब्यूरो
patrika.com

बिलासपुर. तखतपुर क्षेत्र के पड़रिया रोड में चल रही श्रीमद्भागवत कथा के दौरान समाज विशेष पर आपत्तिजनक टिप्पणी करने के मामले में कथावाचक आशुतोष चैतन्य को पुलिस ने शनिवार को गिरफ्तार कर लिया। 12 नवंबर को उनकी टिप्पणी से आक्रोशित समाजजन थाने पहुंचे थे, जिसके बाद एफआईआर दर्ज की गई थी। हालांकि कथावाचक ने गलती मानते हुए सार्वजनिक रूप से क्षमा मांगी थी। पुलिस ने कथा स्थल से उन्हें हिरासत में लेकर कोर्ट में पेश किया, जहां से उन्हें दो दिन की रिमांड पर भेज दिया गया है।

करणी सेना के राष्ट्रीय अध्यक्ष राज पर केस

रायपुर. शहर के दो हिस्ट्रीशीटरों वीरेंद्र और रोहित तोमर पर कार्रवाई करने वाले पुलिस वालों को धमकी देने के मामले में मौदहापारा पुलिस ने करणी सेना के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉक्टर राज शेखावत पर केस दर्ज कर लिया है। पुलिस उन्हें गिरफ्तार करेगी। वीरेंद्र राष्ट्रीय करणी सेना का प्रदेश अध्यक्ष था। इस कार्रवाई पर नाराजगी जताते हुए राष्ट्रीय करणी सेना के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉक्टर राज शेखावत ने रायपुर पुलिस को धमकी दी थी। फेसबुक में वीडियो जारी करके हिस्ट्रीशीटर वीरेंद्र और रोहित के खिलाफ कार्रवाई करने वाले पुलिस वालों के घर में घुसने और जान से मारने की धमकी दी है। एसपी और टीआई के घर भी घुसने की चेतावनी दी है। पूरा मामला संज्ञान में आने के बाद पुरानीबस्ती थाना के पूर्व टीआई योगेश कश्यप ने मौदहापारा थाने में करणी सेना के राष्ट्रीय अध्यक्ष शेखावत के खिलाफ बीएनएस की धारा 224, 296, 351 के तहत एफआईआर दर्ज किया है।

हिंसा से मोहभंग: मुख्य धारा में की वापसी

तेलंगाना: नक्सली नेता आजाद समेत आठ का आत्मसमर्पण

पत्रिका ब्यूरो @जगदलपुर. तेलंगाना में नक्सली लीडर आजाद समेत अन्य 8 नक्सलियों ने हथियार डाल दिए। नक्सली आजाद तेलंगाना स्टेट कमेटी का लीडर है। वह छत्तीसगढ़ और तेलंगाना दोनों राज्यों में सक्रिय था। उस पर 40 लाख रुपए से ज्यादा का इनाम घोषित है। आत्मसमर्पण करने वालों में बड़ा नाम कोय्यादी संबय्या उर्फ आजाद का ही है। आजाद के अलावा, अब्बास नारायण उर्फ रमेश जो तकनीकी टीम का प्रभारी था इसने भी सरेंडर किया है। रमेश रामागुंडम इलाके में लंबे समय से सक्रिय था।

बीजापुर: बुजुर्ग को मौत के घाट उतारा

बीजापुर. बासागुड़ा थाना क्षेत्र के पूतकेल गांव में शुक्रवार देर रात तीन हमलावरों ने 60 वर्षीय धर्मा सोयम को घर में घुसकर टंगिए से मौत के घाट उतार दिया। पुलिस इसे नक्सलियों की करतूत मानकर जांच कर रही है। वारदात उस वक्त हुई जब धर्मा घर में सो रहा था। पत्नी के सामने ही ताबड़तोड़ वार कर उसकी हत्या कर दी।

एनएमसी ने कहा- छात्रों को फिल्टर करना अनिवार्य

ऑल इंडिया व स्टेट दोनों कोटे में छात्र, एमबीबीएस-बीडीएस की आवंटन सूची निरस्त

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

रायपुर. चिकित्सा शिक्षा विभाग ने शनिवार को स्ट्रे वेकेंसी राउंड की आवंटन सूची रद्द कर दी। यह कार्रवाई एनएमसी की मेडिकल काउंसिल कमेटी के आदेश के बाद की गई। एनएमसी के अनुसार कई छात्रों को ऑल इंडिया कोटे के तहत सीटें मिली हैं। इन्हीं छात्रों को कई राज्यों में स्टेट कोटे के तहत सीटें आवंटित की गई हैं। इससे समस्या खड़ी हो गई हैं। इन छात्रों को फिल्टर करना जरूरी है। नई आवंटन सूची बाद में जारी की जाएगी।

डीएमई कार्यालय ने शनिवार की सुबह स्ट्रे वेकेंसी यानी आखिरी राउंड के लिए 114 छात्रों की आवंटन सूची जारी कर दी। इन छात्रों को संबंधित मेडिकल कॉलेजों में 17 नवंबर तक एडमिशन लेना था। एनएमसी का मेल दोपहर में मिला। इसके बाद आनन-फानन में सूची रद्द कर दी गई। अब छात्रों को नई सूची के लिए इंतजार करना होगा। स्ट्रे वेकेंसी के लिए एमबीबीएस-बीडीएस की 114 सीटें खाली थीं। इनमें एमबीबीएस की 51 सीटें खाली थीं।

एनआरआई की महंगी सभी सीटें पैक, मैनेजमेंट की खाली

काउंसिलिंग के तीन राउंड में एनआरआई कोटे की महंगी 120 से ज्यादा सीटें भर गई हैं। अब केवल मैनेजमेंट व स्टेट कोटे की सीटें खाली हैं। इनमें 41 मैनेजमेंट व 10 स्टेट कोटे की सीटें शामिल हैं। दूसरे राउंड के बाद एनआरआई कोटे की 32 फीसदी यानी 57 सीटें खाली थीं। दरअसल इतनी सीटें खाली होने का कारण सितंबर में अचानक बढ़ी सीटें हैं। सीटें खाली रहने के कारण निजी मेडिकल कॉलेज वाले सीटों को लेकर मोलभाव भी कर रहे हैं। दरअसल ये इसलिए किया जा रहा था ताकि सीटें खाली न रहें और कॉलेज को नुकसान न उठाना पड़े।

113 नीट स्कोर में एडमिशन इसलिए प्रवेश में मारामारी

एनआरआई सीटों में प्रवेश के लिए मारामारी रहती है। ये इसलिए क्योंकि इसमें कम नीट स्कोर में प्रवेश हो जाता है। इस साल 720 में केवल 113 नंबर पाने पर निजी कॉलेज में एडमिशन हो गया था। इसमें करोड़पति लोग एनआरआई स्पांसर्ड कोटे के तहत प्रवेश कराते हैं। इसमें दो पीढ़ी तक के रिश्तेदार प्रवेश ले सकते हैं।

अंबिकापुर | शिशु रोग विशेषज्ञ की निगरानी में एसएनसीयू में चल रहा इलाज

गर्भ से अचानक गायब हो गया बच्चा, नर्सों ने खोजबीन की तो कमोड में मिला

पत्रिका ब्यूरो
patrika.com

अंबिकापुर. मेडिकल कॉलेज अस्पताल के एमसीएच में शनिवार को उस समय हड़कंप मच गया, जब महिला को पता चला कि उसके पेट में बच्चा हलचल नहीं कर रहा है। उसने इसकी जानकारी नर्सों को दी। नर्सों ने जब जांच की तो पता चला की पेट में बच्चा नहीं है और प्रसव हो गया है। पूछने पर उसने बताया कि कुछ समय पूर्व शौच के लिए गई थी, वहां जाकर देखा गया तो शौचालय के कमोड में नवजात के होने के संकेत मिले। इसके बाद सफाई कर्मचारियों द्वारा तत्काल कमोड को तोड़ा गया और नवजात को सुरक्षित बाहर निकाला गया। नवजात को विशेष निगरानी में एसएनसीयू में रखा गया है। सूरजपुर जिले के प्रतापपुर थाना क्षेत्र अंतर्गत निवासी 30 वर्षीय महिला 7 माह की गर्भवती थी।

13 नवंबर को प्रसव पीड़ा होने पर परिजन ने उसे इलाज के लिए प्रतापपुर अस्पताल में भर्ती कराया। उसकी गंभीर हालत को देखते हुए डॉक्टर ने उसे अंबिकापुर मेडिकल कॉलेज अस्पताल रेफर कर दिया। परिजन ने उसी दिन उसे एमसीएच अंबिकापुर में भर्ती कराया। यहां उसका इलाज चल रहा था। शनिवार की सुबह महिला वार्ड के ही शौचालय में शौच गई थी। शौच के बाद वह वापस बेड पर आ गई। कुछ ही देर में उसे एहसास हुआ की उसके पेट में बच्चा हलचल नहीं कर रहा है। वह हड़बड़ाई और इसकी जानकारी अस्पताल के नर्सों को दी। नर्सों ने जब जांच की तो पता चला की उसका प्रसव हो गया है। नर्सों ने पूछा की कहां गई थी। इस पर उसने बताया कि कुछ देर पूर्व वह शौच के लिए गई थी।

कमोड में था नवजात

परिजन व नर्सों ने शौचालय के कमोड में देखा तो नवजात के फंसे होने का पता चला। नर्सों ने तत्काल इसकी जानकारी सफाई व्यवस्था के सुपरवाइजर आशीष को दी। उसने सफाई कर्मियों को बुलाकर कमोड को तुड़वाया और सुरक्षित नवजात को बाहर निकाला गया। नवजात को विशेष निगरानी में एसएनसीयू में भर्ती किया गया है।

बच्चा पड़ गया था नीला

नवजात एसएनसीयू में शिशु रोग विशेषज्ञ डॉ. जेके रेलवानी के निगरानी में है। उन्होंने बताया कि बच्चे को जब कमोड से निकाला गया तो उसका शरीर नीला पड़ा था। हार्ट बीट कम चल रहे थे। अभी उसकी स्थिति में मामूली सुधार है। लेकिन उसे बचाने की पूरी कोशिश की जा रही है।

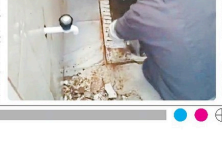

डाइट/न्यूट्रिशंस

गॉल ब्लेडर की सर्जरी के बाद अपनी डाइट में करें बदलाव

अंजलि फाटक
डायटीशियन, जयपुर
patrika.com

गॉल ब्लेडर या पित्ताशय लिवर के नीचे एक छोटा सा थैलीनुमा अंग होता है, जिसका काम होता है पाचन के लिए पित्त रस को जमा करना और भोजन के समय छोटी आंत में भेजना ताकि फैट आसानी से पच सके। गॉल ब्लेडर की सर्जरी के बाद यह प्रक्रिया बदल जाती है। ऐसे में खानपान का विशेष ध्यान रखने की जरूरत है ताकि पेट फूलना, गैस, दस्त या भारीपन जैसी समस्याएं न हों। जानते हैं गॉल ब्लेडर निकलवाने के बाद कैसा आहार लें...

भोजन करते समय रखें ध्यान

1. **हल्का** और पचने वाला भोजन लें जैसे दलिया, खिचड़ी, मूंग दाल, सूप और सब्जियां।
2. **कम** तेल व घी का प्रयोग करें। उबला, स्टीम्ड या ग्रिल्ड खाना बेहतर है।
3. **फाइबर** से भरपूर भोजन जैसे ओट्स, साबुत अनाज, फल, सब्जियां, दही लें। पेट दुरुस्त होगा।
4. **छोटी-**छोटी मात्रा में बार-बार खाएं। तीन बड़े भोजन की जगह 5-6 छोटे भोजन लें ताकि पाचन पर ज्यादा दबाव न पड़े। 8-10 गिलास पानी पीएं।
5. **प्रोटीन** के हल्के स्रोत जैसे मूंग, पनीर, टोफू, दालें और दही लें। हाई प्रोटीन फूड्स से बचें।
7. **डाइट** में अच्छी वसा को शामिल करें जैसे ऑलिव ऑयल, फ्लैक्ससीड या एवोकाडो आदि।
8. **प्रोबायोटिक** भोजन जैसे दही, छाछ या इडली, ढोकला आंतों के लिए अच्छे होते हैं।

ये सुपरफूड्स लाभकारी: हल्दी, हरी पत्तेदार सब्जियां, फाइबर से भरपूर फल, दही और छाछ, सीड्स एवं नट्स, ओट्स, दलिया और मूंग की खिचड़ी, बीटरूट और गाजर, नारियल पानी और नींबू पानी आदि सर्जरी के बाद तेजी से रिकवरी में मदद करते हैं।

इन चीजों से करें परहेज

1. **बहुत** तला-भुना या मसालेदार खाना न खाएं। यह पित्त रस को अधिक उत्तेजित करता है और दस्त या एसिडिटी बढ़ा सकता है।
2. **ज्यादा** फैटी फूड जैसे मक्खन, मलाई, क्रीम, पनीर की भारी ग्रेवी, समोसा, पराठे आदि से बचें।
3. **मीठे** और प्रोसेस्ड फूड्स जैसे कोल्ड ड्रिंक, केक, पेस्ट्री, जंक फूड से बचें।
4. **कॉफी,** अल्कोहल और सोडा ड्रिंक्स लिवर पर दबाव डालते हैं। एसिडिटी बढ़ाते हैं।
5. **अधिक** मात्रा में एक बार में भोजन न करें। इससे दस्त या दर्द की समस्या हो सकती है।
6. **बहुत** ठंडा या बहुत गर्म खाना सर्जरी के तुरंत बाद न लें। पाचन कमजोर होता है।

सर्जरी के बाद ऐसे तेज करें रिकवरी-

- **हल्की** वॉक और श्वास अभ्यास पाचन को सुधारते हैं।
- **पर्याप्त** मात्रा में पानी पीएं ताकि शरीर हाइड्रेट रहे।
- **सर्जरी** के बाद शुरुआती कुछ दिनों तक साफ तरल पदार्थ और सूप का सेवन करें।
- **दिनभर** में अपने भोजन को छोटे-छोटे हिस्सों में बांटकर खाएं।
- **नियमित** व्यायाम करें ताकि वजन नियंत्रित रहे।
- **तनाव** से दूर रहें और पर्याप्त नींद लें।

प्राकृतिक चिकित्सा दिवस-18 नवंबर

शरीर खुद है सबसे बड़ा वैद्य बस उसे दें सही माहौल

आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में जरा-सा दर्द या थकान होने पर लोग तुरंत दवाइयों की शरण लेते हैं। सिरदर्द हो तो गोली, बदहजमी में सिरप, यही हमारी दिनचर्या बन चुकी है। लेकिन क्या हम यह भूल नहीं रहे कि असली उपचार प्रकृति में ही मौजूद है। शरीर में खुद को ठीक करने की अद्‌भुत शक्ति होती है। आइए समझते हैं...

ये हैं प्रकृति के 4 औषधि तत्त्व

1. **सूर्य चिकित्सा:** सूरज की किरणें शरीर को ऊर्जा, विटामिन डी और इम्युनिटी देती हैं। सुबह धूप में 15-20 मिनट बैठना हड्डियों, त्वचा और रक्त के लिए फायदेमंद है।

2. **जल चिकित्सा:** सुबह खाली पेट गुनगुना पानी पीना, ठंडे पानी से स्नान करना, गीली पट्टी से सिर या पेट को ठंडक देना आदि शरीर का तापमान संतुलित रखते हैं।

3. **वायु चिकित्सा:** सुबह पार्क या खेतों में गहरी सांस का अभ्यास करें। यह फेफड़ों को मजबूत करता है, मन को शांत करता, मानसिक तनाव घटाता है।

4. **मिट्टी चिकित्सा:** मिट्टी शरीर की गर्मी और विष को सोख लेती है। पेट पर मिट्टी की पट्टी लगाने से पाचन सुधरता है। माथे पर लगाने से सिरदर्द कम होता है।

प्राकृतिक आहार हो दिनचर्या का हिस्सा

- **सुबह** खाली पेट नींबू पानी या तुलसी जल लें।
- **भोजन** में फल, हरी सब्जियां, सलाद और अंकुरित अनाज शामिल करें।
- **दिन** में एक बार फलाहार या उपवास रखें, तला-भुना, चीनी कम लें। रात में हल्का खाएं।

योग-ध्यान का करें नियमित अभ्यास

- **सूर्य** नमस्कार पूरे शरीर को लचीला बनाता है।
- **अनुलोम-विलोम** और भ्रामरी प्राणायाम मन को शांत करते हैं।
- **प्रतिदिन** 10 मिनट ध्यान करने से तनाव कम होता है, नींद बेहतर आती है।

ऐसे दूर करें स्वास्थ्य समस्याएं

- **सर्दी-जुकाम में:** भाप लें, नाक पर ठंडी पट्टी रखें।
- **सिरदर्द में:** माथे पर मिट्टी की पट्टी या ठंडी पट्टी लगाएं।
- **पाचन में समस्या:** गुनगुना पानी, नींबू और काला नमक लें।
- **त्वचा निखार के लिए:** सुबह नारियल पानी या गाजर का रस पीएं।
- **अनिद्रा की समस्या:** सोने से पहले पैरों को ठंडे पानी से धोएं।

डॉ. तरुण चौधरी
प्राकृतिक चिकित्सक, झुंझुनू
patrika.com

राष्ट्रीय मिर्गी डे

17 नवंबर

ये पांच बातें... जो मिर्गी रोगी हमेशा याद रखें

मिर्गी एक ऐसी न्यूरोलॉजिकल स्थिति है, जिसमें मस्तिष्क की विद्युत गतिविधि असामान्य हो जाती है और बार-बार दौरे आ सकते हैं। सही दिनचर्या और सावधानी बरतकर इस बीमारी को पूरी तरह नियंत्रित किया जा सकता है। मिर्गी के मरीज इन 5 बातों का विशेष ध्यान रखें-

1. **पर्याप्त नींद लें:** रोजाना 7-8 घंटे की नींद लें। सोने-जागने का समय निश्चित रखें। नींद का अनियमित पैटर्न दौरे की आशंका बढ़ा देता है।
2. **दवाइयां कभी न छोड़ें:** मिर्गी के उपचार में सबसे जरूरी है नियमित रूप से दवाइयां लेना। डॉक्टर द्वारा बताई गई दवाओं को न छोड़ें, न ही खुद से खुराक कम-ज्यादा करें।
3. **संतुलित आहार लें:** भोजन का समय तय रखें और लंबे समय तक भूखे न रहें। अत्यधिक फास्ट फूड, कैफीन या अल्कोहल से परहेज करें।
4. **स्क्रीन टाइम सीमित रखें:** लैपटॉप, मोबाइल या टीवी की स्क्रीन को लगातार लंबे समय तक न देखें, हर 30-40 मिनट में आंखों को आराम दें।
5. **आपात स्थिति के लिए तैयार रहें:** अपने परिवार या दोस्तों को अपनी स्थिति की जानकारी दें।

डॉ. स्वप्निल जैन
कंसल्टेंट न्यूरोलॉजिस्ट, जयपुर patrika.com

नेशनल न्यूबॉर्न केयर वीक : 15-21 नवंबर

मां का स्पर्श ही है जीवन की ढाल

26 लाख नवजात शिशुओं की मृत्यु जन्म के बाद पहले 28 दिन में हो जाती है हर साल देश में।

35% शिशु का शारीरिक विकास अधूरा रहना है मृत्यु का कारण।

सर्दियों में नवजात की त्वचा को चाहिए खास देखभाल...

सर्दी आ गई है। दिन का मौसम भले ही सुहावना हो, लेकिन रातें ठंडी होने लगी हैं। जहां बड़े इस बदलाव को आसानी से सह लेते हैं, वहीं नवजात शिशु इसके प्रति बहुत अधिक संवेदनशील होते हैं। शिशु के शरीर की तापमान नियंत्रित करने और त्वचा में नमी बनाए रखने की क्षमता अभी विकसित हो रही होती है, ऐसे में उन्हें खास देखभाल की जरूरत है।

एक्जिमा रिस्क वाले बच्चों के लिए डॉक्टर की सलाह से एमोलिएंट्स लगाएं। क्रेडल कैप के लिए हल्का बेबी शैम्पू काफी है, ज्यादातर अपने आप ठीक हो जाता है। डायपर रैश से बचाने के लिए तुरंत बदलें, गुनगुने पानी या हल्के वाइप्स से साफ करें, थोड़ी देर बिना डायपर के रखें और टैल्कम पाउडर व कठोर साबुन बिल्कुल न लगाएं।

डॉ. प्रीथा जोशी
कंसल्टेंट नियोनेटल, कोकिलाबेन धीरूभाई अंबानी हॉस्पिटल, मुंबई

डॉ. अश्विनी पाराशर
शिशु रोग विशेषज्ञ, चंडीगढ़
patrika.com

पहले छह महीने सिर्फ मां का दूध, बढ़ेगी इम्युनिटी

1. **स्तनपान:** पहले छह महीनों तक केवल मां का दूध ही सबसे आदर्श पोषण और रोग प्रतिरोधक क्षमता देता है। यदि किसी कारण स्तनपान संभव न हो तो डॉक्टर की सलाह से फॉर्मूला मिल्क दें।
2. **सुरक्षित नींद:** शिशु को पीठ के बल समतल सतह पर सुलाएं। चादर, कंबल या मुलायम खिलौने उसके पास न रखें।
3. **लेयरिंग में पहनाएं कपड़े:** बच्चे को अपने से ठीक एक पतली परत अधिक पहनाएं। बच्चे की छाती पर हाथ रखकर देखें, अगर छाती गर्म लेकिन आरामदायक लगे, तो तापमान ठीक है।
4. **अंगों को ढकना:** बच्चे को टोपी, दस्ताने और गर्म मोजे जरूर पहनाएं और रोम्पर्स का इस्तेमाल करें।

ज्यादा देर न नहलाएं, हल्का मॉइश्चराइजर लगाएं

- **सर्दियों की** हवा शुष्क होती है, जिससे नवजात की त्वचा और भी रूखी या रैशेज हो जाते हैं। गुनगुने पानी से छोटा सा स्नान ही काफी है, फिर थपथपाकर सुखाएं और तुरंत हल्का मॉइश्चराइजर लगा दें ताकि नमी बनी रहे। डॉक्टर की सलाह से नारियल एवं बादाम तेल से मालिश करें।
- **बाहर घुमाने** और नहलाने का समय सीमित रखें। जरूरी न हो तो बाहर न ले जाएं और नहलाते समय भी ठंडी हवा का झोंका न लगने दें।
- **संक्रमण से** बचाव भी उतना ही जरूरी है। नवजात की रोग प्रतिरोधक क्षमता अभी बन रही होती है, इसलिए बच्चे को गोद में लेने या छूने से पहले हर व्यक्ति को हाथ अवश्य धोना चाहिए। घर में किसी को सर्दी-जुकाम हो तो मास्क पहनें और बच्चे से दूर रहें।
- **नाभि को** साफ और सूखा रखें। आमतौर पर यह 1-2 हफ्ते में गलकर अलग हो जाती है। कभी बच्चा ज्यादा सोने लगे, दूध कम पीएं, हाथ-पैर बहुत ठंडे हों, त्वचा बहुत गर्म लगे या रैशेज बढ़ने लगे तो डॉक्टर से संपर्क करें।

जरूरी है कंगारू मदर केयर

प्रीमैच्योर और कम वजन के बच्चों के लिए कंगारू मदर केयर तकनीक जीवनदायिनी है, जिसमें मां नवजात को अपनी छाती से चिपकाकर रखती है। इस स्किन-टू-स्किन कांटेक्ट से नवजात के शरीर का तापमान संतुलित रहता है और उसे निमोनिया, हाइपोथर्मिया एवं पीलिया जैसे संक्रमणों से बचाव मिलता है। कंगारू मदर केयर मां और शिशु, दोनों के लिए फायदेमंद है। आइए समझते हैं इसे...

कब शुरू करें: जैसे ही बच्चा स्थिर हो जाए और खुद सांस लेने लगे, उसी समय से कंगारू मदर केयर शुरू की जा सकती है।

कितनी देर करें: रोजाना कम से कम 8 घंटे तक करें, जितनी देर मां की छाती से लगा रहेगा, उतना ज्यादा फायदा मिलेगा।

क्या है सही पॉजिशन: बच्चा मां की छाती पर सीधा सटा रहे, सिर हल्का साइड में झुका हो और पैर मेंढक जैसी मुद्रा में हों। मां फ्रंट-ओपन कपड़े या साड़ी/शॉल से बच्चे को ढक सकती है।

क्या फायदे मिलेंगे: ठंड लगने की आशंका घटती है, सांस रुकने की घटनाएं कम होती हैं और वजन बढ़ता है।

कब तक करें: इसे तब तक जारी रखें जब तक बच्चा लगभग 2.5 किलो वजन या लगभग 40 सप्ताह टर्म की उम्र तक न पहुंच जाए। इसे सिर्फ मां ही नहीं, पिता या दादी भी कर सकते हैं। इससे मां में पोस्टपार्टम डिप्रेशन घटता है, स्तनपान जल्दी और टिकाऊ बनता है। तनाव-थकान दूर होकर भावनात्मक जुड़ाव बढ़ता है।

किन शिशुओं के लिए जरूरी

- **जन्म** के समय 2.5 किलोग्राम से कम वजन वाले बच्चे।
- **प्रीमैच्योर** (37 सप्ताह से पहले जन्मे) बच्चे।
- **अस्पताल** से छुट्टी के बाद भी कमजोर या धीरे बढ़ने वाले नवजात
- **हाइपोथर्मिया** से ग्रस्त नवजात।

अक्सर सिरदर्द रहता है... कहीं बीपी तो नहीं वजह

डॉ. आरिफ खान
कॉर्डियोलॉजिस्ट
जयपुर
patrika.com

कुछ लोगों को अक्सर सिरदर्द की समस्या रहती है। कई बार लगातार हो रहे सिरदर्द को हम सामान्य समझने की भूल कर देते हैं। यह गंभीर हाई या लॉ बीपी के संकेत भी हो सकते हैं। ऐसे में तुरंत चिकित्सक से मिलना चाहिए।

समझें सिरदर्द को...

सामान्य सिरदर्द सिर के पीछे की ओर होता है। माइग्रेन में मस्तिष्क के आगे की ओर दर्द होता है। वहीं क्लस्टर सिरदर्द सिर के एक तरफ, अक्सर आंख के आसपास, तेज दर्द होता है।

इस तरह जांचें अपनी बीपी- सामान्य ब्लड प्रेशर 120/80 एमएमएचजी से कम होता है। घर पर चेक करते वक्त एक-एक मिनट में तीन रीडिंग लें, औसत निकालें।

कैसे मिल सकती है राहत-

- **समय** पर खाना खाएं।
- **खाने** और सोने के बीच 3 से 4 घंटे का अंतराल रखें।
- **कम** से कम 6-7 घंटे सोएं, कोशिश 8 घंटे की करें।
- **सूर्योदय** के पहले उठें।
- **योग,** प्राणायाम, ध्यान को दिनचर्या में शामिल करें।

लक्षणों को न करें इग्नोर

1. सिरदर्द के साथ छाती में दर्द होना।
2. धुंधला दिखाई देना।
3. बार-बार चक्कर आना।
4. घबराहट होना।
5. थकान महसूस होना।

सिरदर्द के कारण

1. ज्यादा एंजाइटी से।
2. बीपी उतार-चढ़ाव से।
3. न्यूरोलॉजिकल कारण
4. हार्ट और नाईट्रेट दवाइयों के कारण।

ओरल हैल्थ: मसूड़ों के संक्रमण का दिल और फेफड़ों पर भी खतरा

डॉ.दिव्यश्री शर्मा
डेंटिस्ट, नागपुर
patrika.com

मसूड़ों का संक्रमण दिल, फेफड़ों, दिमाग, लिवर और यहां तक कि गर्भावस्था को भी प्रभावित कर सकते हैं। आइए जानते हैं इस बारे में...

क्या है मसूड़ों का संक्रमण: पीरियोडॉन्टाइटिस मसूड़ों की एक गंभीर बीमारी है, जो दांतों को सहारा देने वाले ऊतकों और हड्डियों को नुकसान पहुंचाती है।

इन संकेतों को समझें - यदि मसूड़े लाल, सूजे या उनमें से खून निकलने लगे, सांस से दुर्गंध आने लगे, दांत हिलने लगे या गैप आ जाए, कुछ चबाने में परेशानी हो, मसूड़े पीछे हटने लगे आदि संकेतों को नजरअंदाज न करें, डेंटिस्ट से जांच करवाएं।

इन बातों का रखें ध्यान-

- **दिन** में दो बार फ्लोराइड युक्त टूथपेस्ट से ब्रश करें।
- **रोज** फ्लॉस या इंटरडेंटल क्लीनर से सफाई करें।
- **धूम्रपान** छोड़ें, यह मसूड़ों की सेहत से लिए सबसे बुरी आदत है।
- **डायबिटीज** के मरीज ब्लड शुगर को नियंत्रित रखें।

हो सकती हैं ये समस्याएं

1. **हृदय रोग:** मसूड़ों की सूजन से निकले बैक्टीरिया रक्तप्रवाह में जाकर धमनियों की दीवारों पर चिपक सकते हैं, जिससे ब्लॉकेज, हार्ट अटैक का खतरा बढ़ जाता है।
2. **फेफड़ों की समस्याएं:** संक्रमित मसूड़ों से निकलने वाले बैक्टीरिया सांस के साथ फेफड़ों तक पहुंचकर निमोनिया, सीओपीडी जैसी बीमारियां बढ़ा सकते हैं।
3. **गर्भावस्था में खतरा:** मसूड़ों की सूजन से असमय प्रसव, जन्म के समय शिशु के वजन में कमी का रिस्क है।
4. **गठिया और मसूड़े:** मसूड़ों का संक्रमण और रूमेटाइड आर्थराइटिस दोनों क्रॉनिक इंफ्लेमेशन से जुड़े हैं।
5. **मस्तिष्क स्वास्थ्य:** बैक्टीरिया दिमाग तक पहुंच कर सूजन, अल्जाइमर का रिस्क बढ़ा सकते हैं।
6. **मधुमेह:** मसूड़ों की बीमारी से ब्लड शुगर का नियंत्रण मुश्किल हो जाता है।
7. **लिवर पर असर:** मसूड़ों से निकलने वाले बैक्टीरिया और सूजन के तत्त्व फैटी लिवर जैसी समस्याओं को बढ़ा सकते हैं।

बच्चों में कम हो रही दूर की नजर स्क्रीन टाइम करें कम, बाहर खेलें

नेशनल मायोपिया वीक (14-20 नवंबर)

डॉ.इकेदा लाल
नेत्र रोग विशेषज्ञ, सर गंगाराम अस्पताल, नई दिल्ली
patrika.com

मायोपिया का मतलब है माइनस का चश्मा यानी दूर की नजर कमजोर होना। इस स्थिति में आंख में प्रवेश करने वाली रोशनी की किरणें, जो सामान्यत: आंख के पीछे स्थित रेटिना पर फोकस होनी चाहिए, वह रेटिना से पहले ही फोकस हो जाती हैं। इसका मुख्य कारण है आईबॉल का लंबा होना। इस कारण दूर की वस्तुएं धुंधली दिखाई देती हैं। जानते हैं बच्चों को इस समस्या से कैसे बचाएं -

कम उम्र में क्यों लग रहा चश्मा?

आजकल बच्चों की लाइफस्टाइल में बड़ा बदलाव आया है। उनकी आउटडोर एक्टिविटी घट गई है और स्क्रीन टाइम लगातार बढ़ रहा है। जबकि धूप में समय बिताने से आईबॉल की लंबाई बढ़ने की गति धीमी होती है और इससे मायोपिया का खतरा घटता है।

कैसे कर सकते हैं बचाव

1. **आउटडोर एक्टिविटी बढ़ाएं:** बच्चों को रोजाना कम से कम 1-2 घंटे धूप में खेलने दें।
2. **स्क्रीन टाइम सीमित करें:** बच्चों की उम्र के अनुसार स्क्रीन देखने का समय तय करें। 5 वर्ष से छोटे बच्चों को स्क्रीन से दूर रखें। एक बार में 20 मिनट से अधिक लगातार स्क्रीन न देखने दें।
3. **स्क्रीन से उचित दूरी रखें:** स्क्रीन जितनी दूर होगी, आंखों पर दबाव उतना कम पड़ेगा। मोबाइल की बजाय बड़ी स्क्रीन से कंटेंट दिखाना सुरक्षित है।
4. **सही पॉश्चर अपनाएं:** सीधे बैठें, गर्दन झुकाकर स्क्रीन न देखें। स्क्रीन आंखों के स्तर पर होनी चाहिए।
5. **रोशनी का ध्यान रखें:** स्क्रीन पर सीधी रोशनी (जैसे बल्ब या खिड़की से आने वाली सनलाइट) न पड़े। इससे आंखों में थकान और तनाव बढ़ता है।

'रूल ऑफ 20' समझें | हर 20 मिनट स्क्रीन देखने के बाद कम से कम 20 सेकंड का ब्रेक लें और 20 फीट दूर किसी वस्तु को देखें। इससे आंखों की मांसपेशियां रिलैक्स होती हैं, सूखापन कम होता है और फोकसिंग क्षमता बेहतर बनी रहती है।

लाइफ लाइन हैलो डॉक्टर

हर्निया में आंतें बाहर आने का जोखिम, सर्जरी ही विकल्प

पत्रिका की निशुल्क डॉक्टरी सलाह से जुड़ी पहल लाइफलाइन के तहत विभिन्न राज्यों से पाठकों ने सामान्य सर्जरी संबंधित सवाल पूछे।

सवाल : मेरी उम्र 32 वर्ष है और मुझे हर्निया है। क्या इसका इलाज दवाओं से हो सकता है या सर्जरी ही जरूरी है? -पाठक

जवाब- हर्निया पेट की दीवार में कमजोरी के कारण होता है, जिससे आंतें बाहर आ जाती हैं। इसका स्थायी इलाज सर्जरी से ही संभव है। ओपन और लैप्रोस्कोपिक सर्जरी दोनों विकल्प हैं, लेकिन लैप्रोस्कोपिक सर्जरी से जल्दी रिकवरी होती है। अपने डॉक्टर की सलाह से समय पर सर्जरी करवाएं।

सवाल : मेरे गॉल ब्लेडर में स्टोन है। डॉक्टर ने ऑपरेशन की सलाह दी है। क्या लैप्रोस्कोपिक सर्जरी सुरक्षित है?

जवाब - गॉलब्लेडर स्टोन एक आम समस्या है। यदि इसे इलाज के बिना छोड़ दिया जाए तो दर्द, उल्टी या पीलिया जैसी दिक्कतें हो सकती हैं। इस स्थिति में लैप्रोस्कोपिक सर्जरी सबसे सुरक्षित और आधुनिक तरीका है। इसमें बहुत छोटे चीरे के जरिए कैमरा और उपकरण डाले जाते हैं। यह प्रक्रिया लगभग एक घंटे की होती है और मरीज एक हफ्ते में पूरी तरह ठीक हो जाता है। इससे शरीर पर कोई बड़ा निशान भी नहीं रहता।

सवाल : मेरी उम्र 45 वर्ष है और मेरे पैरों की नसें उभर आई हैं। डॉक्टर ने वेन सर्जरी बताई है। क्या यह जरूरी है?

जवाब - जब पैरों की नसों के वाल्व ठीक से काम नहीं करते, तो खून उल्टा बहने लगता है और नसें फूल जाती हैं। इसे वेरिकोज वेन कहते हैं। शुरू में हल्की सूजन या दर्द हो सकता है, लेकिन बाद में घाव बनने लगते हैं। इस स्थिति में सर्जरी जरूरी होती है। आजकल लेजर तकनीक से इसका बहुत ही सुरक्षित इलाज होता है। इसमें कोई बड़ा चीरा नहीं लगता, मरीज जल्दी ठीक हो जाता है। समय पर इलाज से दर्द और सूजन से राहत पा सकते हैं।

- डॉ. मुकेश शर्मा,
जनरल सर्जन,
जयपुर
patrika.com

पाठकों के शेष सवालों के जवाब जानने के लिए क्यूआर कोड स्कैन करें...

इस बार पूछें यूरिनरी ब्लेडर संबंधी सवाल

पत्रिका लाइफलाइन में इस सप्ताह यूरिनरी ब्लेडर संबंधी समस्याओं पर सवाल पूछें, जवाब 23 नवंबर के अंक में देखें। **ध्यान रखें :** सवाल विस्तार से लिखकर गुरुवार तक वॉट्सऐप नं. 8955003879 पर भेज दें। (*यह डॉक्टर का नहीं, पत्रिका हैल्थ डेस्क का नंबर है, फोन न करें। वॉट्सऐप पर इसके जवाब नहीं दिए जाते हैं। यह मेडिको लीगल के लिए मान्य नहीं है।

फिटनेस मंत्र | रोजाना एक्सरसाइज करने से भी नहीं घट रहा वजन, जानें क्या है वजह

एक जैसा न रखें वर्कआउट रुटीन, 12-15 हफ्ते में बदलते रहें

अजय सिंह
सेलेब्रिटी फिटनेस ट्रेनर, जयपुर
patrika.com

हर उम्र का व्यक्ति फिट दिखना चाहता है। लोग नियमित जिम जा रहे हैं, हैल्दी खाना खा रहे हैं, पर कुछ महीनों बाद अचानक वजन कम होना रुक जाता है। जब कोई व्यक्ति वजन घटाने की शुरुआत करता है, तो पहले कुछ हफ्तों में तेजी से परिणाम दिखते हैं पर कुछ समय बाद वजन एक जगह पर अटक जाता है इसे वेट लॉस प्लैटू कहा जाता है। आइए जानते हैं...

प्लैटू के मुख्य कारण

1. **मेटाबॉलिज्म का धीमा पड़ना:** शरीर कम ऊर्जा खर्च करने लगता है ताकि वह नई स्थिति में संतुलन बना सके।
2. **एक जैसा ट्रेनिंग रुटीन:** हफ्तों तक एक ही तरह की वर्कआउट करने से शरीर उस पैटर्न का आदी हो जाता है।
3. **कैलोरी इनटेक बहुत कम करना:** जरूरत से ज्यादा कम खाना मेटाबॉलिज्म को और धीमा कर देता है।
4. **रिकवरी की कमी:** लगातार ट्रेनिंग करने से हॉर्मोनल बैलेंस बिगड़ता है और फैट बर्न रुक जाता है।

...जब करें एक्सरसाइज

यदि आप एक ही तरह की एक्सरसाइज रोज करते हैं, तो शरीर उस पर अभ्यस्त हो जाता है। इसलिए हर 12-16 हफ्ते में अपने वर्कआउट रुटीन में बदलाव करें।

वजन थोड़ा बढ़ाएं और रेप्स घटाएं -

- **नए मूवमेंट** जैसे डेडलिफ्ट, स्क्वॉट, स्टेप अप, बॉक्स जम्प, स्प्रिंट ट्रेनिंग अपनी ट्रेनिंग में शामिल करें। कैलोरी बहुत कम न करें, प्रोटीन और कार्ब-साइकिलिंग अपनाएं। हर मील में प्रोटीन रखें (1.6-2 ग्राम प्रति किलो बॉडीवेट के अनुसार)। हर 10-14 दिन में एक रीफीड मील लें।

वेट लॉस प्लैटू को ब्रेक करेंगी ये एक्सरसाइज

1. फार्मर कैरी 2. स्टेप-अप्स 3. पुल-अप्स 4. फ्लोर चेस्ट प्रेस

इन चारों एक्सरसाइज को एक के बाद एक बिना ज्यादा आराम लिए करें।

जब एक राउंड (चारों एक्सरसाइज) पूरा हो जाए, तो 90 सेकंड का आराम लें। उसके बाद दूसरा राउंड शुरू करें। इस तरह कुल 3 से 4 राउंड पूरे करें। सप्ताह में 2 बार करें। ट्रेनिंग में बदलाव, पोषण और नींद पर ध्यान दें।

बढ़ाएं दिनभर की छोटी गतिविधियां

- **हर** घंटे में 5 मिनट खड़े होकर वॉक करें, फोन पर बात करते हुए चलते रहें। ये छोटी आदतें रोज 200-300 कैलोरी एक्स्ट्रा बर्न करा सकती हैं।
- **नींद** की कमी से स्ट्रेस हार्मोन बढ़ता है, जो फैट बढ़ाता है।
- **रोज** 7-8 घंटे की नींद लें। ध्यान या श्वसन अभ्यास करें। यदि इन सब को अपनाने के बाद भी वजन नहीं घट रहा है तो डॉक्टर की सलाह से जांच करवाएं।

नोट- डॉक्टरी सलाह से ही कोई नुस्खा या दवा लें।

अग्रलेख 'काठ की हांडी' पर प्रतिक्रियाएं

चुनावी हार-जीत पर दलों में शीर्ष नेतृत्व को करना होगा मंथन

राजनीतिक दलों में जब बड़े नेता परिवारवाद और स्वयं को पार्टी से बड़ा मानने की हद तक आ जाएं तो चुनाव नतीजों पर भी उनका असर पड़ता है। पत्रिका समूह के प्रधान संपादक गुलाब कोठारी के अग्रलेख 'काठ की हांडी' में दलों में पनपी इसी प्रवृत्ति की ओर संकेत किया गया है, जहां एक ही पार्टी में नेताओं को नीचा दिखाने का प्रयास होता है। पाठकों का कहना है कि राजनीतिक दलों के शीर्ष नेतृत्व और खास तौर से सत्तारूढ़ पार्टी को यह तय करना होगा कि वे जनअपेक्षाओं पर खरा उतरने का काम करें अन्यथा जनता मौका पड़ने पर अपना फैसला सुनाने में देर नहीं लगाती। **पाठकों की प्रतिक्रियाएं विस्तार से...**

अंता विधानसभा उपचुनाव के नतीजों में भाजपा की एकजुटता की सच्चाई सामने आ गई। बड़े नेताओं की चुनाव प्रचार से दूरी ने ही नतीजों के संकेत दे दिए थे। सीधे तौर पर यह हार बड़े नेताओं में समन्वय की कमी और एक-दूसरे को नीचा दिखाने की मनोवृत्ति की वजह से भी हुई है। बिना एकजुटता के कोई चुनाव नहीं जीता जा सकता है। कांग्रेस एकजुट रही तो बाजी मार ली।
-सुरेश प्रजापत, जयपुर

अग्रलेख में महाभारत के प्रसंग से जो उपमा दी गई है, वह न केवल रोचक है, बल्कि राजनीति के वास्तविक परिदृश्य को गहराई से विवेचित करती है। राजस्थान में अंता के उपचुनाव में सत्ताधारी पार्टी की पराजय के कारणों में सत्ता का अहंकार, कार्यकर्ताओं में सक्रियता की कमी और जनता की अपेक्षाओं पर खरा नहीं उतरने वाले जनप्रतिनिधियों की भूमिका भी शामिल हैं।
-कैलाश ओझा, जोधपुर

भाजपा के नेता और कार्यकर्ता राजस्थान में केवल प्रधानमंत्री के नाम पर ही सब कुछ पाना चाह रहे हैं। हकीकत तो यह है कि राजस्थान में अफसरशाही हावी है। अग्रलेख में सही कहा गया है कि भ्रष्टाचार और अपराध बढ़ रहे हैं और उन पर सरकार का नियंत्रण नहीं है। सत्तारूढ़ पार्टी में भी गुटबाजी हावी है। पुराने नेता ही सरकार को सफल नहीं होने दे रहे। इस बार कांग्रेस में गुटबाजी दिखाई नहीं दी, जिससे कांग्रेस ने अंता में भारी मतों से विजय प्राप्त की। राजस्थान भाजपा को आकलन और अपनी चुनावी रणनीति में परिवर्तन करना पड़ेगा।
-घनश्याम सिंह एडवोकेट, जयपुर

अग्रलेख में राजस्थान में सरकार के कामकाज और बड़े नेताओं की महत्वाकांक्षाओं से उपजे हालात का जिक्र किया गया है। यह भी सही लिखा है कि प्रदेश में सरकार केंद्र की नीतियों और योजनाओं के भरोसे है। प्रशासन पर सरकार की पकड़ नहीं है। इसी का परिणाम है कि पाली जिला मुख्यालय होने के बावजूद व्यवस्थाएं बदहाल हैं। हकीकत तो यह है कि जनसमस्याओं का समाधान करने का महज दावा ही किया जा रहा है।
-सुनील जोशी, पाली

अग्रलेख 'काठ की हांडी' बिहार में विधानसभा चुनाव और राजस्थान में उपचुनाव के संदर्भ में राजनीति में लुप्त होती नैतिकता और जनसेवा की मूल भावना की ओर ध्यान दिलाता है। चुनावों में रणनीतिक कमजोरियां तो नतीजों को प्रभावित करती ही हैं, स्थानीय स्तर पर नेताओं का अहंकार भी पराजय को नजदीक ला देता है। परिवारवाद, भ्रष्टाचार, सत्तारूढ़ नेताओं की प्रशासनिक पकड़ ढीली होने जैसे अनेक कारण हैं, जिन पर पार्टियों के शीर्ष नेतृत्व को ध्यान देना चाहिए।
-शेषराज प्रजापति, जोधपुर

सत्ता में होने के बावजूद भाजपा का प्रत्याशी राजस्थान में अंता उपचुनाव में हार गया। इस हार के कई कारण हैं। सबसे बड़ा कारण तो सरकार का हर स्तर पर कमजोर होना है। जनता को क्या चाहिए, अच्छी सड़कें, बेहतर ड्रेनेज सिस्टम, लाइट, पानी आदि। वह भी नसीब नहीं हो रहा है। अग्रलेख में चुनावी हार से उपजी स्थितियों का बखूबी विवेचन किया गया है। **-अनिल कुमार,** पाली

महाभारत के प्रसंग और बिहार चुनाव को जोड़कर अग्रलेख में सही सवाल उठाया गया है कि लोकतंत्र में चुनाव अब छल और बल का खेल हो गया है। राजनीति में नैतिकता गायब होती जा रही है। इस वजह से भ्रष्टाचार को बढ़ावा मिलता है। आलेख का शीर्षक 'काठ की हांडी' सटीक है। चुनावों में यह कब तक चढ़ेगी, यह देखना है।
-महेन्द्र तिवारी, जगदलपुर (छत्तीसगढ़)

आंकड़े, गठजोड़ और नारेबाजी से ही राजनीति नहीं चलती। न ही ये चुनावी सफलता के मापदंड हैं। जरूरत इस बात की है कि प्रतिबद्धता और पारदर्शिता के साथ काम हो। 'काठ की हांडी' बार-बार नहीं चढ़ती... जैसी कहावत को वर्तमान राजनीतिक परिदृश्य से जोड़कर जो संदेश दिया गया है, वह महत्वाकांक्षा व अहंकार पाले राजनेताओं के लिए सबक है। **-जेराम सेमुअल,** भिलाई (छत्तीसगढ़)

अग्रलेख आज की राजनीति की सच्चाई को बहुत सटीक और संतुलित तरीके से सामने रखता है। जिस तरह शकुनि और दु:शासन जैसे पात्रों का जिक्र राजस्थान की मौजूदा राजनीतिक परिस्थितियों में किया गया है, वह सचमुच विचारणीय है। बिहार की राजनीति से लेकर राष्ट्रीय स्तर पर नैतिकता, मूल्यों और नेतृत्व की कमी पर जिस स्पष्टता से प्रकाश डाला गया है, वह प्रशंसनीय है। अग्रलेख बताता है कि सत्ता से अधिक महत्वपूर्ण जनता का विश्वास और चरित्र होता है। **-राजकुमार गुप्ता,** भिलाई (छत्तीसगढ़)

बिहार के चुनाव परिणामों ने एक बात तो सिद्ध कर दी कि जनता अब बाहुबलियों और परिवारों की राजनीति से मुक्त होना चाहती है। यही वजह उत्तर प्रदेश में भी सामने आई थी। दोनों ही राज्यों में कुछ राजनीतिक परिवारों ने कब्जा कर मनमानी शुरू कर दी थी। इससे जनता त्रस्त तो हुई ही, प्रदेश में राजनीतिक मर्यादाएं भी तार-तार होने लगी थीं। **-डॉ. आनंद राणा,** जबलपुर (मध्यप्रदेश)

कोरियाई कंपनी के निवेश पर तमिलनाडु सरकार घिरी

विपक्ष ने डीएमके पर लगाए उद्योगों के पलायन के आरोप

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

चेन्नई. दक्षिण कोरियाई कंपनी हुआसियुंग के तमिलनाडु में निवेश की योजना बदलकर आंध्र प्रदेश में इकाई स्थापित करने के फैसले के बाद राज्य की डीएमके सरकार विपक्ष के निशाने पर आ गई है। एआईएडीएमके महासचिव एडपाडी के. पलनीस्वामी और तमिलनाडु भाजपा के पूर्व अध्यक्ष के. अन्नामलै ने शनिवार को सरकार की आलोचना की।

तमिलनाडु से उद्योग पलायन को दर्शाता एआइ सृजित छायाचित्र।

तमिलनाडु चूके हुए अवसरों की भूमि

अन्नामलै ने सोशल मीडिया पर लिखा, जब तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एम के स्टालिन और उद्योग मंत्री टीआरबी राजा गहरी नींद में हैं, तब वे निवेश जो गर्व से घोषित किए गए थे, पड़ोसी राज्यों में जा रहे हैं। उद्योग मंत्री ने घोषणा की थी कि दक्षिण कोरियाई कंपनी हुआसियुंग 1720 करोड़ रुपए का निवेश कर बड़ी गैर-चमड़ा फुटवियर निर्माण इकाई स्थापित करेगी, जिससे 20,000 प्रत्यक्ष नौकरियां मिलेंगी। तीन महीने से भी कम समय में हुआसियुंग ने यह निवेश आंध्र प्रदेश ले जाने का फैसला किया है। जब अन्य राज्य वैश्विक विनिर्माण सेक्टर को आकर्षित करने में तेज़ी से आगे बढ़ रहे हैं, तमिलनाडु प्रशासनिक उदासीनता के कारण पिछड़ रहा है। उन्होंने डीएमके पर राज्य को 'अवसरों की भूमि' से 'चूके हुए अवसरों की भूमि' में बदलने का आरोप लगाया।

तमिलनाडु के बजाय अब आंध्रप्रदेश में होगा 150 मिलियन डॉलर निवेश

विशाखापट्टनम. साउथ कोरिया की वैश्विक कंपनी हुआसियुंग अब भारत में अपना पहला गैर-चमड़ा खेल जूता निर्माण प्लांट आंध्र प्रदेश के कुप्पम में लगाएगी। कंपनी यहां 150 मिलियन डॉलर का निवेश करेगी। पूर्व में अगस्त माह में हुआसियुंग ने तमिलनाडु सरकार के साथ इस प्रोजेक्ट के लिए समझौता ज्ञापन (एमओयू) साइन किया था, लेकिन अब कंपनी ने अपनी योजना बदलकर आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री एन चंद्रबाबू नायडू के निर्वाचन क्षेत्र कुप्पम में प्लांट लगाने का निर्णय लिया है। हुआसियुंग के फुटवियर डिवीजन के सीईओ बॉब शॉरॉक ने बताया, हमारा निवेश मुख्य रूप से रोजगार सृजन पर केंद्रित है। तीनों चरणों के पूरे होने पर करीब 20,000 लोगों को रोजगार मिलेगा। उन्होंने कहा कि यह प्लांट प्रति वर्ष लगभग 2 करोड़ स्पोर्ट्स शूज का निर्माण करेगा, जिनमें से अधिकांश निर्यात किए जाएंगे। भविष्य में घरेलू बाजार के लिए भी उत्पादन किया जाएगा। कंपनी को कुप्पम की दो ग्राम पंचायतों में 100 एकड़ भूमि आवंटित की गई है, जिसके लिए सरकारी आदेश भी जारी हो गया है। यह हुआसियुंग का भारत में पहला निवेश होगा। कंपनी दक्षिण कोरिया, ताइवान, वियतनाम, इंडोनेशिया और चीन में भी अपने प्लांट संचालित करती है।

क्यों पीछे हट रही निवेशक कंपनियां

एआईएडीएमके नेता पलनीस्वामी ने राज्य सरकार द्वारा आयोजित ग्लोबल इन्वेस्टर्स मीट की उपयोगिता पर सवाल उठाए। उन्होंने कहा, जो कंपनियां पहले तमिलनाडु में निवेश करने को तैयार थीं, वे अब पीछे हट गई हैं और इसके कारणों की पहचान करना जरूरी है। पलनीस्वामी ने कहा कि सरकार ने उद्योगों के तमिलनाडु में स्थापित होने की उम्मीद रखने वाले युवाओं को धोखा दिया है। इसके जवाब में राज्य के उद्योग मंत्री टीआरबी राजा ने सरकार की नीति का बचाव करते हुए कहा, निवेश को बढ़ावा देना रोज का खेल नहीं है, बल्कि यह राज्य की जरूरतों और युवाओं के लिए नौकरियों के सृजन में संतुलन पर आधारित है। उन्होंने लिखा, तमिलनाडु भारत का सबसे भरोसेमंद और औद्योगिक राज्य है। हम अपनी ताकत जानते हैं और उसी के अनुसार काम करते हैं।

एसआइआर पहल के तहत 92 प्रतिशत मतदाताओं तक पहुंच

मुख्य निर्वाचन अधिकारी अर्चना पटनायक।

चेन्नई. तमिलनाडु में विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआइआर) पहल के तहत अब तक 5,90,13,184 नामांकन फॉर्म मतदाताओं को वितरित किए जा चुके हैं। तमिलनाडु की मुख्य निर्वाचन अधिकारी अर्चना पटनायक ने शनिवार को इसकी जानकारी देते हुए बताया कि यह राज्य के कुल मतदाताओं का 92.04 प्रतिशत है। एसआइआर प्रक्रिया पूरी करने की आखिरी तारीख चार दिसम्बर है।

अर्चना पटनायक ने बताया कि राज्य के सभी 234 विधानसभा क्षेत्रों में नामांकन फॉर्मों का वितरण जारी है। कुल 6,41,14,582 फॉर्म छपवाए गए थे, जिनमें से 5.90 करोड़ से अधिक फॉर्म नवंबर 15 तक वितरित हो चुके हैं।

मुख्य निर्वाचन अधिकारी ने कहा, अब तक 5,90,13,184 नामांकन फॉर्म सभी विधानसभा क्षेत्रों में मतदाताओं को दिए गए हैं, जो 92.04 प्रतिशत के बराबर है। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि मतदाताओं को फॉर्म भरकर संबंधित बूथ स्तर अधिकारियों को सौंपना है जब वे फॉर्म एकत्रित करने के लिए आएं। अधिकारियों द्वारा फॉर्म भरने में सहायता भी दी जाएगी। अर्चना पटनायक ने आगे कहा, बूथ स्तर अधिकारी आवश्यकता अनुसार फॉर्म भरने में सहायता प्रदान करेंगे। मतदाताओं से निवेदन है कि वे प्रक्रिया को सुगम बनाने के लिए अधिकारियों का सहयोग करें।

मुख्य निर्वाचन अधिकारी के अनुसार, एसआइआर अभियान के तहत नामांकन फॉर्मों का वितरण राज्य के सभी हिस्सों में सुचारू रूप से चल रहा है। मतदाताओं को सही जानकारी देने और प्रक्रिया को सरल बनाने के लिए अधिकारी हर स्तर पर मदद कर रहे हैं।

नि:शुल्क शिविर में 52 लोग लाभान्वित

शिविर में उपस्थित लोग।

बेंगलूरु @ पत्रिका. तेरापंथ युवक परिषद, गांधीनगर की ओर से संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर, राजाजीनगर, पी.जी हल्ली, आडुगुड़ी में विश्व मधुमेह दिवस पर रियायती दर पर डायबिटिक प्रोफाइल चेकअप का आयोजन किया गया।

कुल 52 लोगों ने इसका लाभ लिया। स्थानीय लोगों ने तेयुप गांधीनगर द्वारा प्रदत्त मानव सेवा के उपक्रम की प्रशंसा की। इस अवसर पर संयोजक प्रतीक जोगड़, संयोजक पंकज भंडारी, संयोजक पंकज सुराणा, विनय बैद, महेंद्र कोचर, धीरज कोठारी, प्रकाश सालेचा, विवेक मरोठी, मुदित कोठारी, राकेश भंडारी उपस्थित रहे।

तमिलनाडु के 224 कॉलेज ने फर्जी दस्तावेजों से ली मान्यता

चेन्नई @ पत्रिका. अण्णा विश्वविद्यालय में इंजीनियरिंग कॉलेजों को मान्यता देने की प्रक्रिया में बड़ा घोटाला उजागर हुआ है। भ्रष्टाचार निरोधक विभाग ने विश्वविद्यालय के मान्यता केंद्र के निदेशक, उपनिदेशक सहित 17 अधिकारियों और कॉलेज प्रशासकों के खिलाफ मामला दर्ज किया है।

जांच में सामने आया कि पूर्व कुलपति वेलराज के कार्यकाल (2021-2024) के दौरान तमिलनाडु के 47 प्रतिशत यानी 224 इंजीनियरिंग कॉलेजों ने फर्जी दस्तावेजों के आधार पर मान्यता ली। जांच रिपोर्ट के अनुसार, 480 से अधिक इंजीनियरिंग कॉलेजों में से 224 कॉलेज फर्जीवाड़े में शामिल पाए गए। इन कॉलेजों ने आधार कार्ड, पैन कार्ड और शैक्षणिक प्रमाणपत्रों की जालसाजी कर मान्यता हासिल की। विभाग ने पाया कि कई कॉलेजों में एक ही प्रोफेसर और कर्मचारी को एक साथ कई जगह कार्यरत दिखाया गया। उदाहरणस्वरूप, मारिच्चामी नामक व्यक्ति को 11 कॉलेजों में एक साथ नियुक्त दिखाया गया। प्रत्युषा इंजीनियरिंग कॉलेज (तिरुवल्लूर) और श्री वेंकटेश्वरा इंजीनियरिंग कॉलेज में एक ही प्रोफेसर को दो जगह कार्यरत बताया गया। माता इंजीनियरिंग कॉलेज (कांचीपुरम) और काधिर इंजीनियरिंग कॉलेज (कोयंबटूर) में भी फर्जी नियुक्ति की गई। पूर्व कुलपति वेलराज पर कॉलेजों को फर्जी तरीके से मान्यता देने और भ्रष्टाचार में शामिल होने के गंभीर आरोप लगे हैं। जुलाई 2024 में तमिलनाडु सरकार की सिंडिकेट समिति ने वेलराज को निलंबित किया था, लेकिन विश्वविद्यालय के कुलाधिपति और राज्यपाल रवि ने उनका निलंबन रद्द कर दिया।

छह दिसंबर से अन्य नगरपालिकाओं तक विस्तार की घोषणा

सफाई कर्मचारियों के लिए मुफ्त भोजन योजना

चेन्नई @ पत्रिका. मुख्यमंत्री एम.के. स्टालिन ने शनिवार को ग्रेटर चेन्नई कॉरपोरेशन के सफाई कर्मचारियों के लिए मुफ्त भोजन योजना की शुरुआत की। यह योजना चेन्नई के कलैवाणर अरंगम में आयोजित एक कार्यक्रम के दौरान शुरू की गई। मुख्यमंत्री स्टालिन ने घोषणा की कि 6 दिसंबर से यह योजना राज्य के सभी नगर निगमों और नगरपालिकाओं में भी लागू की जाएगी। मुख्यमंत्री ने बताया कि चेन्नई निगम के सभी 200 वार्डों में सफाई कर्मचारियों के लिए 300 वर्ग फीट के विशिष्ट लाउंज, चेंजिंग रूम और विश्राम कक्ष बनाए जाएंगे। इस अवसर पर उन्होंने कई सफाई कर्मचारियों को आवास सहित विभिन्न कल्याणकारी लाभ भी वितरित किए।

चेन्नई निगम सफाई कर्मचारियों के लिए मुफ्त भोजन योजना का उद्घाटन करने के बाद सीएम एमके स्टालिन।

सराहना: मुख्यमंत्री स्टालिन ने सफाई कर्मचारियों की भूमिका की सराहना करते हुए कहा, किसी भी आपदा बारिश हो या धूप, बाढ़ हो या चक्रवात चेन्नई को फिर से सामान्य स्थिति में लाने में आपकी भूमिका अहम रहती है। शहर का वातावरण आपकी अथक मेहनत की बदौलत स्वच्छ है।' उन्होंने आगे कहा, सिर्फ मैं ही नहीं, पूरी चेन्नई निगम आपके समर्पित सेवा के लिए आभारी है।

मुख्यमंत्री ने बताया कि नई योजना के तहत पोषक भोजन स्वच्छ लंच बॉक्स में परोसा जाएगा, ताकि भोजन गर्म रहे। यह भोजन स्थानीय निकायों के भवनों में, कर्मचारियों के कार्यस्थलों के पास ही उपलब्ध रहेगा। उन्होंने कहा कि सफाई कर्मचारियों के कल्याण के लिए डीएमके शासनकाल में कई नई योजनाएं लागू की गई हैं।

चरणबद्ध तरीके से लागू होंगी मांगें: स्टालिन ने सफाई कर्मचारियों को आश्वासन दिया कि उनकी सभी मांगों को चरणबद्ध तरीके से पूरा किया जाएगा। उन्होंने आग्रह किया कि सभी नागरिक आत्म-अनुशासन अपनाएं और सार्वजनिक स्थानों को स्वच्छ रखें। मुख्यमंत्री ने कहा, मेरा सपना है कि सफाई कर्मचारियों की गरिमा की रक्षा हो और उनके जीवन स्तर में सुधार हो, ताकि उनके बच्चे ऊंचे पद प्राप्त कर सकें। कार्यक्रम के अंत में मुख्यमंत्री ने आम लोगों से अपील की कि सफाई कर्मचारियों के प्रति कृतज्ञता दर्शाने के लिए सार्वजनिक स्थानों को साफ रखना चाहिए।

मानसून की तैयारी

सुरक्षित जलधारा, स्वच्छ शहर

आगामी मानसून को देखते हुए चेपॉक बकिंघम नहर के दोनों ओर मजबूती और गाद हटाने का कार्य जारी है। इसके अलावा नहर के आस-पास के हिस्सों में ड्रेजिंग ऑपरेशन प्रगति पर है। इससे चेपाक के पास नहर की सफाई सुनिश्चित हुई है।

पीएम 19 नवम्बर को कोयम्बत्तूर में

चेन्नई @ पत्रिका. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 19 नवम्बर को कोयम्बत्तूर पहुंचकर साउथ इंडिया नैचुरल फार्मिंग सम्मेलन का उद्घाटन करेंगे। यह सम्मेलन तमिलनाडु के किसान संगठनों द्वारा आयोजित किया जा रहा है। प्रधानमंत्री ऑर्गेनिक कृषि के 50 वैज्ञानिकों से बातचीत भी करेंगे। प्रधानमंत्री दोपहर 1:25 बजे इंडियन एयर फोर्स के विमान से कोयम्बत्तूर एयरपोर्ट आएंगे और 3:25 बजे दिल्ली रवाना होंगे।

बेंगलूरु. होसूर रोड, बोमसंद्रा स्थित सुमतिनाथ जैन मंदिर में 18 वें ध्वजारोहण के मौके पर शनिवारको 17 भेदी पूजन के साथ मंदिर के शिखर पर लाभार्थी राजेन्द्र कुमार त्रिलोक कुमार बोथरा परिवार ने ध्वजारोहण किया। विधिकारक तुषार गुरू ने 18 विधान पूरे करवाए।

पेज एक का शेष

भोजन की....

ऐसे रोकें बर्बादी: मेहमानों की संख्या का यथासंभव सही आकलन या एस्टीमेट बनाकर ऑर्डर करें।

बड़ी की जगह छोटी प्लेट का इस्तेमाल करें।

बेझिझक ऐसा बोर्ड लगाएं कि पहले वाला खत्म करें, फिर दोबारा लें। 30% तक बर्बादी कम होगी।

बेहिसाब वैरायटी की जगह व्यंजनों की लिस्ट छोटी करें।

बचे खाने की सूचना दें, ताकि भोजन इकट्ठा करने वाली संस्था ले जाए और जरूरतमंदों में बांट दे। (ऐसे प्रयासों से औसत 500 मेहमानों वाली एक शादी में 200 किलो खाना बचाया जा सकता है, जो 500 भूखे बच्चों के लिए एक दिन का खाना होगा)

कई देशों में फूड वेस्ट रोकने के कड़े नियम :

फ्रांस: बचे फूड प्रोडक्ट को फेंकने से प्रतिबंधित है। इसे आवश्यक रूप से चैरिटी को दान करना होता है।

इटली: दान देने वाली कंपनियों को टैक्स में छूट दी जाती है। इससे उन्हें भोजन दान करने को प्रोत्साहन मिलता है।

दक्षिण कोरिया: आवासीय क्षेत्रों में खाद्य अपशिष्ट को तौलने और उसके अनुसार शुल्क लेने का नियम है, जिससे लोग कम बर्बाद करें।

डेनमार्क: खाद्य खुदरा विक्रेताओं को भोजन बर्बाद करने पर भारी जुर्माना लगता है। इन्होंने 'स्टॉप वेस्टिंग फूड' जैसी राष्ट्रीय पहल चलाई है।

पर्यावरण को खतरा: बर्बाद भोजन लैंडफिल होता है, तो सड़ने की प्रक्रिया में मीथेन उत्सर्जित होती है, जो कार्बनडाइ ऑक्साइड की तुलना में 25 गुना तेजी से वायुमंडल को गर्म करने में सहायक होती है।

अनाज और फल-सब्जियों के उत्पादन में इस्तेमाल पानी, कीटनाशक और उर्वरक भी वेस्ट हो जाता है, जब भोजन बर्बाद होता है।

डॉक्टर मॉड्यूल...

डॉक्टर माड्यूल के जांच अधिकारी और जुड़े लोगों की मौत: सूत्रों के अनुसार इस हादसे में फरीदाबाद डॉक्टर मॉड्यूल मामले के जांच अधिकारी पुलिस इंस्पेक्टर अस्रार अहमद शाह की भी जान गई। जम्मू-कश्मीर पुलिस के डीजीपी नलिन प्रभात ने बताया कि विस्फोट में नायब तहसीलदार सहित दो राजस्व अधिकारी, तीन एफएसएल अधिकारी, दो क्राइम फोटोग्राफर और एक दर्जी ने भी जान गंवा दी। गौरतलब है कि फरीदाबाद डॉक्टर मॉड्यूल की एफआइआर नौगाम थाने में ही दर्ज है। इस मॉड्यूल का नौगाम में मौलवी इरफान और डॉ.आदिल राथर की ओर से धमकी भरे पोस्टर लगाने की तहकीकात में ही खुलासा हुआ था।

आर्थिक मदद की घोषणा: जम्मू-कश्मीर सरकार ने नौगाम पुलिस स्टेशन ब्लास्ट में मृतकों के परिजनों को 10-10 लाख रुपए और गंभीर घायलों को 1-1 लाख रुपए की मदद का ऐलान किया है।

आईईडी नष्ट की : जम्मू-कश्मीर में आतंकियों की एक और बड़ी साजिश को सुरक्षा बलों ने समय रहते नाकाम कर दिया है। राजौरी जिले के थानामंडी इलाके के बंगाई जंगल में 3 किलो आईईडी मिलने से पूरे क्षेत्र में हड़कंप मच गया, हालांकि जम्मू कश्मीर पुलिस ने तेजी से कार्रवाई करते हुए आईईडी को नष्ट कर दिया।

बिहार चुनाव में मिला साफ राजनीतिक संदेश : स्टालिन

चेन्नई @ पत्रिका. डीएमके अध्यक्ष और मुख्यमंत्री एम.के. स्टालिन ने बिहार चुनाव परिणामों को सभी के लिए सीख बताया है। उन्होंने कहा चुनाव परिणामों में जनकल्याण, सामाजिक व वैचारिक गठबंधन और स्पष्ट राजनीतिक संदेश झलकता है। स्टालिन ने सोशल मीडिया पोस्ट में बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार को जीत की बधाई दी और कहा वे बिहारवासियों की अपेक्षाओं को पूरा करने में सफल रहें। उन्होंने आरजेडी नेता तेजस्वी यादव की अथक चुनावी मुहिम की भी सराहना की। मुख्यमंत्री ने लिखा चुनाव परिणाम जनकल्याण, सामाजिक और वैचारिक गठबंधन, स्पष्ट राजनीतिक संदेश और मतदान के अंतिम क्षण तक समर्पित प्रबंधन को दर्शाते हैं। इंडिया गठबंधन के नेता अनुभवी राजनीतिज्ञ हैं, जो संदेश को समझकर रणनीति बना सकते हैं। उन्होंने यह भी कहा बिहार विधानसभा चुनाव का परिणाम चुनाव आयोग की गलतियों और लापरवाहियों को नहीं छिपाता। भारत निर्वाचन आयोग की साख सबसे निचले स्तर पर है।

भाजपा ने शुरू किया सैंकी टैंक बचाओ अभियान

सुरंग सड़क परियोजना पर्यावरण के साथ खिलवाड़, हरियाली पर हमला : शोभा

सरकार पर बिना पर्याप्त अध्ययन का काम करने का आरोप

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

बेंगलूरु. सैंकी टैंक के पास प्रस्तावित सुरंग सड़क परियोजना को लेकर शनिवार को भाजपा नेताओं ने सरकार के खिलाफ मोर्चा खोलते हुए सैंकी टैंक बचाओ हस्ताक्षर अभियान की शुरुआत की। केंद्रीय राज्य मंत्री शोभा करंदलाजे और विधानसभा में विपक्ष के नेता आर. अशोक के नेतृत्व में आयोजित इस अभियान में पूर्व उपमुख्यमंत्री डॉ. सी.एन. अश्वथ नारायण, पूर्व मंत्री के. गोपालय्या, जिला अध्यक्ष एस. हरीश, सप्तगिरि गौड़ा, पार्टी पदाधिकारी सहित कई पर्यावरण कार्यकर्ता शामिल हुए।

कार्यक्रम में शोभा ने आरोप लगाया कि सुरंग सड़क के लिए तैयार की गई विस्तृत परियोजना रिपोर्ट (डीपीआर) अवैज्ञानिक है और सरकार शहर की प्राकृतिक धरोहरों को खतरे में डाल रही हैं। शोभा ने कहा कि उन्होंने हमारी झील को निशाना बनाया है। शहर के विकास के नाम पर सैंकी टैंक, लालबाग और कब्बन पार्क जैसी धरोहरों को नुकसान पहुंचाना गलत है। राज्य सरकार बिना सोचे-समझे पर्यावरण के साथ खिलवाड़ कर रही है। हम इस परियोजना को आगे नहीं बढ़ने देंगे। अशोक ने आरोप लगाया कि सुरंग सड़क को पैसा कमाने वाली परियोजना बनाया जा रहा है। उन्होंने कहा कि न तो कोई सर्वेक्षण कराया गया और न ही लगभग 120 आवश्यक विभागीय अनुमतियां ली गईं। उन्होंने आरोप लगाया कि कमीशन लेने और दिल्ली में कांग्रेस नेतृत्व को पैसे भेजने के लिए जल्दबाजी में निविदा आमंत्रित की गई।

कार्यक्रम में मौजूद केंद्रीय राज्य शोभा करंदलाजे, विपक्ष के नेता अशोक, विधायक अश्वथ नारायण व अन्य।

पूर्व उपमुख्यमंत्री और मल्लेश्वरम के विधायक डॉ. अश्वथ नारायण ने कहा कि इस परियोजना के लिए सार्वजनिक स्थानों का दुरुपयोग किया जा रहा है। उन्होंने कहा, बेंगलूरु के नागरिक नहीं चाहते कि उनकी झील और सार्वजनिक स्थलों की बलि दी जाए। यह कोई तानाशाही शासन नहीं है। हम संरेखण बदलने और सैंकी टैंक की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए सरकार पर दबाव डालेंगे । भाजपा नेताओं का कहना है कि कांग्रेस सरकार अवैज्ञानिक फ्लाईओवर और सुरंग सड़कों के जरिए बेंगलूरु की प्राकृतिक विरासत के साथ खिलवाड़ कर रही है। उन्होंने सैंकी टैंक क्षेत्र का निरीक्षण कर लोगों से हस्ताक्षर जुटाए और कहा कि झीलों की रक्षा के लिए यह अभियान आगे भी जारी रहेगा।